राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ४४

राजस्थानी-हस्तलिखितग्रन्थ-सूची

भाग १



प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थानी-हस्तलिखितग्रन्थ-सूची

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

राजस्थानी-हस्तलिखितग्रन्थ-सूची

भाग १

प्रधान सम्पादक

मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

सहायक

श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया
एम ए. (प्री.) साहित्यरत्न
प्रवर शोध-सहायक

श्रीरमानन्द सारस्वत
शास्त्री, ज्योतिषाचार्य
शोध-सहायक

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१७
प्रथमावृत्ति ५००

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८२

ख्रिस्ताब्द १९६०
मूल्य ४ ५० न पै

मुद्रक—हरिप्रसाद पारीक साधना प्रेस जोधपुर

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके कुछ ग्रन्थ

प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृतभाषाग्रन्थ–१ प्रमाणमंजरी–तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्य मूल्य ६.००। २ यन्त्रराजरचना–महाराजा सवाई जयसिंह मूल्य १.७५। ३ महर्षिकुलवैभवम्–स्व० पं० मधुसूदन ओझा मूल्य १०.७५। ४ तर्कसंग्रह–पं० क्षमाकल्याण, मूल्य ३.००। ५ कारकसम्बन्धोद्योत–पं० रभसनन्दि मूल्य १.७५। ६ वृत्तिदीपिका–पं० मौनिकृष्ण मूल्य २.००। ७ शब्दरत्नप्रदीप मूल्य २.००। ८ कृष्णगीति–कवि सोमनाथ मूल्य १.७५ ९ शृङ्गारहारावली–हर्षकवि मूल्य २.७५। १० चक्रपाणिविजयमहाकाव्य–पं० लक्ष्मीधरभट्ट मूल्य ३.५०। ११ राजविनोद–कवि उदयराज मूल्य २.२५। १२ नृत्तसंग्रह मूल्य १.७५। १३ नृत्यरत्नकोश प्रथम भाग–महाराणा कुम्भकर्ण मूल्य ३.७५। १४ उक्तिरत्नाकर–पं० साधुसुन्दरगणि मूल्य ४.७५। १५ दुर्गापुष्पाञ्जलि–पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी मूल्य ४.२५। १६ कर्णकुतूहल तथा कृष्णलीलामृत–भोलानाथ मूल्य १.५०। १७ ईश्वरविलास महाकाव्य–श्रीकृष्ण भट्ट मूल्य ११.५०। १८ पद्यमुक्तावली–कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट मूल्य ४.००। १९ रसदीर्घिका–विद्याराम भट्ट मूल्य २.००।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ–१ कान्हड़दे प्रबन्ध–कवि पद्मनाभ मूल्य १२.२५। २ क्यामखांरासा–कवि जान मूल्य ४.७५। ३ लावारासा–गोपालदान मूल्य ३.७५। ४ बांकीदासरी ख्यात–महाकवि बांकीदास मूल्य ५.५०। ५ राजस्थानी साहित्य संग्रह भाग १ मूल्य २.२५। ६ जुगलविलास–कवि पीथल मूल्य १.७५। ७ कवीन्द्रकल्पलता–कवीन्द्राचार्य मूल्य २.००। ८ भक्तमाळ–ब्रह्मदासजी, मूल्य १.७५। ९ राजस्थान पुरातत्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची भाग १ मूल्य ७.५०। १० मुंहता नैणसीरी ख्यात भाग १ मूल्य ८.५० नये। ११ रघुवरजसप्रकास किसनाजी आढ़ा मूल्य ८.२५ नये। १२ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग १ मूल्य ४.५०।

[illegible]

सञ्चालकीय वक्तव्य



राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानमें मार्च सन् १९५६ ई० तक संगृहीत ४००० हस्तलिखित ग्रन्थोंका विषयवार सूची-पत्र हम "हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची भाग १" के रूपमें प्रकाशित कर चुके हैं और मार्च सन् १९५८ ई० तक संगृहीत हस्तलिखित ग्रन्थोंका विषयवार सूची-पत्र सम्प्रति यन्त्रस्थ है एवं शीघ्र ही प्रकाशित होगा। प्रतिष्ठानमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दीके साथ ही राजस्थानी भाषाके हस्तलिखित ग्रन्थोंका भी बड़ा संग्रह हो गया है, जिनके सूची-पत्रकी मांग सबद्ध विद्वानों और अन्य जिज्ञासुओं द्वारा बराबर की जा रही है। वस्तुतः देश विदेशमें सर्वत्र प्राप्य राजस्थानी भाषा-निबद्ध समस्त हस्तलिखित ग्रन्थोंका सूची-करण एक विशेष महत्त्वपूर्ण कार्य है, जिसके लिये सुचारु प्रयत्न होना अपेक्षित है। इसी दृष्टिसे हम राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरमें मार्च सन् १९५८ ई० तक संगृहीत २१६६ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थोंकी प्रस्तुत सूची प्रकाशित कर रहे हैं। भविष्यमें भी राजस्थानी भाषाके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी पृथक् सूची प्रकाशित करनेका कार्य चालू रहेगा और यथावसर ये सूचियां विद्वानोंके सामने आती रहेंगी। इस प्रतिष्ठानमें अथवा अन्यत्र प्राप्त होनेवाले वयक्तिक संग्रहोंकी सूचियाँ भी यथाक्रम उपसंग्रह-सूची या परिशिष्टके रूपमें प्रकाशित करते रहना हमारा लक्ष्य है।

प्रस्तुत सूचीके प्रकाशन-व्ययका अर्द्धांश केन्द्रीय भारत सरकारने प्रान्तीय भाषा-विकास योजनाके अन्तर्गत प्रदान करना स्वीकार किया है तदर्थ हम आभार प्रदर्शित करते हैं।

जिज्ञासु पाठक और अनुसंधित्सु विद्वान् हमारे इस प्रकाशनसे लाभान्वित होंगे, ऐसी आशा है।

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर।

महाशिवरात्रि वि. सं. २०१६
भारतीय विद्या-भवन
बम्बई।

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला



पुरातत्त्वाचार्य मुनि जिनविजय द्वारा संपादित कतिपय ग्रन्थ

१ त्रिपुराभारती लघुस्तव — महाकवि-लघुपण्डित-कृत
२ शकुनप्रदीप — पं लावण्यशर्मा कृत
३ करुणामृतप्रपा — कवि सोमेश्वरठक्कुर कृत
४ बालशिक्षा व्याकरण — ठक्कुर संग्रामसिंह कृत
५ पदार्थरत्नमञ्जूषा — पं कृष्णमिश्र कृत
६ मुग्धावबोधादि औक्तिक संग्रह — अनेकविद्वत्कृतिरूप
७ प्राकृतानन्द — पं रघुनाथ कृत
८ ठक्कुर फेरु रचित ग्रन्थावलि (प्राकृत)
९ उक्तिरत्नाकर — पं साधुसुन्दरगणि कृत
१ राठोडांरी वंशावलि — राजस्थानी भाषानिबद्ध ऐतिहासिक रचना
११ राजस्थानी सुभाषित संग्रह
१२ हम्मीर महाकाव्य — नयचन्द्रसूरि कृत
१३ मणिरत्नादि परीक्षा ग्रन्थ संग्रह



विषय - सूची





क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता यादि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७०६१ (१-१५)	दंड पदी		१८३७	१३-२६	* पानी के नीचे भीति के छपे हैं
२	४६ ७(१)			"	१८-२२	
३	४६११(५)	"		१८७५	७३-८३	
४	९८६१(७१)	अंकावलि जिनसिंह सूरि मालिका	हीरकलश	१९वीं	११५ वाँ	
५	७४५२(५२)	अंगफुरकन विचार	हीररतन	१८वीं	१०८ वाँ	
६	१९२२	अंजना चोपाई		१७६८	११	
७	४८१८	"	पुण्यसागर	१७०२	२०	
८	५८६३	" (सचित्र)		१६वीं	४३	लि ४३, प्रारंभ के १० पृष्ठ पुण्यसागर वाली प्रति से मिलते हैं
९	६५२६		"	१८६८	२४	* रचना १६८७ लि क तोलवंत ग्राम पीही, अज्ञात रचने
१०	४ ४	अंजना रास		१८४६	१७	
११	४१६४(१)	अजना सती रास		१६२६	१३	अन्तिम पत्र त्रुटित
१२	५ ६३	अंजना सतीनो रास		१९वीं	२१	
१३	३६५३(३)	अंजना सुंदरी चोपाई	"	१८७७	१०२-१२७	लि स्था नागौर
१४	३८६०		"	१७४८	१८	लि स्था हीयावेसर रचना सं० १६८९, सांचोर में
१५	३८७६			१८७०	२७	लि स्था. सकार ग्राम
१६	३६३६	"		१७८९	२०	लि स्था भा(बा)रीयाली बरा ग्राम
१७	३८७७	"	भुवनकीर्ति	१८७४	२१	लि स्था जयपुर

विषय - सूची





क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७७३१ (१–१५)	अंक पाठी		१८६७	१३–२१	● पाठी के नीचे नीति के दूहे हैं
२	४६०७(१)				१८–२२	
३	४६११(२)	"		१७७५	७३–८३	
४	२८८३(७१)	अंकावलि विमलसिंह सूरि मालिका	हीरकलश	१७वीं	११५ वां	
५	७४२२(४२)	अंगफुरकण विचार	हीरकलश	१८वीं	१०८ वां	
६	१६२२	अंजना चोपाई		१७१८	११	
७	४८१८		पुण्यसागर	१७०२	२०	
८	५८६३	" (सचित्र)		१६वीं	४३	लि ४३ प्रारंभ के १० दूहे पुण्यसागर वाली प्रति से मिलते हैं
९	६६९५	"		१७६८	२४	● रचना १६८७ लि क मोतचंद ग्राम-पीहो, अमावत राज्य
१०	४०४०	अंजना रास		१८४६	१७	
११	४१६४(१)	अंजना सती [illegible]		१६२६	१३	अन्तिम पत्र त्रुटित
१२	३०६३	अंजना सतीनो रास		१८वीं	२१	
१३	३५५३(१)	अंजना सुंदरी चोपाई	"	१८७७	१०२–१२७	लि स्था नागोर
१४	१८६०		"	१७४८	१८	लि स्था हीरावेसर रचना सं० १६८९, सांचोर में
१५	१८७१		"	१८७७	२७	लि स्था. सकार ग्राम
१६	१६६६	"	"	१७८६	२०	लि स्था पा(ता) रोयाली बरा ग्राम
१७	१८७७	"	भुवनकीर्ति	१८७४	२१	लि स्था दयपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८	१२६७	अंजना सुंदरी चोपाई	भुवनकीर्ति	१८२६	२२	लि स्था बीकानेर
१९	२२२३	,,	,,	१७२२	२७	लि स्था सिरसा
२०	४०१६		,,	१९वीं	१८	अपर नाम पवनंजयप्रिया अंजना सुंदरी हनुमंत चरित्र
२१	४११६	,, संक्षिप्त		१८११	१४	लि सं ४०
२२	७०४१	,, ,,		१८वीं	१४	लि कर्ता मार्या हीरा
२३	७२६१		पुण्यसागर	८६०	१२	बीकानेर में लिखित
२४	१८२०	,, मान	मान मुनि (?)	१७वीं	७	
२५	१८६२	रास		१७४०	१०	लि स्था नीवाज
२६	११६२	,, ,,		१८६५	२५	लि स्था पोरबंदर
२७	१०६१	अंतरिक्ष पार्श्वनाथ छंद	भावविजय	१८८२	१	मोम कुंअरी में लिखित
२८	२१०४(२)	अंबरीषी रास	माइदास	१९वीं	१६–२०	
२९	१८६२	अंबड़ विद्याधर रास	मंगलमाणिक्य	१९१९	८३	* पालणपा नगर में लिखित
३०	२२५२	अंबाजीकी आरती	शिवानंद स्वामी	२०वीं	१	
३१	२२४०	,, ,,	रघुनाथ	१९०१	१	
३२	२८६१(२२)	अंबिका गीत	शिवक	१७वीं	१२ वीं	
३३	२०४१	,, भवानी छंद	जितचंद	१९२१	२	
३४	७८०	अंबिका स्तोत्र	भवानीनाथ	१९वीं	१	
३५	२२०२(१)	अकबरनामा		१८८५	४–८०	जयपुर में लिखित
३६	४५२०	अकबरनामो		१९वीं	१४	
३७	१२४६(७)	अकल महादेवरी आरती			४९–५९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८	३५५५(१०)	प्रकलरी वार्ता		१९वीं	१२६–१३१	
३९	११२४(६)	मयवरत चोपई	सुमति हर्षवत शिष्य	१६७६	१२–१६	● सं० १६ १ में रचित
४०	६२१	प्रमस्तोत्र तथा पुष्पेत्र विचार		१९वीं	१	
४१	३५६२(१४)	प्रवलवास सीवीरी बारता		१६७०	११७–१३५	●
४२	६६४	प्रजापुत्र चोपई	सुमतिप्रभ	१८२९	४२	सं० १८२२ में सांचोर में रचित लि स्था बालोतरा
४३	३५०६	रास	धर्मदेव	१८७०	१२	सं० १६६१ में सोजी ग्राम में रचित लि स्था बे(बो)कपुर
४४	३५४१(१८)	प्रमितलिपजीरी बारता		१९वीं	१२५–१२६	●
४५	३५७१(४२)	रो कवित्त			१०६ वां	● जीर्ण प्रति
४६	२३६८(४)	,, रो सोलोको		१८४८	१२–१६	● बाम्मा में लिखित
४७	१०६६	प्रकित प्रासिस्तव	मेरुनंदन	१९वीं	८०–८१	
४८	३५७६(२)		,,	२०वीं	२४–२७	
४९	३५७८(४१)	,,			२११–२१४	
५०	३५७५(५)	प्रद्वावीस सम्मिस्तवन	धर्मवर्धन		१४–१७	
५१	२८६३(११३)	प्रहारबार वनस्पति बचन		१७वीं	११८ वां	
५२	२८६३(२७)	प्रहारनातरी चोपाई	हीरकलश		५१–५४	
५३	३५४३(१)	प्रमयस	भोजकसाह	१८८२	१–२	
५४	२८६३(१२७)	प्रमाहिलवाड़ पत्तन राजावली		१७वीं	१११ वां	●
५५	२०४२(१)	प्रतिचार तथा स्नात्र विधि		१७८३	१–२	नगरवाड़ा में लिखित
५६	४२५७(१०)	प्रदीतवारकी कथा	भाव कवियण (?) पद मोत्रीय प्रपयालमसत पुत्र	१८वीं	४६–७७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५७	५३१२	अध्यात्म गीता		१८८०	८५	अपूर्ण प्रथम ८ पत्र अप्राप्त, पाली में लिखित
५८	७५२४	अध्यात्मविचार		१८२७	१९	अमल अवेकरण देवतना चोपड़ा मायो
५९	७७४१	अध्यात्म रामायण भाषा	रार्जसिंह	१७८४	१-३२	• बाई सिरेकंवरी लिखित सावरमम्मे
६०	२२०३	अध्यात्म सार माला	नेमिदास	१८वीं	६	• सं० १७६५ में रचित
६१	३५६७(३०)	अधूरा दूहा		१९वीं	१२९-१३४	
६२	२१४२(२)	अधूर दूहरा दूहा		″	५-६	
६३	५४१८(१६)	अनंतचतुर्दशी कथा			१३१-१३४	
६४	४३१४(१८)	अनंत व्रत रास	ब्रह्मजिनदास	१८७१	२१२-२१८	
६५	३५४६(११)	अनंतराय सांख(ला)री वार्ता		१९वीं	९३-९७	
६६	३५४६(६)	अनंतराय सांख(ला)री बात			१८-७१	•
६७	३८७८	अनापो संवी	खेमो	१७२२	४	सं १७५२ में [illegible] रचित
६८	५१०८	अभजरो प्रश्न		२०वीं	८	अपूर्ण
६९	५४१८(३६)	अभजरी पाटावली		२०वीं	१-१०	जैन विनती सहित
७०	३७४२	अबुनावाली		१८वीं	३	
७१	३७५८		सतोदास	१८८२	२४	विक्रमपुर में लिखित
७२	२३७५(३)	अबोलामी वारता	लालसदास भट्ट	१९०१	१०४-१३१	सिपाहाण बत्तीसी के अंतर्गत
७३	११२४(७)	अभयकुमार रास		१९०५	१९वीं	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७४	२८६१-(१२६)	अमरदेव सूरि गच्छ निर्णय		१६१७	१२०-१२१	१२० वें पत्र में अन्य ग्रन्थों के अवतरण हैं १२१ वें [illegible] में अन्य गच्छों के १४ मुनियों की साक्षी है पत्तन में लिखित लि० क० हीरकलश
७५	७४५२(१६)	अभिसारिका वर्णन गीत आदि		१८वीं	१८ वाँ	
७६	११२४(१)	अमरसेन राजा धर्मबुद्धि मंत्री रास	रत्न विमल	१६७५	९-१८	प्रथम पत्र अप्राप्त सं० १६०६ में रचित
७७	७१४१	अमरदत्त मित्रानंद चरित्र रास	देवगुप्त पद्मसूरीश्वर	१७००	२८	सं० १६०६ में रचित धारण नगर ऋषि कचरा मानकन्द-शिष्य लिखित
७८	४६६१			१६१७	१६	
७९	२१६८(२)	अमरसिंघजी को सिलोको		१९वीं	१७-२६	लि स्था. शम्भा
८०	१२११				१	
८१	२०१७(१)	अमरसेन वयरसेन चोपाई	अमरचंद	१७७२	१-१०	सं० १७०० में रचित पत्तन में लिखित
८२	३८६१	"	पुण्यकीर्ति	१८वीं	१२	सं० १६६६ में सांगानेर में रचित
८३	५११७	"	जिनहर्ष	१८४६	१०	
८४	२०७८	" रास	राजकुमार	१८वीं	२१	सं० १६६७ में जालोर में रचित
८५	११२२(५)	अमल रो छंद	राजो	१९वीं	३-४	
८६	६६०२	अमितसागर	सवाई प्रतापसिंह		२१८	१ ३ ४ ५ वें पत्र अप्राप्त
८७	४२०६	"	"	१८७६	२७८	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
८८	५८३६	अमृतसागर	सवाई प्रतापसिंह	१९वीं	३३८	अपूर्ण
८९	६८३३	,,			४६७	
९०	३७२१	अमलीकरण विधि आदि		,,	९	
९१	७१३७	अवंती सुकुमाल चोपाई			५	रचना १७४१
९२	४०४८(२)	अवंती सुकुमाल स्वाध्याय	शांतिहर्ष	१८६२	१६–२०	लि० क० पनरूप हेत खरतर-गच्छे
९३	२८९३(४६)	अर्थ प्रकरण वर्णन		१७वीं	अपूर्ण	
९४	१८६ (१८)	अर्जुन गीता	परमदास	१९वीं	७६–७९	
९५	७०४४(२)	,,	रामदास	१७९८	३–८	
९६	२११०	अर्जुन मालीरी चोपाई	मुनिनिधान	१८६३	५	मुमाई गाम में लिखित
९७	२१२६	अरजन हमीररी बात		१९वीं	५	०
९८	४९६१	अर्बुदाचल स्तोत्र	विनीतविमल	१८वीं	२	
९९	२८९३(३२)	अर्हंत चैत्य नमस्कार		१९१९	अपूर्ण	
१००	४० ४	अरहन्नक मुनि चौढ	जिनहर्ष सूरि	१९वीं	६	
१०१	२८९३(७३)	अल्प बहुत्व विचार		१७वीं	११७–११८	
१०२	८६३	अवतार गीता (चरित ?)	नरहरदास बारहठ	१८११	१०४	
१०३	२२१६	,,		१८२६	६१	पुनरासर में लिखित
१०४	७०२४	अवतार चरित	नरहरिदास बारहठ	१७८६	२६७	
१०५	७०२६			१९१८	१४६	
१०६	७०३३			१९१४	४७६	हरिराम कवीरपंथी द्वारा बडगोर में लिखित
१०७	७१८७	अवंतीसुकुमाल चोपाई	जिनहर्ष	१९वीं	९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०८	१०३१६(१२)	पवंती सुकुमाल चोपाई	जिनहर्ष	१८११	३७-४५	
१०९	२१४६	"		१९वीं	८	रचना सं० १७४१
११०	२३७४(६)			"	३१-३४	
१११	३५१ (२)	ढाल	धर्मवर्द्धन	"	३३३	
११२	१५६७(१६)	...तील रासो	वीरेच		१११ वां	
११३	७७४५	...परीक्षा		१९४१	११	
११४	२०४१	...प्रकार पूजा		१९वीं	२	
११५	४७८४	, रास	जयरत्न	१८२६	६१	
११६	४४१८(१६)	...मी कथा		१९वीं	१४०-१४३	
११७	१५७५(४८)	, स्तवन	कान्ति	२०वीं	२१६-२१७	
११८	४६१४(२४)	...मी स्तवनो रास	गुणचंद्र	८७१	२११-२१२	
११९	१५७५(७)	...तीर्थराज स्तवन	पद्मराज पाठक	२०वीं	३७-३८	
१२०	१५४३(५)	...		१८८२	६-१०	
१२१	१७६७	...तृतीया ...		१९वीं	१	
१२२	२८६३ (१३५)	... चोपाई (कुमति विध्वंस ...)	हीरकलश	१६२१	२०९-२१६	रचना सं० १६१७
१२३	१०००	...सारोद्धार	देवचंद	१९११	८१	
१२४	२०३५			१९१८	३७	
१२५	१५६२(१६)	...हा		२ भी	१३७-१३८	
१२६	२१४०	पार्श्व संधि	पीसार	१८२४	१२	
१२७	२१७७			१५६६	१२	* लि स्था राजलदेसर

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२८	२२९०	आगड संधि	धीसार	१८वीं	९	
१२९	१२७१(१६)	"		१९वीं	८९-९७	
१३०	१८७१	"		१७१४	७	लि. रूपा कृष्णगढ़
१३१	१८७९		"	१७७१	९	
१३२	२६ २	आत्मप्रकाश चौपाई	धर्ममन्दिर	१८वीं	२१	रचना १७४२
१३३	१२४८(१०)	आत्मबोध सज्झाय	रूपचंद	१८४५	१-२	तिमरी ग्राम में लिखित
१३४	२४१८(४)	आत्मसंबोध रास	बनारसी	१८वीं	८८-९१	
१३५	१२७५(५२)	आगमोपरि स्वाध्याय	नयविमल	२०वीं	१५०-२११	
१३६	१२७५(१८)	आदिजिन बुहुमी	चिदानंद		१९९-३००	
१३७	१२७८(१)	" बोमसो	समयसुंदर	"	४४-४६	
१३८	४२१४(२)	आदित्य व्रत कथा	सूरजी शाह	१८७१	२२२-२२९	
१३९	२१७६(२)	" वार कथा		"	११-४२	
१४०	५१७६(११)	" (छोटी)			१९७-१९९	
१४१	१८११(२)	आदिनाथ हमचडी	वर्धमान	१८वीं	४-५	
१४२	१२४६(५)	आदीश्वर वीनती			४६-४७	
१४३	४४१०	आनंदमंदिर रास	ज्ञानविमल	१८वीं	२११	दास बुहान्वद प्रतिम पत्र अप्राप्य
१४४	७०१४	आनंद श्रावक	धीसार	१८७०	२२	लि क. साध्वी रत्ना [illegible]
१४५	४०४२	" संधि	"	१७२४	१५	लि क रचना
१४६	२४१८(१२)	आनंदाके दोहे		१९वीं	१७१-१७३	दुहा सं ४१
१४७	११२२(२८)	आपूजीनो छंद	कवी कवि	"	१७वीं	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६९	७३४४	आवश्यक विधि प्रकरण	जिनवत्सगणि	१६वीं	१	
१७०	११२२(४८)	आशा पूरणी माता छंद		१६वीं	८१ वाँ	
१७१	४ ११	आषाढ़ाभूति चतुष्पदिका	भावप्रभ	″	२	
१७२	६२७	आषाढ़भूति धमाल	कनकसोम	१७७७	१	
१७३	५४१८(७)	″ चौपाई		१६वीं	२७–१०१	
१७४	६६६	″ धमाल	″	१७१४	२	
१७५	२१६७		″	१८वीं	१	
१७६	१२७३(१०)	″ ″		१६वीं	१२–१३	
१७७	५१२१	″ ″	″	१८वीं	५	रचना [illegible]
१७८	१०१२	″ रास	ज्ञानसागर	१८११	६	
१७९	३०१५	″		१८वीं	१२	
१८०	२०६५	″		१७६५	८	
१८१	२१७४	″	″	१६वीं	७९–६६	
१८२	१२४५	″ ″	″	१८७४	६	
१८३	१६१६	″	″	१७११	५	
१८४	१५५१	″ ″	″	१६०५	११०–११४	
१८५	१६२०	″ ″		१६७१	१	*
१८६	१५४६(१६)	आलमामजोरी वारता		१६वीं	१२२ वाँ	
१८७	२१६६	आज्ञाविचार गीत	हीरकलश	१७वीं	२१६ वाँ	
१८८	०७२	इलाकारी संधी	खेमराज	″	५	प्रथम पत्र अप्राप्त
१८९	२१६३		″		२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९०	१२७१	हलुकारी संधी	खेमराज	१९वीं	१०-११	
१९१	२२१७(१)		”	१७६०	१-३	किसनगढ़में लिखित
१९२	१२७१(४८)	इग्यारसकी कथा—पद्य		१९वीं	११६-१२०	अपूर्ण
१९३	४५७१	इन्द्रिय-पराजयशतक		१९२८	६	
१९४	७२७१			१७वीं	६	
१९५	४०४१	इलाकुमार चोपाई	ज्ञानसागर	१८४३	५	रचना १७१९
१९६	९५१	”	”	१८वीं	७	
१९७	९ ७	इलायचीकुमार रास	”	१७५९	१७	वि सं १७१९में रचित खेमपुरमें
१९८	९४९			१७६५	५	
१९९	२०७५		”	१८७२	९	
२ ०	२०९३			१७६८	१४	
२ १	१५६६	”		१७९०	१७	
२ २	२०९७			१७७२	१७-२२	
२०३	२१७४(३)		”	१९वीं	२०-२५	
२०४	३ ११		”	१८वीं	११	
२०५	१५२२(१६)	इस्कचमन		१९वीं	१० वीं	
२ ६	७८६	ईसरी छन्द	कुंभरकुशल	१८४१	४	
२०७	७९९	ईसरी छन्द		१९वीं	५	
२०८	११२९(४६)	”		”	३३-३४	
२०९	२०३९	ईसरशिक्षा	ईसर	१७वीं	२	
२१०	४९१४(२८)	उक्तीती भावाङ्ग		१८७७	२४६-२४७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२११	११६७४	उत्तमकुमार चोपाई	तत्त्वहंस	१५६५	११	लि स्था जोधपुर
२१२	१२११	,, रास	जिनसुख	१८११	१७	बीकानेरमें लिखित
२१३	६६५	उत्तराध्ययन कथा बालावबोध		१८वीं	८३	प्रथम पत्र अप्राप्त
२१४	१०१८	उत्तराध्ययन गीत		१७९२	१६	
२१५	२११४	उत्पत्ति बहुत्तरी	बीकानेर	१८वीं	१	
२१६	१८३१(१)	उत्पत्ति गीत	,,	१८२६	२७-३२	
२१७	२८३२(१)	उत्पत्ति भाखी		१७०४	८१-८६	
२१८	११११	उदयपुर गजिल	खेता	१६वीं	४	
२१९	२२४१	उदयसिंह मेड़तारो भमरो		२०वीं	२	
२२०	१२०१(४६)	उदैपुरी गजल	जटमल	१६वीं	१०६-११०	सं १७५७ में रचना
२२१	११११	उपकरणविधि आदि		,,	६	गुढ नगरमें लिखित
२२२	४२८७(११)	उपदेशरी रातो	रामचंद	१८वीं	१८-११४	स्वयं कवि द्वारा लिखित रचना सं १७२६
२२३	२११४	उपदेशमाला कथासंग्रह		१६वीं	२८	१७वीं कथा पर्यन्त
२२४	२३११(२)	उपदेशसत्तरी	बीकानेर	१८१८	२-४	● फाल्गुणमें लिखित
२२५	१२७१(४१)			२०वीं	२११-२१६	
२२६	११२२(१७)	ऊंट तथा सुगो वर्णन		१६वीं	१० वाँ	●
२२७	१२०१(७०)	ऋषभजिनस्तवना	जिनचंद	२०वीं	१०१ वाँ	
२२८	१२७१(११)	ऋषभदेवजीरा गीत	समयसुन्दर	१६वीं	८१ वाँ	
२२९	६६४	ऋषभविवाहलो (धवल)	सेवक	१७११	१६	
२३०	६७६	,,	,,	१८११	१३	
२३१	११७८	,,	,,	१६२४	११	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२३२	१४६६	ऋषभविवाहलो	सेवक	१७१४	१३	
२३३	१२७१(२७)			१६वीं	७१–७६	
२३४	६१०६	"	"	१७२१	२१	
२३५	६६	ऋषिभाषित		१६६१	७	
२३६	६१६६	ऋषिभाषितकुलक		१७१५	८	
२३७	७१११	ऋषिभाषितकुलक		१८वीं	२	
२३८	२०५५	ऋषिवंदना	पासचंद	१७१५	८	
२३९	२३६०(८)	एकादशीरा बारामासी बात		१६वीं	६१–६७	
२४०	१२४५(१६)	बारता		१८०७	१२७–१३०	*
२४१	४४५२(५५)	"		१६वीं	१११–११५	अपूर्ण
२४२	४६१५(६)			१८८७	११६–११६	
२४३	७२६१	एकविंशति स्थानक प्रकरण	सिद्धसेनसूरि	१७६६	१०	लि.क. सुमतिहंस
२४४	१२६७(१)	एकादशीरी बारता		१८१६	६७ वां	
२४५	४ ५५	"		१८७६	३	
२४६	२१२२	एकादशी कथा		१८४१	१०	
२४७	६ २	" माहात्म्य चौपाई	विष्णुदास	१८११	२६	प्रथम पत्र अप्राप्त
२४८	१२८४(४)	"	हरिदास	१८२६	१–११	
२४९	७७४६	" कथा भाषा (गद्य)		१६१३	३१	२६ कथाओंका संग्रह
२५०	४२६३(२)	एकादशी कथा संग्रह		१६वीं	१८	* ९ कथाओंका संग्रह लि.क. जोशी नानगराम लि.स्था. सोनुवास (जयपुर)
२५१	५१	एकाक्षरनाममाला	रत्नू वीरभाण	१८५६	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नामरूप	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२५२	६०५	घो(ख)ला कृष्ण	प्रेमानन्द	१६०१	७४	
२५३	३२८६	"		१६वीं	१०	*
२५४	३८४१	कौष्णपुराण भाषा वत			१२	
२५५	२३०६(३)	कृष्णध्यान	ईसरदास		१४-१५	*
२५६	२१००	कृष्ण बारमास	किसनदास	१८वीं	१	
२५७	१८६८(४)	कृष्णरुक्मणी बेली	पृथ्वीराज	१७६९	१-१७	
२५८	२०७०	"	"	१७९२	४६	
२५९	२०६६	"		१७६६	३१	
२६०	३५५७(२)	" सटीक		१७६१	१-६६	
२६१	३९४२		"	१७३८	८१	
२६२	३९४३			१७६८	६५	
२६३	३५४८(४)		"	१८वीं	१-७३	
२६४	४०३८			१७७५	२४	लि.क. भागचन्द्रविजय
२६५	४६२२(४०)	"	"	१८१७	८५-१००	लि.क. प्रीतविजय
२६६	७०६६(४)	कृष्णलीला वर्णन		१८२६	१-७	चित्र १
२६७	६४६५	कृष्णजीरो ब्याहुलो		१९वीं	४	
२६८	३५७०	" "		१९वीं	८	
२६९	७०३०		परमकवि		६४	
२७०	५८२६	कृष्णचरण तथा सकलगुण	धर्मजी	"	२	
२७१	३०५६	खटकायतरीसी	गोरो ऋषि	१९वीं	२	
२७२	२११८(१६)	"		"	१०-६१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७३	११५७१(५७)	कक्कामास	विद्याविलास	१६वीं	१२५वां	
२७४	७४४४(२०)	कक्कातत्वसार	थावक चौपो	१८८६	१२४-१२६	
२७५	५९११	कछवाहोंकी वंशावली		१८८४	११४	●
२७६	२०४७	कजली	ज्ञानविमल	१८८४	२	
२७७	४०४६	कनकावती चौपई	जिनहर्ष	१६वीं	९१	अन्तिम पत्र अप्राप्त
२७८	७७२०(२२)	कपड़कुतूहल		१८वीं	१वां	●
२७९	४०४७	कपोल कपोलश्रीरी वारता		१८६४	१२	
२८०	११६१७(२)	कबीरजीकी वाणी	कबीर	१८११- १८११	१०६-१८७	लि क रामदास
२८१	११५६७(१)	„ साखी	„	१६वीं	१-११	
२८२	२ १२	कयवन्ना चौपाई	जयरंग	१८२१	११	
२८३	२०६०	„		१७७६	१६	
२८४	९१८४	„		१७वीं	९१	
२८५	९२०६	„ *		१७६८	१४	
२८६	१८७४	„	„	१८६६	१६	
२८७	१६२१	कयवन्ना चौपाई	जयरंग	१८वीं	१८	
२८८	४०४८(१)	„ „	„	१८६१	९९	रचना १७४१
२८९	१७११	„	गुणसागर	१७११	१०	लि.क भरत
२९०	१८७५	रास		१८वीं	१५	प्रथम पत्र अप्राप्त
२९१	४०४६	„			५	लि क धार्यी हीरां
२९२	९०१२	करकण्डू चौपाई	मतिशेखर	१७वीं	१	○

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२५२	६०५	चो(र)ला हरण	प्रेमानन्द	१६०३	७४	
२५३	१२८६	"		१६वीं	१०	•
२५४	१८४१	पौराणपुराण भाषा वच		"	१२	
२५५	२३०६(१)	कृष्णाख्यान	ईसरदास		१४-१५	•
२५६	२१००	कृष्ण बारमास	किसनदास	१८वीं	१	
२५७	१८१८(४)	कृष्णरुक्मणी वेली	पृथ्वीराज	१७६२	१-६७	
२५८	२०७०			१७२२	४६	
२५९	२०६६	"		१७६६	३३	
२६०	३३३७(२)	" सटीक		१७६१	१-६६	
२६१	१६४२		"	१७१८	८१	
२६२	१६४३		"	१७६८	३३	
२६३	३३४८(४)	"		१८वीं	१-७३	
२६४	४८३८			१७७५	२४	लि.क. भाग्यविजय
२६५	४४२२(४७)	"	"	१८१७	८९-१००	लि.क. प्रीतसौभाग्य
२६६	७०६६(४)	कृष्णलीला वर्णन		१८२६	२-७	चित्र १
२६७	६७३५	कृष्णजीरो ब्याहलो		१६वीं	४	
२६८	३४७०	"		१८वीं	८	
२६९	७०३०	"	पदमकवि		६४	
२७०	३८२६	कृष्णजन्मोत्सव तथा पालणाबाल	सर्वसुखी	"	२	
२७१	२०५६	कृष्णबावनी	मोको ऋषि	१६वीं	२	
२७२	२३३८(१६)	"		"	१-५१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२७३	३२७३(२७)	कक्काभाव	विद्याविलास	१९वीं	१२४वां	
२७४	७४४४(२०)	कल्याणकल्प	श्रावक चोथो	१८८२	१२४–१२६	
२७५	५२११	कछवाहोंकी वंशावली		१८८४	११४	*
२७६	२०४७	कवको	मानविमल	१८८४	२	
२७७	४०४६	कनकावती चोपई	जिनहर्ष	१९वीं	२१	अन्तिम पत्र अप्राप्त
२७८	७७२०(२२)	कपड़कुतूहल		१८वीं	१लां	*
२७९	४०४७	कपोत कपोतणीरी वारता		१८५४	१२	
२८०	१९३७(२)	कबीरजीकी वाणी	कबीर	१८११–१८१६	१०९–१८०	लि.क. रामदास
२८१	३५३७(१)	साखी	,,	१९वीं	१–११	
२८२	२०१२	कयवन्ना चोपाई	जयरंग	१८२१	११	
२८३	२ ९			१७०९	१९	
२८४	३१८४	,,		१८वीं	२१	
२८५	३२०६	,,	,	१७६८	१४	
२८६	३८०४	, ,,	,,	१८५५	१९	
२८७	३६११	कयवन्ना चोपाई	जयरंग	१८वीं	१८	
२८८	५०४८(१)	,,	,,	१८९२	२२	रचना १७४१
२८९	६७१६	,, ,,	पुण्यसागर	१७१६	१०	लि.क. भरथ
२९०	३८७५	रास		१८वीं	१५	प्रथम पत्र अप्राप्त
२९१	४०४९	,,	,		५	लि.क. आर्या हीरां
२९२	२०६२	करणदू चोपाई	मतिशेखर	१७वीं	१	*

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२९३	१०६०	कल्पसूत्र [illegible]		१७वीं	६	भाषामें बहुत्तरकला प्रकार वर्णित है
२९४	१०५६	"		"	२१	
२९५	५६७६	कर्मप्रकृतिबंध	मतिचंद्र	"	११२	
२९६	१४०१	कर्मविपाक		१९वीं	७	भाषामें कलादेश वर्णित है
२९७	१६४४			१९१९	१६	
२९८	१८६१	"		१८१९	५	
२९९	४६१४(३३)	" काव्य	गुणकीर्ति	१८७७	२३१–२४५	
३००	२ ८८	रास	धीरचंद	१८२०	६	
३०१	५५०५(१६)	करमस्तोत्र	समयसुन्दर	२०वीं	४८–६१	गुजरातीमें रचित
३०२	११२३(१२)	करमचार	ज्ञानध्यानमय	१७वीं	६६–७१	•
३०३	४८२५	कलावती चरित	विजयभद्र	१९०१	४	इसरा पत्र अप्राप्त
३०४	१८७२	कलावती चोपाई	रामचंद	१८७२	५	
३०५	६३३	कलियुगमाहात्म्य		१८५८	२	
३०६	४०९०	कविकल्पलता	श्रीसार	१८०८	६	•
३०७	३३१४	कवित्त		१९वीं	१	
३०८	१४३०			१८वीं	१	
३०९	३५६२(११)			२०वीं	६० वाँ	
३१०	३५६७(१०)			१९वीं	११९ वाँ	
३११	७५२९(५४)	"		१८वीं	१०६–११०	
३१२	७५२९(७३)	मोत मादि		"	१२१ वाँ	
३१३	७५२९(६५)	"	जैराम		१२२ वाँ	

प्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११४	४११५(२)	कवित्त गीत आदि		१८८७	२०–४१	
११५	११२२(१६)	" छन्दे दूहा		१८८८	[illegible] वाँ	
११६	१५४२(१)	बेठ्यारा दूहा आदि		१९वीं	११–१५	
११७	१५५८(२)	" दूहा संग्रह		१८वीं	६८–१०१	
११८	७७२२(१०१)	" दूहा आदि	केसरसिंह		१३६–१४१	
११९	१५६७(१४)	" पद दूहा		१९वीं	१२९–१३१	
१२०	२०८२	" बावनी	जिनहर्ष	१८५७	१०	
१२१	७७२२(२६)	"	मयेराम	१८वीं	२४–२६	
१२२	७७२२(४५)	सवैया आदि			४१ वाँ	
१२३	७७२२(६६)	छन्दावलीवृत्र			१२६ वाँ	
१२४	२८८१(८१)	कल्पसूत्ररासवृत्र		१७वीं	१४३ वाँ	
१२५	४११५(१६)	कागदरी गजल		१८८७	३९८–४०१	•
१२६	२१८१	कान्ह कठियारा चौपाई	मानसागर	१८८२	१४	
१२७	१५५४(५)	" "	"	१९वीं	१५–१७	
१२८	१८७१	" "	"	१८४१		
१२९	४०५१	" "	"	१८वीं	८	
१३०	४०५०	" विवाहलो		१७०२	८	
१३१	१५१२(२)	काया नगरको कागद		२०वीं	१२–१६	•
१३२	१८२१	कालक कथा		१८वीं	६	
१३३	२१६५(१)	कालकाचार्य कथा		१९वीं	१–७	
१३४	७१७७	कालज्ञान भाषा	लक्ष्मीवल्लभ		७	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३५	९७८४	कालिका स्तोत्र	जयलाल	१९९७	२	
१३६	११४७(७)	कालिकाजी रा दूहा-सोरठा	सपो	१९वीं	८६–८७	
१३७	११२६	,, स्तव	बीरदत्त	१८९४	१	
१३८	९७८६	,, स्तोत्र तथा आरती	जयलाल	२०वीं	२	
१३९	१२४६	,, की आरती		,,	१	
१४०	४०२३	कालीनाग दमन पवाड़ो		१८वीं	७	
१४१	६४३०	काव्यविधान		१९वीं	११–४०	जैन स्तोत्रकी जैन ... उसके प्रयोग का ... किया गया है
१४२	११७६(२)	काळ्ह चोहाण किसनजीतणी वारता	सांमत भट्ट	२०वीं	६१–१०४	*
१४३	३८८०	किसनजीरी रासा		१९वीं	८	
१४४	११३१	कुंडलियाबावनी	धर्मवर्द्धन	१८ ७	६	
१४५	११६२	कुकुडजा		१९७०	१	*
१४६	७७६१(७)	री बात		१७२०	६१–१०४	लि क माधौ
१४७	२१४६	कुतुबुदीन साहजादारी वारता		१९०२	१२	
१४८	७७२१(१०)	,,		१८२६	१११–१७७	
१४९	११६७(२७)	कुमति रासो		१९वीं	१७७–१४८	
१५०	६६६१	कुमति विध्वंसन चौपाई	हीरकलश	१७वीं	७	रचना १६७७
१५१	६६१	कुमारपाल रास	ऋषभदास	१८८०	१०८	
१५२	१६६४	,,	हीरकुशल	१७वीं	१८	रचना १६४०
१५३	४६०४(१)	कैरपुरावाली चौथमाताजीरी कथा		१८६१	१–३४	लि क कल्याणसौभाग्य

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५४	७१७२(१)	केवाल रजाकी कथा		१६१६	५७	
१५५	११५७१(११)	केवलज्ञ आदि बैगल		१६वीं	१३५ वाँ	
१५६	११२३(१४)	केशी गौतम संधि		१७वीं	७५–७६	
१५७	११७५(७७)	अध्ययनार्थ		२०वीं	३१६–३२१	
१५८	११२२(६६)	कोठेसरको ग्रन्थ	बिसराम (?)	१६वीं	८९ वाँ	
१५९	७११	कोकशास्त्र भाषा (काम विलास)		१८१२	११	ग्रन्थ में 'काम सामुद्र' नाम है
१६०	७१८			१८१४	१२	
१६१	१८३४		नरवद	१८वीं	५	
१६२	२८६३(४५)	खरतरगुणनाम संस्तवन	हीरकलश	१७वीं	४ था	
१६३	२८६३(६)	खरतरगिरिगच्छोत्पत्ति छप्पय	हीराणंद		११४ वाँ	
१६४	२८६१(६६)	गालवऋषि विचार		"	११२ वाँ	
१६५	२४१८(१०)	खिचड़ी रासा		१६वीं	१६८–१७०	
१६६	४ ६०	खींची गंगादासकी बात		१८वीं	६	सं १६ के समान
१६७	२१४३(२)	खी(डी)वे सिवीरी बात		१८६०	४–७	
१६८	४४५२(११)	गजकृत मातावीरी बीसावी	लाल कवीसर	१६०८	१६ वाँ	
१६९	४६८८	गोरखसिद्धि		१८४७	६	लि क चतुरविजयगणि
१७०	४६८६		महिमोदय	१८४८	६	लि क ज्ञानविजय
१७१	४४१२(८४)	गौतमरासजीरो छन्द	कवि देव	१८वीं	१२५ वाँ	
१७२	१५५ (५)	गोतमाजीरो छन्द		१६वीं	३६–४०	
१७३	२१७४(१२)	गौतमासनो रास	लखमीरतन	१८२७	४३–४७	
१७४	१८१६(५)	छद्मस्थमुनि चोढालीयुं		१८२६	२३–५७	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७५	१२७३(१४)	गंजसमुनि चोढालीयुं		२०वीं	१९-७०	
१७६	१२७१(१८)	गउडी पार्श्व स्तवन	जिनचन्द्र	१६वीं	१०१ वां	
१७७	४११४(१४)	गजमुनि चौमती		१८७१	१०८ वां	
१७८	६४१७(२)	गजसिंहकुंवर कथा		१८वीं	२४-४८	अपूर्ण
१७९	१२७३(११)	गजसुकुमाल गीत	नयसूरि	१ वीं	३३-३४	
१८०	११२१	„ छत्तीसी	केसव	१८वीं	३	
१८१	१८११	„ हास	मुनिचंद		१-४	
१८२	६४७	„ विवाह		१७८०	७	
१८३	२०८३	„ संधि	मूलाऋषि	१६६५	८	
१८४	१२७४(२१)	„ स्वाध्याय		२०वीं	९७-१००	
१८५	४ ५६	गजसुकुमाल चरित्र		१८वीं	१८	अपूर्ण
१८६	६५४१	„ रास		१८८७	८	लि.क. देशी
१८७	६७३	गणधरवाद बालावबोध भाषा		१६वीं	११	
१८८	२८६३(२३)	गणविचार चोपाई	हीरकलश	१७वीं	१३वां	
१८९	३४४०	गणित पंच साठीयो दोहा	मतिसागर	१७६७	६	
१९०	७०२१(१६)	गणधरवीतराग स्तुतापणि		१८वीं	१२० वां	
१९१	३८११	गतिविचारण विधि		१६वीं	२	
१९२	१२६२(१)	गरब चिंतामणी	रामचरण	१६२६	१-११	
१९३	६०४१	गर्भोत्पत्ति स्तवन	पीतार	१८वीं	३	
१९४	९२६६	गांगातेलीरी बात		१६वीं	२	
१९५	१२२३(५)	गायक मालगी	जिनेचंद	„	१२७-१२६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३९६	३५५९(५)	गिरोसीरी कथा		१९वीं	६६–७०	
३९७	३५५८(२)	बात			१–११	
३९८	५४५८(४)	वारता		१८५६	१–२७	अपमाल वारता
३९९	३५६२(१८)	,, गजमोरकी वारता		२०वीं	१४६–१६१	
४००	८८४	गिरनारकी गजल	कल्याण	१८८८	३	
४०१	४९१५(५)	गीत		१८८७	११४–११५	
४०२	४९१५(१५)	कवित्त		,,	१२५–१२७	
४०३	४११६	ग तवोविन्द भाषा	टी पीताम्बरदास	१८वीं	७७	अंत्य पत्र अप्राप्त
४ ४	७५६६	,, सज्झाय			४	
४ ५	७७५२(६०)	गीत सवैया आदि			१२८ वाँ	
४०६	२२६०	संग्रह	जयलालसिंह आदि	२०वीं	१२	
४०७	४६०४(१)	गीता माहात्म्य			५५ वाँ	
४०८	२०८६(१ ३)	पुंडरीकाजन संवाद		१७वीं	१६३ वाँ	
४०९	११२३(२१)	पुडी पारसनाथ छन्द	कुशललाभ		८२–८३	
४१	११४३(२)	पुष एकादशी माहात्म्य	लांगा मेघू	१९वीं	१८–२८	
४११	४०२२	पुनकरंज गुणावली चोपाई	ऋषि दीप (?)	१८२१	९२	
४१२	४०५३			१९वीं	९७	लि क आर्या नाथी
४१३	४८२०	रास	,,	१८७४	९०	
४१४	६०९७	,,		१८१९	१५	सं १७५७ में रचना
४१५	६६४२			१८१३	१६	लि क मयाविजय
४१६	२१०३	पुरुषलाभाकर छन्द	सहजसुन्दर	१७४६	१६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४१७	२०११(१)	मुगसागर बात		१७३४	१-९	
४१८	११६१(२)	"		१६६७	२१-३४	
४१९	४०११	मृगहरिरास		१७२६	७	
४२०	११६४	मृगावती कथा चौपाई	मालदेव	१८वीं	८	
४२१	२ ११	"		१७४१	७	
४ २	१८८१	"		१८४८	२४	
४२१	११६८		सीपो	१८७१	२६	सं १७२७ में रचित
४२४	६५	मृगावती मृगांकरी बात		१८वीं	२-४	
४२५	४०६५	चरित्र चौपई	प्रीतिहर्ष	१८७४	२१	रचना सं १६११
४२६	६ ६	मृगावती बुद्धिप्रकाश रास	यशसागर	१७वीं	१०	
४२७	१६२६	मृगावती रास	नयकुशल	१७१८	१८	
४२८	५०६४	"	"	१६वीं	२६	
४२९	११६४(५)	मृगसार		१८६१	३१-३२	
४१	११८४	" विचार		१७वीं	१	
४३१	५१०३	मृगलेखारी कथा			२	मुद्रित ग्रन्थ
४३२	१६७५(७१)	मृगशी मुंहती		२०वीं	१०७ वाँ	
४३३	२८६१(१९१)	मृगसुन्दरी मुनावली	हीरकलश	१७वीं	१७१-१७७	
४३४	७१८०	रास	ज्ञानविमल	१९वीं	१२	
४३५	१६७५(२५)	गोरीजिन स्तवन	प्रीतिविमल	२ वीं	१०४-१०९	
४३६	१०६२	मोरीजीरो गुण		१८२४	५	
४३७	१६७५(१०)	गोरी पाड़ जिन चौढा स्वप्न स्तवन	समयसुन्दर	२०वीं	४१-४६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३८	११२२(२६)	गोडीपार्श्व [redacted]		१६वीं	७४-७५	
४३९	२०२१		कपसेवक	१८वीं	६	
४४०	२२११(१)	" [redacted] स्तवन	प्रीतिविमल	१८१८	१-२	
४४१	२०२९		नेमविजय	१८२६	४	
४४२	२२२८(३)	गौतम रास		१८१८	४	
४४३	७२६७	गौतमपृच्छा चौपाई		१७२६	११	लि क. मुनि नंदजी
४४४	९१२८	" बालावबोध	जिनसूरि	१८८३	१८	
४४५	२४११(७)	गौतम लघुस्तवन	समयसुन्दर		३८-४	
४४६	२०११(२)	स्वामी रास	उदयवंत	१९०१	१-८	
४४७	२४११(१)				१७-२१	
४४८	७४६४(११)	गौतम रासो		१८८५	२०५-२१२	
४४९	१४६६	गोपीचंद राजापद		१९वीं	१	
४५०	११४६(३)	गोरखनाथजीरो छन्द			१० वां	
४५१	१०२७	गोरखप्रमोद भाषा		१७८४	२	
४५२	४४५२(५)	पत्रा		१८वीं	१० वां	
४५३	१२४६(५)	गोरमजीरो छन्द		१९वीं	११ वां	
४५४	२११९	गोराबादल कथा	जटमल	१८२८	६	
४५५	२११०(३)	की बात	"	१९वीं	११-१७	
४५६	११११(२५)	री बात		"	१५१-१५९	
४५७	११८४	चौपाई	भाग्यविजय	१८ ?	३१	
४५८	११८५	"	हेमरतन	१९वीं	२६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि आवश्यक	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४५९	१०९९	मोरध्वज चौपाई	लक्ष्मोदय	१७६३	२५	
४६०	३३८९	,, ,,		१७२६	४१	सं १७०७में रचित
४६१	४१११	,, कथा आदि गुटका		१८वीं	६०	१४ कृतियोंका संग्रह
४६२	७०१२(१)	,,	हेमरतन		२७–३५	सादड़ीमें रचित
४६३	४११४(२)	,,	जयमल	१७७७	९–१५	लि.क जयसीधारण
४६४	११०७(५)	मोरध्वजरो दोहरो सवायो तथा मोरध्वजवर्णन	मायो	१९वीं	१०–३१	
४६५	११७५(४१)	मौनएकादशी प्रश्नोत्तर स्तवन	खुशाल चावल	२०वीं	१९९–२०६	
४६६	१०३९(१६)	मौनएकादशी आदि		१८३३	११८–१४३	
४६७	१०३९(८)	मौनमाहात्म्य	लावण्यसमय	१९वीं	४०–४१	
४६८	११८	मुहूर्त विचार		,,	२	
४६९	१००७	,,		,,	२	
४७०	४५०४	,,			२	
४७१	१४८	,, भाषा		,,	२	
४७२	१०४	अनेक विचार			६	
४७३	१८६३(१४)	मुहूर्तफल		१८वीं	६ वां	
४७४	११९४	मुहूर्तव्यवहारकी विधि		१९२८	६	
४७५	१२४८	मुहूर्तव्यवहार विधि		१८वीं	६	
४७६	५२०६	मुहूर्तविचार टीका			३	
४७७	४०२६	मूर्तिपूजा			६	
४७८	४४१२(७१)	मूमूच		,,	१२३ वां	मूर्तिपूजा सम्बन्धी प्रश्न-विचार प्रश्नमें लाहौरवाला रामलिपिलरो सम्म है

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४७९	११५७३(८)	चौडावर्णन तथा बर्षावर्णन दूहा		१९वीं	१०–११	
४८०	४६२४(१०)	चौबोरा बखाण		१७६३	११–१९	
४८१	४४२२(६१)	बखाण		१८वीं	११ वां	
४८२	१८१७	चउपरवीबखाई	समयसुन्दर		२०	
४८३	७७५	चउसठी (योगिनी) छन्द तथा जगदम्बा छन्द		१९वीं	१	
४८४	५१२३(२)	चक्रेश्वरी		१८वीं	२–११	
४८५	११७७५(७४)	चक्रेश्वरी स्तवन		२०वीं	१०७–१ ब	
४८६	७१२४	चतुर्मु ख्रस्वभाकिरण		१८७७	११	
४८७	२८६१(१६)	चतुर्विंशति जिनस्तवन संख्या चौपाई	हीरकलश	१६१६	८४ वां	
४८८	२८०३(१३)	चतुर्विंशति जिनपंचकल्याणक स्तोत्र		१७वीं	६६–६६	
४८९	५१७६(२१)	कल्याणक सूची			२४३–२४८	
४९०	९६१२	चर्चा समाधान		१९वीं	२१६	
४९१	४६१४(२७)	चरित्रधनलाय गीत		१८७७	११२–११३	
४९२	६५६	चातुर्मासिक व्याख्यान बालावबोध	सूरचंद	१८वीं	१२	
४९३	११८१	,,		१७वीं	२८	
४९४	६११३	व्याख्यान पद्धति		१९११	२४	लि क. हेमचंद्र
४९५	५१०५	चार बधारी बात		१९वीं	१	
४९६	७२११	चार भावना (पद्य)		१७वीं	११	
४९७	९२६२	चारित्रप्रत्येक बुद्धचरित्र	समयसुन्दर	१६७६	२७	प्रथम पत्र अप्राप्त
४९८	११५१८(१०)	चावंडारो छन्द	फूलोसाम	२०वीं	६६–६७	रचनास्थल–सोजत

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि नामादि	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९९	१२०५	चितोड़की गजल	खेतल	१८वीं	२	सं १७४८में रचना
२००	१२२०(४)	,,	,,	१९वीं	१७-१८	
२०१	४८३१(३)	,,	,,	१८वीं	६	
२०२	४८०६	,,		१९वीं	२	
२०३	४८१२	,,	,,	१७७१	५	३रा पत्र अप्राप्त
२०४	१२४६(१७)	चितोड़ जोधपुर अजमेर आदिकी ऐतिहासिक उल्लेख		१९वीं	१९१-१९५	
२०५	४८२२(१०)	चित्रसन्त काव्य		१८वीं	१५४-१५५	
२०६	१८८६	चित्रसेन पद्मावती चौपाई	रामविजय उपाध्याय	१९वीं	१५	
२०७	१२७१(२१)	,, संयुत चोपालीयो	जीवराज	,,	१६६ वां	
२०८	४८६७	,, चौपई	कनकसागर	१८वीं	३५	
२०९	२८८३(७८)	चिहुंतरसंग विधि	हीरकलश	१७वीं	१४१ वां	
२१०	६२८७(१४)	चेतन गीत	समयराम	१८वीं	११५-११६	
२११	७८१०(१)	चेतनदासकी बाणी	चेतनदास	,,	२१०-२४८	
२१२	२११८(११)	चैत्यवंदन	कनकविजय	१८४८	४० वां	
२१३	६७८२(४१)	चोबोली रावीरी कथा	जिनहर्ष	१८वीं	११८	
२१४	६४७४(१३)	चोढालियो (बागतीत तलवार)	समयसुन्दर	१८७५	२०२-२१३	
२१५	३१५८	चौबली कथा		१८३३	४	
२१६	२११४	,, मातारी बात		१९वीं	२	
२१७	१२७७	कथा			४	
२१८	१२४८(१४)	,, ,,		,,	८२-८३	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नामाम्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१९	११९१७(४२)	चौयको कथा		१९वीं	११८–१४१	
५२०	४०६६			१८वीं	१	चित्रपट्टमें लिखित
५२१	११६६१(१)	चौबीस एकादशीकी कथायें		१७८६	१–१०	
५२२	९८८३(५१)	„ मति सागर विवरण		१७वीं	८६–९०	
५२३	६०६७	चौबीस चौक	अमृत कवि	१८६३	७	लि क भानुकीर्ति जयपुर
५२४	६६१८	चौबीस तीर्थंकरोंकी पूजाविधि		१९वीं	६६	
५२५	१८३६(११)	चैत्य स्तवन	धर्मविजय	„	४८–५९	
५२६	१२ ४	चौबीसी स्तवन	जिनराज	१७६२	६	लि रूपा कासु
५२७	१२७५(१)	„	देवचन्द्र	२०वीं	१–२४	
५२८	१२७५(११)		जिनराजसूरि	„	१४२–१५४	
५२९	११२२(२६)	चौबीस तालना कवित्त		१९वीं	२८ वॉ	
५३०	२११८(८)	चौरासी सोल मारतंडिका आदि		„	५१–५९	
५३१	७४२६	चौसठ मार्गोका विचार			६६	
५३२	२३६०(७)	चंदकंवरी [illegible]			५५–६१	
५३३	१५५५(२६)		हृंस कवि	„	१५६–१५९	
५३४	१६६२(१२)	„	„	१६७०	६८–८१	
५३५	१५७१(४४)			१८०८	१०७–१०८	
५३६	४१४८	„		१८१६	१८	
५३७	४६१५(१०)			१८८७	१४८–१६०	
५३८	४६११(६)		कविराय	१८१०–१८१२	१–६	
५३९	५३४१(२)	तथा स्फुट कवित्त		१९वीं	५८–६०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि आगमय	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४०	७०५३(११)	चंदकंवररी वात	कुशल कवि	१८१७	४७-९०	
५४१	५४१८(१)	〃 वारता	सकलकीर्ति	१८३८	४	
५४२	१०२४(१)	चंदनबाला चोपाई	देपाल	१९वीं	१-४	
५४३	७१७६	भगवती गीत	भक्तिलाभ	१८वीं	१	
५४४	६१६	चंदनमलयागिरि चोपाई	भद्रसेन	१८६६	८	विक्रमपुरमें रचित
५४५	१००६			१८वीं	४	
५४६	४०५८	〃		१८६५	१०	लि० क० उमेदराम
५४७	४४२१		यशोवर्द्धन	१७८६	११	रचनाकाल १७४७
५४८	७५१२(४८)	वारता	भद्रसेन	१८०६	१०१-१०२	
५४९	६११६	〃 चौपाई		१८१४	८	
५५०	७०७६			१८वीं	५	
५५१	५ ८४(२)	〃 री [illegible] सहित		१८९६	९६-१५	५४ वाँ पत्र अप्राप्त
५५२	७०७२	चंदराजा चरित्र	मोहनविजय	१९वीं	१०५	अपूर्ण प्रथम व अंतिम पत्र अप्राप्य
५५३	४१५	〃 रास			६६	अंतिम पत्र अप्राप्त
५५४	६८५०	चौपाई	विद्याकीर्ति	१८ ९	४१	सं १७७७ सिरोहीमें रचित
५५५	६६०	रास	मोहनविजय	१८८५	१६०	सं० १७१८ राजनगरमें लिखित
५५६	६६६	〃		१८९०	७७	
५५७	२०९२		〃	१८११	९६	
५५८	२०८४	〃 〃		१८२५	१०४	
५५९	५५५४(२)		〃	१८०६	१-६०	
५६	१८८१		〃	१८३१	८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६१	१५८२	चन्दराजा रास	लब्धिरुचि	१८२७	६१	
५६२	१६७०	"		१८६१	११०	
५६३	१६२५(१)	"		१८७०	६३	अंतमें पार्श्वनाथ गीतके १६ पद्य लिखे हैं
५६४	१६६६			१८२१	७६	
५६५	४०२६	"	मोहनविजय	१८१०	८२	
५६६	६६४६(२)	" नो रास	"	१६०६	७०–११४	लि क हुकमचन्द पांडे
५६७	८२४६	"	"	१८४७	६८	सं० १७८३में रचना
५६८	७४२	"		१८४६	१२३	लि क पृथ्वीराज
५६९	११४३(१)	चंदराजकी बात	जिनमती	१९वीं	२०–३५	
५७०	६६१	चंद्रप्रज्ञप्त्यधिकार			५	
५७१	२८६३ (११८)	चंद्रगुप्त सोल स्वप्न सज्झाय	हीरकलश	१७वीं	२४३–२४४	सं० १६२२में राजलदेसरमें रचित
५७२	१५७५(१४)	चंद्रप्रभजिनस्तवन	समर्थ	२०वीं	२६६–२६७	
५७३	७४०७	चंद्रलेहा चौपाई	मतिकुशल	१७७८	१८	
५७४	६५५	चंद्रलेहा चौपई		१७७४	२०	लि स्था नापासर
५७५	१८२६		दुर्लभमुनि	१७वीं	५	
५७६	२२२६		मतिकुशल	१६७५	२१	
५७७	३५०३		"	१७६५	२१	
५७८	३५३७	"		१८३०	२१	
५७९	३५५०(३)	"	"	१९वीं	१३–३३	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि आवश्यक	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८०	१८८४	चंदलेहा चौपाई	मतिकुशल	१७६१	९७	लि स्था पीपाड़
५८१	३६२६	″	″	१७७७	१६	लि स्था म(मौ)ड्या
५८२	३६०१	″		१७७४	११	
५८३	४ ६०	″ चरित्र चौपाई	″	१८०५	१६	र १७९८में रचना
५८४	४७८६	″ रास	″	१९वीं	९४	
५८५	४७६५	″		१८वीं	२६	
५८६	२२११	चंपक श्रेष्ठि चौपाई	समयसुन्दर	१७वीं	१०	
५८७	५०६६	चंद्रायणा कथा	कल्याण	१८वीं	२	
५८८	५१०६(१८)	″	मलयकीर्ति		२११–२१३	
५८९	४७१६	चौबोली		″	११	
५९०	५०८१	छत्तीस अध्ययन भास	लावण्यरत्न	१६४२	१५	लि क हर्ष
५९१	१२४६(१७)	छत्तीस राजकुल भास		१९वीं	७४ वां	
५९२	२८१३(१०८)	छाया भास		१७वीं	१९५	हीरकलशद्वारा लिखित
५९३	२८६३(११६)	छियासठ जिन नमस्कार	हीरकलश		१७४–१७५	
५९४	२८६३(४३)		″		८६–८७	
५९५	७७२१(७८)	जीव चर्च		१८वीं	१२३ वां	
५९६	४३ ८(३)	जीतरामजीका सवैया	जीतराम		२२०–२२५	
५९७	३६७०	पूरक गुहा		१९वीं	३	
५९८	११२	ज्योतिष (सार गुहा)	मेघराज	१८९९	४	
५९९	१२४७(३)	″ गुहा			१ ला	
६००	१२४०(११)	″		″	८६–९०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६०१	४८४७	ज्योतिष वार्ताएँ		१८४३	१०	
६०२	५५२८	,, सार	कवि कृपाराम	१९०७	४०	लि क रामकुंवार
६०३	३५४६(११)	जखरा मुखरारी वारता		१९वीं	१०७–२११	*
६०४	११२२(३)	जगदूनो छन्द	जीतो	,,	२ रा	*
६०५	११२२(१८)	,, साहूनो जस			१० वां	*
६०६	३५५४(२१)	जगदेव परमाररी वात		१९२४	३२–४९	
६०७	७७५२(१४)	जगदेव पमाररा कवित	कंकाली भाटण(?)	१८वीं	११९ वां	
६०८	७१७१(२)	री वात		१९१६	१–३५	
६०९	७०२१(१४)	,,		१८६७	७१–८८	अपूर्ण
६१०	४९१६(१)			१८७५	४४	
६११	७७५२(७१)	जड भरथरा कह्या श्लोक आदि		१८वीं	१२१ वां	
६१२	६२०	जन्मकुण्डली विचारादि		१९वीं	६	मारवाड़के बख्तसिंह और जयपुरके राजाकी कुण्डलियाँ
६१३	४८४८	जन्मपत्री गणित		,,	२९	
६१४	४५२४	(जन्मकुतूहल)			२५	
६१५	६४१४	,, प्रकार		१७९९	६	
६१६	७४२७	जम्बू अध्ययन		१८८०	५८	प्रथम पत्र अप्राप्त
६१७	४२७३	,, गुण रत्नमाल		१९वीं	११	
६१८	६६६८	,,	मार्गव जेठमल	२०वीं	३६	
६१९	४१५७	,, चरित्र रास	पदमचन्द मुनि	१९वीं	११	लि क परतावाई स्था अजमेर
६२०	७०४६	,,		१८७२	३५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नाम	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२१	७२११	जम्बू चरित्र रास		१७६६	१०	
६२२	७६०१			१८६१	१११	
६२३	६२४	जम्बू पृच्छा रास	हीरमणि	१८८६	११	सं १७८८में पाटनमें रचित
६२४	१०१०	॥		१८११	१२	सं १७२८में पाटनमें रचित
६२५	६१७६(१)	जम्बू स्वामी कथा			४९—८	लि क बिहारी मूलमध्ये लिखित
६२६	७११२			१८६२	५०	लि क नानकचंद
६२७	६७१५	॥		१८२६	७	
६२८	६०४१	॥		१६वीं	४	
६२९	११७२	॥ चरित्र		१७वीं	१२	
६३०	३७०१	॥ ॥		१८वीं	१६	लि स्वा चांदमु
६३१	२२३१	॥ चौपाई	चंद्रभाण	१८६३	१६	पुनाई ग्राममें लिखित
६३२	१७०२	॥	दीपाल	१६४८	८	सं १५२२में रचित
६३३	१२०१(१४)	॥	॥	१६वीं	१८—४२	जीर्ण प्रति
६३४	२११२	॥	जयवंत	॥	५३	१५ से २३ पत्र अप्राप्त
६३५	१२८८	॥ रास	नयविमल	१६४६	४६	सं १७५४में लिखित
६३६	१७०१	॥	राजपाल	१६२६	१४	सं १६४२में रचित
६३७	१५६४(७)	जमालगरा हुआ महामांडिवाय		१८६१	१६—४६	
६३८	११२८	जयविजय चौपाई	धर्मदास	१७वीं	२८	सं १५५१में खापरामें रचित
६३९	१८८४	जयपुर वैतक		१७३३	८	लि ग मतिविमल
६४०	५४१८(११)	जलयात्रा विधि		१६वीं	११४—११६	
६४१	१२०१(२२)	जमाल महोलोयी वार्ता		१८१२	११६—१२१	लि स्वा अंबरी

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४२	१५४६(८)	जसास महाजोरी वारता		१६वीं	१०-१७	
५४३	७४५२(१२)	"		१८०७	३५-४	
५४४	४०१२			१८६०	९०	लि क हेमचंद
५४५	७७१६(५)	"		१८३६	२-४२	
५४६	६०६५	जसास कुमना वारता सचित्र		१८वीं	१२	चि सं १२
५४७	४२२	स्वरूपो ग्रन्थ	कांति	१८३८	१	
५४८	२११२(७)	जसवंतसिंहजीरा कवित्त		१८वीं	७ वां	*
५४९	१५४८(६)	" तथा अजीतसिंहजीरा कवित्त		"	१	*
५५०	११२२(४६)	जमालकारी गीतादी		१९वीं	६२-६१	*
५५१	४०६४	जामवती चोपई	पुरसागर (?)	१८४७	७	लि स्था बीकानेर
५५२	१४७४	जालोर पार्श्व विविध ढाल स्तवन	पुण्यकीर्ति	१७वीं	५	*
५५३	६४६	जालंधरपुराण	सुरदास	२०वीं	४१	
५५४	४८१७	जिनरास	वेणीराम	१८४१	१७	
५५५	१५७५(११)	"		१९वीं	१००-१०४	सं १७१६में रचित
५५६	२८६३(१११)	जिनकल्याणकस्तवन	हीरकलश	१६२१	१५५-१६७	
५५७	२८६३(१२२)	जिनचंद्रसूरि गीत	"	१७वीं	१७७ वां	
५५८	२८६३(१२४)		"	"	१८२-१८६	
५५९	२८६३(१२५)	"			१८६-१८८	
५६०	२८६३(६४)	" स्तुति	विसह	"	१६० वां	
५६१	२८६३(३)	जिनप्रतिमाधिकार चोपाई	हीरकलश		९-३	सं १६२४में रचित

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६२	१५५५(३१)	जिनरास		१९वीं	१७०-१७४	
१६३	१५७५(५)	जिनप्रतिमा स्थापन स्तवन	जिनसुख	२०वीं	२४१-२४८	
१६४	१६८५	जिनरंग बहुतरी	जिनरंग	१८वीं	२	
१६५	१५०५(५४)	जिनहित जिनलाभ चोढालियो	उदयरतन	२ वीं	२५९-२६०	
१६६	१५०५(६२)	जिनवाणी स्तुति	शिवचंद		२६४-२६५	
१६७	२१६८(१६)	जिनवीनती	कनककीर्ति	१९वीं	५०-५१	
१६८	१५७५(७१)	जिनहर्षसूरि गात		२०वीं	१०५-१०६	
१६९	१५७५(६६)		शिवचंद	"	२९८-२९९	
१७०	२८६१(१५)	जिनकुशलसूरि गीत		१७वीं	१६ वाँ	
१७१	२१२५	जिनाज्ञा स्तवन सविवरण	नेमिसागर	१८वीं	५	
१७२	५ ७१	जिनेश्वर पूजा पद्धति			१६८	
१७३	७४४४(१)	जीव विचार		१८८५	१२१-१२९	
१७४	१५०	जीराउला पार्श्वनाथ स्तवन	सोमविजय	१७४५	३	
१७५	४६१४(२६)	ज्ञानक्रियामय [illegible]	प्रभुचंद	१८७७	२४२-२४८	सं १८५२वीं लिखित
१७६	४६०५(७-९)	जुगजीरा दूहा आदि			११-१६	
१७७	१५५५(११)	जैतसी उदावतरी वारता		१९वीं	६०-६५	
१७८	५४२६	जैन बोल संग्रह			३१	
१७९	१५४३(६)	जोग पावडो	गोरखनाथ	१८५५	१०-१४	
१८०	२५८३	जोग बत्तीसी	जोग	१८वीं	१	*
१८१	४६१४(५४)	जोगीरासा	जिनदास	१८७७	१००-१०२	
१८२	५४१८(२०)	"	"	१९वीं	१४३-१४५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि आचार्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६८३	२४१८(२५)	ढोलीरासा	भगोतीदास	१७वीं	१५२-१५४	
६८४	४२८७(४)	ढोली रासो	जिनदास	१७२६	१४-१८	लि क रामचंद्र
६८५	९१ ६(१)	ढाळो		१९वीं	१-२	
६८६	२४१८(३१)	ढंढाणा गीत			१००-१०१	*
६८७	११९२(१२)	ढाकरपचीसी			७ वां	
६८८	३२६२(४)	ढोकरीरी बात रो चुटकलो		१९२६	१८-२०	
६८९	६८४१	ढालपट्ट आदि		१९वीं	६६	
६९०	४०६७	ढालसार	जोधमल		१९	रचना सं १८२६
६९१	३८८७	ढालसागर	गुणसागर	"	१११	सं १६७६ में रचना
६९२	३९७२	"	"		९९	
६९३	५१२२	"	केशराज	१८वीं	१०१	
६९४	६७१७			१८६७	११६	लि क गुलालचंद
६९५	७२२४		गुणसागर	१८वीं	७७	
६९६	७३७५		"	१७९८	७६	
६९७	४०३३	, प्रबन्ध	"	१७७०	१०४	
६९८	४०६६	"	"	१७२६	८६	लि क जोधमजी
६९९	६१३	ढूंढक पचाड़ी	अविचल (?)	१८७४	६	
७००	११९२(३१)	ढूंढियांरो छन्द तथा सवैया	प्रेमकवि	१९वीं	१६ वां	
७०१	११७४(१)	ढोलामारवणी चोपई			१-२८	
७०२	२२ ७	ढोलामारू री वार्ता		१८२४	८	
७०३	१८८१(२)	ढोलाजीको बात		१९वीं	२२-६६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि आख्यय	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
७०४	५ ८४(१)	ढोलामारू सचित्र		१८३६	१४	लि सं १६
७०५	७७२०(१)	ढोलामारू चोपाई	कुशललाभ	१७५६	१–२१	
७०६	१४१८	ढोला मारवणी "	"	१८वीं	२४	सं १६१७ में रचना लि स्था —जेसलमेर
७०७	३८११	ढोला " रा दूहा सचित्र			११–११४	सं १५३०में रचित लि सं ३१
७०८	७३४७	मारूनी बात	कुशललाभ		४६	
७०९	६७२०	" " रा दूहा		१९वीं	४७	
७१०	४६२४(११)	" री चौपाई	"	१७७०	१–३४	
७११	३५०१(२)	दंडकस्तवाम्नाय	जिनहर्ष	१९वीं	१७ वां	
७१२	७७४८	तर्कप्रकरण	तखतराम	"	३७	
७१३	७००७	तमिलनाडु भाषा		१८२०	२१	
७१४	१६६७(२५)	तारारे लोकमारी सज्झाय	दुर्लंकुशल	१९वीं	१४६–१४७	
७१५	३३६८(५)	तारणबोधरी वार्ता			१७–४	●
७१६	२६८१	तिथ्यानन्द टीका		१७वीं	१	
७१७	१२४६	तिथ्य सहायी भारतीयी भाषा	सीताराम	१८१	८२	
७१८	४८७५	तुरक मधुनावली		१८५०	२६	
७१९	११४४(६)	तेजपाल धनवल्लभ तथा नागोर चित्तौडादिके ऐतिहासिक संवत्		१९वीं	४८ वां	●
७२०	७५१२	तैर्थसिद्धीका सवया		१७४३	१७	प्रथम पत्र अप्राप्त
७२१	४६१४(५०)	तैरह काठिया		१८७०	२७६ वां	
७२२	७६०४	तंदुल वेयालियं सूत्र	पार्श्वचंद	१८११	४१	लि च मोतीचंद डूंगरशी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता यादि भाषाय	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७२३	२११२(१२)	तेतावली कथा	हरजी जोशी	१८वीं	७	
७२४	७२१५	थावच्चा चोपई	समयसुन्दर		१८	
७२५	१२७१(७६)	थावच्चा मुनि चोढालियो	क्षमाकल्याण	१९ वीं	३११–३१६	
७२६	२२२८	,, सुत चोपाई	रायचन्द	१८वीं	१७	
७२७	१८८८	,,	समयसुन्दर	,,	२५	सं १६९१में रचित
७२८	४२०४(२)	थावर दैवतारी वात		१८९१	१५–१६	लि क. कल्याणसोमगण
७२९	४ १८	दूलहा नवरसो	उदयरतन	१८४६	५	सं १७६१में रचित
७३०	४८३२	,,		१८३२	८	लि क रामविजय
७३१	६२२५	,,		१८वीं	२	
७३२	७४४४(१४)		,,	१८८५	२२१–२५०	
७३३	१२७१(२४)	दंडक पार्श्वनाथ स्तवन	कुशललाभ	१९वीं	६६–७०	
७३४	७४२१	दंडकसंस्तबक		,,	६	
७३५	७४४४(५)	,, प्रकरण		१८८५	१३६–१४१	लि क नेमविजय
७३६	११२१	द्रव्यसंग्रह बालावबोध	पर्वत धर्मार्थी	१६८६	४५	
७३७	१८२६	द्रौपदी चोपाई	कनककीर्ति	१७०७	२०	सं १६९३ में जैसलमेरमें रचित
७३८	२११२	,,	,,	१७२६	२६	
७३९	१४७५	,,	,,	१७१८	१६	डोल ग्राममें लिखित मांडवपद पार्श्वे
७४०	३११८		,,	१८वीं	११	
७४१	६६६	द्रौपदी रास	समयसुन्दर	१८२६	२०	सं १७००में मुलतानमें रचित
७४२	६५११	,,	कनककीर्ति	१८वीं	४१	जैसलमेरमें रचना

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७४३	११२६	ढोलारो रास	कनककीर्ति	१८१५	४०	
७४४	६४११	द्वादश भावना		१६वीं	४	
७४५	११६४	द्वादश भावना		१७वीं	४	
७४६	३११५(१)	दस श्रावक कथा		१६वीं	७ वां	
७४७	६४४६(५)	दशलाक्षणी कवको	रत्नलाल		६-११	
७४८	१८१६(१०)	दानशीलतपभाव वर्णन	रामचंद		४४-४७	
७४९	४६१४	दर्शनस्तोत्र		१८७७	१७७-१७८	सं १८२४में रचित
७५०	३१७५	दशवैकालिक भाषा	रामसुनि	१७वीं	२४	
७५१	६८६	„ स्वाध्याय	बुद्धिविजय	१६वीं	७	
७५२	२८६३(८७)	दयाविचार चोढाल		१७वीं	१७६ वां	
७५३	२८६३(११)	दयाछत्तीसी गीत	हीरकलश	„	१-८	१ नवां पत्र अर्ध-मुद्रित
७५४	६५४४	„ चौढालियो	दीपो	१६वीं	३	लि.स्था प्रतिपुर
७५५	६१६६	दयावती			९	लि क उपाध्याय पद्मचन्द्रजी
७५६	३५७३(५)	दाढ़ाला एकलमल्ल बराहुरी वारता		„	१८-२२	सं ९२०के समान
७५७	३५३६(९)	„ री वारता			१-१०	„
७५८	४१४६	„ री वारता		१८१७	२१	„
७५९	११९२(९८)	दातार सूमरो संवाद		१८८८	८७-८८	
७६०	४१०८	दादू वाणी आदि गुटका		१८वीं	४१०	विभिन्न संतोंके ४४४० पदों का संग्रह
७६१	६६२९			१७८७	२६८	
७६२	६६१७(२)			१८११	१०६	लि क रामदास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६३	११४८	दादूजी का सबद		१८००	७८	प्रायस सोजत
७६४	११५४(१)	„		१९वीं	६२	
७६५	१२४९	दादूजीकी साखी		१८६९	६९	लि क लक्ष्मणदास
७६६	११५०	„		१८वीं	१७	
७६७	२१०१	दान लीला		१९वीं	१था	
७६८	८८१	दानशील तपभावना संवाद	समयसुन्दर	१८वीं	४	स १६६२में सांगानेरमें रचित
७६९	९५२		„	१९वीं	४	
७७०	९९५		„	१७वीं	६	
७७१	१८१९(७)		„	१८२९	३९-४०	
७७२	२०४२(२)			१७८६	६-१२	
७७३	२०८६	„		१७०५	६	
७७४	२१७४(११)			१९वीं	१९-४२	
७७५	३२२६	„	„	१८४१	५	कृष्णगढ़में लिखित
७७६	३२०१		„	२ वीं	१८	
७७७	३५७३(१४)		„	१८१०	१३७-१३९	
७७८	३५०५(१६)	„	„	२ वीं	१७३-१८१	
७७९	३८६१		„	१८वीं	४	
७८०	३११७	„	„	१९वीं	४	
७८१	५४३६(६)	„	„		४४ वां	
७८२	५४३६(११)	„	यथार्थ भारमल		४६-५६	
७८३	६८४५				५५	

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७८४	५११७	दानादि संवाद	समयसुन्दर	१६६२	५	
७८५	५४१८(१७)	दानाधिकार	,,	१६वीं	१२४–१३७	
७८६	११३४(१०)	दामनक चौपाई	दयाशील	१६७६	१–६	•
७८७	३१७६	,,	वारिसुन्दर	१८३०	६	
७८८	३२९४	दिलकुमारी रो वर्णन		१७वीं	४	
७८९	२८६१(१२०)	दिनमानकुलक	हीरकलश		१७५–१७६	
७९०	७७२०(१४)	दिल्ली पातसाहीरी विगत		१८वीं	१२–१८	
७९१	४०१७	दीवाणोतरा सालावलोप	जिनसूर	१९वीं	२५	
७९२	१५५५(३)	दीपक बत्तीसी	केसोदास		१४ वीं	
७९३	२१६१	दुखोली चांवरी भजन	अर्जुनचंद	१९१४	५	
७९४	३५०३(१२)	दूहा	केसरसिंह बीतावत	१९वीं	८१ वीं	
७९५	४८६९(१८)		राम कवि		९६ वीं	
७९६	७७२१(११)	दूहो जसवंतसिंहजी रो	जसवंतसिंह	१९११	२०० वीं	
७९७	६०१५	देवकीरी चौपाई		१९वीं	६	
७९८	१२७२	देवकीनंद छत्तीसी		१८३१	२४	
७९९	४४६२(७६)	देवीपाठ		१८वीं	१२१ वीं	
८००	११९२(१)	देवी स्तुति		१९वीं	१	
८०१	२३१८	देवीजीरी स्तुति		१९२०	१४	
८०२	१५५७(२६)	देसतरी छंद	तमवार कवि	१९वीं	१५०–१५९	
८०३	७३७३	देवमा शतक		१७वीं	१६	
८०४	४८६६	दोपकेसरी		१८वीं	१	लि. क. मानसिंह

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८०५	११२	दोवावली		१८९५	३	
८०६	१७८५			१८वीं	६	
८०७	१५५४(२६)	,,		१६वीं	२७ वाँ	
८०८	४६१४(२)	दोहाशतक	रूपचंद	१८०१	१६९–१९५	
८०९	११२३(३)	धन्नाचरित्र रास	मतिशेखर	१७वीं	२२–३०	सं० १५१४में रचित
८१०	११२४(३)	,,		१६७५	१७–३६	
८११	१२७३(१५)			१६वीं	४२–४५	
८१२	२०३४	धन्ना रास	मायारत्न		३६	
८१३	१५७३(२१)	धन्ना संधि	कल्याणतिलक	,,	६२–६७	जैसलमेरमें रचना
८१४	१५५०(१२)	धन्ना सज्झाय			८८ वाँ	
८१५	११८१	धन्य विलास	कल्याण	१७वीं	४१	सं० १६८५में रचित
८१६	४६१५(१३)	धमाल		१८८७	१८४–१८९	
८१७	६३६२(२१)	धमाल बसंत		१८वीं	१०७ वाँ	
८१८	२१८१	धर्मदत्त धनवंतीरी चौपाई	कुशलसूर्य	१८८२	४५	
८१९	२४१८(१५)	धर्मदत्तोली		१६वीं	११६–१२१	
८२०	८७०		धर्मसी	१८१५	७	
८२१	८८२	,,		१८८२	४	
८२२	११५०(६)	,,		१६वीं	७५–७६	
८२३	७७३३(१५)	धर्मबावनी		१८३७	६०–६६	अपूर्ण
८२४	७३६६	धर्मबुद्धि चौपाई	लालचंद	१७६०	११	
८२५	४०६६	पापबुद्धि चौपई	,,	१८९५	२५	सं० १७४२में रचना

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८२६	६५०(१)	धर्मबुद्धि पापबुद्धिरी कथा		१८वीं	४–६	
८२७	१५५५(२१)	धर्मनिय बावनी	धर्मवर्धन	१९वीं	१४६–१४९	
८२८	५२२१	धर्मोपदेश			११	प्रथम पत्र अप्राप्त
८२९	१२४६(१४)	धवलतीर्थ गीत आदि			७५–७७	
८३०	१८८२(११६)	ध्रुव चरित्र	परमानंद		७२–७५	
८३१	२१६ (१०)	ध्रू चरित्र	सुदास (?)	१८४७	१७–३६	
८३२	४८०८	नाचना नवल		१९वीं	६	
८३३	५४१६(१२)	नरकरी चोढालियो	सुखसागर	१८५१	१	
८३४	८७७	नरसी मामेरो	प्रेमानंद	१८६१	१५	
८३५	६६५४(२)	नरसी माहेरो		१८८८	१५–१६	१८वाँ पत्र अप्राप्त
८३६	५१ २(१)	"	बालमा	१८८५	८७–९१	
८३७	६५२	नलदवदंती चौपई	समयसुन्दर	१७०४	२८	सं १६७३में रचना मा[illegible] मध्ये
८३८	११२३(१५)			१७वीं	८९–९४	
८३९	१८८६		"	१७०६	७२	
८४०	१६३१		मेघराज	१६८६	२७	
८४१	४०७०	"	समयसुन्दर	१८१९	२५	
८४२	१८८०(१)	नल राजाकी बात		१९वीं	१–९५	
८४३	२ ५६	नलायनोद्धार	नयसुन्दर	१६८५	६७	
८४४	१५११(२)	नव व्याख्यान (नवतत्त्व)		१९वीं	१–११	
८४५	६११	नवकार बालावबोध		१७वीं	४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८४६	६६७	नवकार बालावबोध		१८वीं	११	
८४७	२११२	"			१०	
८४८	१४६६			१७वीं	९	
८४९	६६१३	नवकार मंत्र वर्णन		१६वीं	११५	
८५०	११७५(१६)	नवकार वाली स्तवन	राजसोम	९ वीं	१६१–१६५	
८५१	७६६७	वालीनी सज्झाय	लब्धिविजय		१	
८५२	३३३४(१५)	नवकार सज्झाय		१९वीं	२१ वां	
८५३	३३१९	नवग्रह छंद	शंकर		५	
८५४	६७	नवतत्त्व बालावबोध		१७वीं	१७	
८५५	२११९	विचार		१९ २	६९	
८५६	३२६३	संग्रह बालावबोध		१८७५	६८	
८५७	२८६३(२५)	नवनिधान कुमक चौपई	हीरकलश	१७वीं	५६ ६०	
८५८	६४१२	नवपद पूजा		१८८५	१४	
८५९	११७५(२६)	स्तवन	जिनलाभ	२०वीं	१ ६–११३	
८६०	२०४९	नवपद सज्झाय	जिनहर्ष	१९वीं	५	
८६१	२०६०			१७वीं	४५	
८६२	३३६६(१)	नवरत्न नव आख्यान		१६८७	४–१०	
८६३	३३६६(३)	नवरस काव्य	नारायणदास मडवी	१७वीं	१८–२६	
८६४	२६५५	नवार्ण पद्धति		१८८७	१८	
८६५	५४६१	नसीहतनामा और बीबीदास के कवित्त		१९वीं	स्फुट पत्र	
८६६	१६८७	नाड़ज्ञान विचार		१७वीं	६	

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८२६	६१०(१)	धर्मबुद्धि पापबुद्धि कथा		१८वीं	५–६	
८२७	११११(२१)	धर्मसिल बावनी	धर्मवर्धन	१९वीं	१४६–१४६	
८२८	६१२१	धर्मोपदेश			११	प्रथम पत्र अप्राप्त
८२९	१२४६(१४)	धरतीर्थ गीत आदि			७५–७७	
८३०	१८८२(११६)	ध्रुव चरित्र	परमानंद		७९–७५	
८३१	२१६ (१०)	ध्रू चरित्र	गुपाल (?)	१८४०	१७–४६	
८३२	४८०८	नामला वचन		१९वीं	६	
८३३	५४१६(१२)	नरवरो चाइलियो	गुणसागर	१८२१	१	
८३४	८७७	नरसी मायरो	प्रेमानंद	१८६१	१५	
८३५	६२५४(२)	नरसी माहेरो		१८८८	६५–६६	६८वां पत्र अप्राप्त
८३६	५२ २(१)		बसन्त	१८८५	८७–९१	
८३७	६५२	नलदमयंती चोपई	समयसुन्दर	१७०४	२८	सं. १६७३में रचना मालपुरा मध्ये
८३८	११२१(२५)	"		१७वीं	८९–९४	
८३९	१८८९	"	"	१७०९	७२	
८४०	१६११	"	मेघराज	१६८६	२७	
८४१	४०७०	"	समयसुन्दर	१७१९	२५	
८४२	१८८०(१)	नल राजाकी बात		१९वीं	१–२५	
८४३	६०२६	नलायनोद्धार	नयसुन्दर	१६८५	६७	
८४४	१२६६(२)	नव वाख्यान (नवरत्न)		१९वीं	१–११	
८४५	६११	नवकार बालावबोध		१७वीं	४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
८४६	६६७	नवकार बालावबोध		१८वीं	११	
८४७	९११२				१०	
८४८	३४३६			१७वीं	२	
८४९	६६१३	नवकार मंत्र वर्णन		१९वीं	१३५	
८५०	३५७५(१६)	नवकार वाली स्तवन	रामलोभ	२०वीं	१६१–१६५	
८५१	७६६७	वालीमी सज्झाय	लब्धिविजय		१	
८५२	३५६४(१६)	नवकार सज्झाय		१९वीं	२६ वां	
८५३	३५१६	नवग्रह छंद	संकर		५	
८५४	६७	नवतत्त्व बालावबोध		१७वीं	१७	
८५५	२११६	विचार		१९ २	१६	
८५६	३९६३	संग्रह बालावबोध		१८७५	६८	
८५७	२८६३(२५)	नवनिधान कुमक चोप ई	हीरकलश	१७वीं	५६ ६०	
८५८	६४१२	नवपद पूजा		१८८६	१४	
८५९	३५७५(२६)	स्तवन	जिनलाभ	२०वीं	१ ६–११३	
८६	२०४६	नवकार सज्झाय	जिनहर्ष	१९वीं	५	
८६१	२०६			१७वीं	४५	
८६२	३५६६(१)	नवरत्न नव आख्यान		१६८७	४–१०	
८६३	३५६६(३)	नवरस काव्य	नारायणदास मंत्री	१७वीं	१८–२६	
८६४	२६६५	नवार्ण पद्धति		१८८७	१८	
८६५	४४६१	नसीहतनामा और बेनीराम के कवित्त		१९वीं	स्फुट पत्र	
८६६	१६८७	नष्टजन्म विचार		१७वीं	६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८६७	११११(६)	नवग्रहपूजाविधी		१७वीं	३३-४०	
८६८	१०७४			१९वीं	१	
८६९	२१७७(४)	नवरत्नमाल चौपाई		१८०७	१९-२१	चौबारी ग्राममें लिखित
८७०	११११(१६)	नवरत्नमाल		"	१२१-१२६	
८७१	११७१(११)	"		"	८२-८६	
८७२	१६११	"		१९वीं	४	
८७३	४२२१(४)	"		१९वीं	७-९	
८७४	७००१	" चौपाई	सांईदास	१८२४	६	
८७५	९११६	" छंद (पद्युत्तिसहती)		१८२२	४	
८७६	८१८	"		१७७६	७	
८७७	६२८			१९वीं	५	
८७८	६१६०			१८वीं	४	
८७९	४६२४(१)	नागदमन कथा		१७८७	१२-१८	
८८०	१ १६	नाममाला चौपाई		१८वीं	६	
८८१	१६५ (११)			१९वीं	८४-८७	
८८२	१८१	नाग मंत्र		१७वीं	४	
८८३	७४२१(२२)	नागमंतर		१८वीं	२३ वां	सर्व विष उतारनेके मंत्र हैं
८८४	१८४२	नाडी परीक्षा		१९वीं	२	
८८५	२०६६	नारीसा मकौल रास	रामसुंदर	१७४१	५	
८८६	४११९	नाथियाका सोरठा		१९वीं	११	
८८७	२१७५(५)	नासिकेतजी वारता	सांमलदास	१८ ९	१७२-१९९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८८८	६२१७(३)	नामेश्वरजीका सवद		१८११	१८७–२०१	लि.क. रामलाल नारायणा मध्ये
८८९	४८११	नामप्रताप	रामचरण	१९वीं	१२	
८९०	७८११(१)	नारायण लीला	माधोदास	१८११		
८९१	७४६२(५)	नासिका विचार		१८वीं	१ ७ वां	
८९२	२१४१	नासकेतु आख्यान	अभयराज	१८६४	१५	
८९३	१५५५(७)	नासकेत कथा बालावबोध		१८२७	१–९	
८९४	१५७३(४१)			१ वीं	१०२–१०६	
८९५	३५६१(२)	नासकेतरजेतरजीरी कथा		१७८६	६४–७३	
८९६	६७४६(१)	नासकेतपुराण कथा	नंददास	१९वीं	८८	
८९७	४२६३	,, भाषा	,,	१८१७	४४	
८९८	६११०			१९वीं	५१	
८९९	३५७५(४०)	निमोह विचार स्तवन	क्षमाप्रमोद	२०वीं	१५५–१६६	
९००	३३६४	निर्मपसिद्धांत भाषा		१९वीं	१४	
९०१	२४१८(३३)	निर्णयकाव्य			१७३–१७५	
९०२	१५५७(१०)	नीसाणी	केसोदास गाडण	१८वीं	१०२ वां	
९०३	१५४६(११)	नीसाणी कवित		१९वीं	७४–७५	
९०४	७७५२(३२)		सुरज	१८वीं	२४ वां	
९०५	३८१६(६)	नेमजीका बारहमासा	श्यामसुन्दर	१९वीं	४१–४४	
९०६	३५०८	नेमराजुल चूनड़ी	कीर्तिविजय	,,	२	
९०७	५११०	,, का सवैया			२५	
९०८	३५२०	,, बारामास	उदयरतन	१८वीं	४	

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि आवश्यक	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
९०९	७१०१	नमस्तवन [redacted] बारमास		१९वीं	१	
९१०	५७७(१)	नमराजीमती सज्भाय		१८०२	१ था	
९११	२१६८(१२)	नेमनाथजी की बीनती बारमास		१९वीं	४०-४२	
९१२	२८९३(६)	नमि चोक	हीरकलश	१७वीं	४ था	
९१३	११२३(२२)	नमिनाथ चन्द्राउल चोक	भावड मुनि		८१-८२	
९१४	१५५४(४)	" चोक	ममृत	१९वीं	९२-९४	
९१५	९८२	" चोवीस चोक	"	१८५३	८	
९१६	१६३१	धवल	मयसुन्दर	१९९१	८	
९१७	२१७०	राग	कनककीर्ति	१७वीं	१	
९१८	१८६१	" "	पुण्यरत्न	१७१५	२	
९१९	१६३६	" "		१७१६	४	
९२०	९७८	" सिलोको	वीरविजय	१८९४	७	
९२१	९४०	नेमिजिन फाग	रत्नसागर	१९वीं	८	वीसलनगरमें लिखित
९२२	१६१५	नेमिनाथ फाग	राजपूर्ण	१८वीं	९	
९२३	२१७४(५)	नमिनाथ बारमास	रूपचंद	१९वीं	२९-२७	
९२४	२१७४(६)		हेमविजय		२७-२८	
९२५	२१७४(७)		रविचंद		२८ वां	
९२६	११ ३		जिनयविजय	१८वीं	२	
९२७	२१६८(१७)	नेमिनाथ रासक	ममरूप	१९वीं	५२-५४	
९२८	४६१४(३४)	पिक्नाथजी सारी		१७७०	२५५-२५६	सं १६७०में रचना
९२९	१८६३(२९)	नेमिनाथ हिंडोलणा	हीरकलश	१६५२	२११-२१४	सं १६२५में रचना

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६३०	२०१७	नेमीश्वर स्नेह बेली	पद्मविजय	१८७७	७	
६३१	११६१	राणमाला स्तवन	नेमविजय	१८वीं	३	
६३२	११२२	नंदहार्मिलिका सार्थ			५	
६३३	११३०	नंदबत्तीसी चौपाई	सिंघकुशल	१०१६	३	
६३४	२ ६४	नंदिषेण चौपाई	ज्ञानसागर	१८वीं	१२	
६३५	१३७५(६६)	नंदीश्वर स्तवन		२०वीं	२६१–२६२	
६३६	१३७५(१०)	नंदिसूत्र सज्झाय	शिवचंद		२६२–२६३	
६३७	६७२	पृथ्वीचंद कुमार रास	गुणसागर	१६७०	३	
६३८	४६०३	पृथ्वीराज रासो	चंदकवि	१६वीं	गुटका	अपूर्ण प्रति
६३९	७१२८			१७४७–१७५७	६६	
६४	७१५०		"	१८वीं		
६४१	७१५४		"	१६४१	७६	लि क. चिरंजी
६४२	७१५८		"	२०वीं	गुटका	
६४३	७१६६		"		"	
६४४	१३६२(१५)	पवनकाव्य		२०वीं	११६–११७	१ २ पत्र अप्राप्त
६४५	१३४६(१२)	पंचप्रबोध		१६वीं	७४ वाँ	सं १६२३में रचित
६४६	२८३३	पंचतंत्र भाषि वार्ताऐं			१३६	
६४७	१४१८(२८)	पंचमतिथि बेली	रूपकीर्ति	"	१६५–१६७	
६४८	२८६३(३१)	पंचतीर्थी नमस्कार		१७वीं	३६ वाँ	
६४९	२८६३(४०)	"			८५ वाँ	
६५०	२८६३(४२)	" स्तुति	हीरकलश		८६ वाँ	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
९०९	७१ १	नमराजुल [illegible] बारमास		१६वीं	१	
९१०	२०७७(२)	नमराजीम्ती सज्झाय		१८०२	१ ला	
९११	११६८(१२)	नेमनाथजी की चौमासी बारमास		१६वीं	४०—४२	
९१२	२८६३(६)	नमि गीत	हीरकलश	१७वीं	४ था	
९१३	११२३(२२)	नेमिनाथ बंधाय गीत	भावक मुनि		८१—८२	
९१४	३३५४(४)	गीत	धमूल	१६वीं	६२—६४	
९१५	६८२	„ चौवीस चौक	„	१८६१	८	
९१६	३६११	धमाल	नयसुन्दर	१६६१	९	
९१७	२१७०	राग	कनककीर्ति	१७वीं	१०	
९१८	३८६३	„	पुण्यरत्न	१७१५	२	
९१९	३६१६	„ „		१७१६	४	
९२०	६७८	„ सिलोको	वीरविजय	१८६४	७	
९२१	६४०	नेमिजिन स्तवन	रत्नसागर	१६वीं	८	बीसस्तवनमें लिखित
९२२	३६३५	नमिनाथ फाग	राजहर्ष	१८वीं	२	
९२३	३३७४(५)	नमिनाथ बारमास	रूपचंद	१६वीं	२६—२७	
९२४	३३७४(६)		देवविजय		२७—२८	
९२५	३३७४(७)		कवियण		१८ वाँ	
९२६	३२०३		विनयविजय	१८वीं	२	
९२७	२१६८(१७)	नमिनाथ स्तवन	नयरूप	१६वीं	५२—५४	
९२८	४६१४(३४)	नमिनाथनो छायो		१८७७	२५५—२५६	सं १६७०में रचना
९२९	२८६३(२६)	नेमिनाथ हींडोलणा	हीरकलश	१६२६	११३—११४	सं १६२६में रचना

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६३०	२०१७	नेमीश्वर स्नेह वेली	उत्तमविजय	१८७७	७	
६३१	११६३	„ राजमाला स्तवन	मेघविजय	१८वीं	३	
६३२	११२६	नंदहार्थिका सार्थ			२	
६३३	११३०	नंदवत्तीसी चोपाई	सिंहकुशल	१७११	५	
६३४	२०६४	नंदिषेण चोपाई	ज्ञानसागर	१८वीं	१२	
६३५	१२७५(६६)	नंदीश्वर स्तवन		१९वीं	२६१-२६२	
६३६	१२७५(६०)	नंदीसूत्र सज्झाय	जिनचंद		२६२-२६३	
६३७	६७२	पृथ्वीचंद कुमार रास	गुणसागर	१६७७	३	
६३८	४६ १	पृथ्वीराज रासो	चंदकवि	१६वीं	गुटका	जीर्ण प्रति
६३९	७१२८	„		१७४७— १७६७	६६	
६४०	७१५	„	„	१८वीं	„	
६४१	७१६४	„		१६४१	७६	लि स्थ. चिरंजी
६४२	७१६८	„	„	२०वीं	गुटका	
६४३	७१६६				„	
६४४	११६२(१५)	पद्ममाला		२०वीं	१३५-१३७	१ २ पत्र अप्राप्त
६४५	१२४६(१२)	पंचप्रबोध		१६वीं	७४ वाँ	सं १६२३में रचित
६४६	२८३३	पंचतंत्र आदि बातांहि			१३६	
६४७	१४१७(२८)	पंचपतिकी वेली	कुशलकीर्ति		१३२-१३७	
६४८	२८६३(३१)	पंचतीर्थी नमस्कार		१७वीं	६५ वाँ	
६४९	२८६३(४०)	„			८५ वाँ	
६५०	२८६३(४२)	स्तुति	हीरकलश	„	८६ वाँ	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
६५१	२८६१(४१)	पंचपरमेष्ठि नमस्कार	हीरकलश	१७वीं	५३ वाँ	
६५२	१५७५(११)	पंचनाम सज्झाय	जिनचंद	१०वीं	२६३—२६४	
६५३	२०११	पंचमी कथाभाष		१७८०	७	
६५४	१८६१	पचमेरु पूजा		१६वीं	४	
६५५	२०५४	पंचलघु तीर्थंकरा स्तवन		१६१८	५	
६५६	१२२४(१)	पंचाख्यान भाषाबोध		१८८५	१–५४	
६५७	११२२(११)	पंचांगुली देवी छंद		१६वीं	८ वाँ	
६५८	१५७५(४४)	पंचेन्द्रिय चोपाई		१८वीं	२११—२२८	
६५९	१६१६	"			४	
६६०	५२६५	पंचेन्द्रिय चोपाई		१८७२	५	
६६१	१६४०	पंचेन्द्रिय वेली	मेघ (?)	१७वीं	१	
६६२	४२१४(२८)		ठाकुरसी	१८७७	१११—११५	
६६३	१८८२(११८)	पद	मीरां	१६वीं	१७ वाँ	
६६४	१८८२(१ १)	पद	"	"	११२ वाँ	
६६५	१८६०(११)		"	"	५३—५४	
६६६	१८६०(७४)	"		"	६१—६२	
६६७	१८६०(८२)			"	६८ वाँ	
६६८	१८६०(८७)			"	७०—७१	
६६९	१८६ (८८)		नरसी		७१ वाँ	
६७०	१८६ (८६)				"	
६७१	१८६०(६)		मीरां	"	७१—७२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७२	१८९०(६६)	पद	मीरां	१९वीं	७६ वां	
१७३	१८९०(१ २)	"		"	८९—८३	
१७४	१८९०(११६)			"	८६—९०	
१७५	१८८२(६६)		नरस	"	४८ वां	
१७६	१८८२(११०)		कबीर		६१ वां	
१७७	१८८२(११४)	"	मीरां		६८ वां	
१७८	१८८२(११५)		मुरलीदास		९८—९९	
१७९	१८९०(५२)	"	नरसी	"	४८ वां	
१८०	१८९०(१४४)	"	मीरां		१२६ वां	
१८१	१८९०(१४७)	"	"	"	१२७ वां	
१८२	१८९०(१५०)	"	नरसी		१४३ वां	
१८३	१८९०(१६८)		"	"	१२१ वां	
१८४	१८९०(२०४)		मीरां	"	१५८—१५९	
१८५	१८९ (२०६)	,		"	१५९—१६०	
१८६	१८९०(२२१)	"	"		१७०—१७१	
१८७	१८९०(२२७)	"	मीरां		१७३ वां	
१८८	१५७५(६३)	"	जिनचंद्र	२०वीं	२६५—२६६	
१८९	४६१४(१०)	"	सकलकीर्ति	१८७१	२०७ वां	
१९०	४६१४(३१)		"	१८७७	२४८—२४९	
१९१	१८८२(१२७)	, हव	नरसी	१९वीं	६६—६७	
१९२	१८९०(६५)	"	"	"	७५—७६	

ाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
०३५	२११८(१५)	प्रहेलिका		१९वीं	४६–५०	
०३६	२८६१(१७)		हीरकलश	१७वीं	४ था	
०३७	५१२९	प्रश्नप्रकुलावली		"	१९	
०३८	१८५४	प्राकृतप्रबंधसंग्रह	मोहनविजय	१८१८	११९	लि. श्र. [illegible]
०३९	१८७२	प्रास्ताविक पद्य		१९वीं	१	
०४०	११९२(१०)	"			२८ वां	
०४१	२८६१(६८)			१७वीं	११२ वां	
०४२	२८६१(१००)	"		"	११३ वां	
०४३	३६७३			१८वीं	१	
४४	२८६१(६)	"		१७वीं	५ वां	
०४५	१०२६	"			७	
४६	११५०(८)	कुंडलिया	धर्मवर्धन	१९वीं	७०–७४	
४७	२८१२(५)	दूहा		१७०४	८८–८९	
४८	११९२(१७)	"		१९ वीं	११९–१४५	
०४९	१५७३(४०)	"		१९वीं	१०१ वां	
१०५०	१५७१(५०)	"			१२८ वां	
१०५१	१५५ (१)	प्रास्ताविक बावनी	धर्मसी		७९–८१	
१ ५२	११२२(२४)	" सुभाषित			१७–२१	
१०५३	४७९२	प्रास्ताविक दूहा		१८वीं	१	
१०५४	४८०९	प्रास्ताविक दूहा		१९वीं	१	
१ ५५	४८१५	"		१८६९	१	लि स्थल. रामपुर

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०५६	५१६५	प्रास्ताविक दूहा		१८वीं	६	
१०५७	४४५२	आदि			११२-११४	
१०५८	५१५५	प्रास्ताविक पद्य		१६वीं	८	
१०५९	६६८	प्रियमेलक चोपाई	,,	१७वीं	४	
१०६०	६७४			१७५६	६	
१ ६१	१७१२	,,	,,	१७१४	७	
१ ६२	२०६७(२)			१७७२	१०-१७	
१ ६३	२२०१	,,	,,	१६६०	७	
१०६४	४०६३	प्रियमेलक चोपई	समयसुन्दर	१८वीं	७	
१०६५	४८२१		,,	१७वीं	६	
१०६६	६८७५			१६वीं	८	लि क लक्ष्मीकीर्तिगणि
१०६७	१८६६(१)	प्रेमज्योतिष	मतिमोदय	१६१८	१-१६	
१०६८	४०७३	पलकदरियावरी बात		,,	१६	लि क पाबूजी
१०६९	४०७४	पाण्डवचरित्र चोपई	लाभवर्द्धन	१७८५	५६	सं १७१७में रचित
१०७०	७७२१	पांडवविजय	मधूव्यास	१६२६	१७७	लि क सीताराम
१०७१	१८१६(११)	पांडवोंकी सज्झाय	कान्ह सेवक	१८११	१५-१७	
१०७२	२५६६	पातसाह नामोपरि अनुमानली		१६०८	२	
१०७३	११५७(६)	,, पातसाही भोगवी तिहारी विगत		१७२१	७५-७७	
१०७४	११५०(१)	पाबूजीरी नीसाणी		१६वीं	१-६	
१०७५	११६०(४)	पाबूजी दोसोतरा दूहा		१८वीं	१-५	*
१०७६	४६१४(५५)	पार्श्वनाथ आदित्यवार कथा		१८७७	१०२-१११	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२०	७७६२(६८)	मधुलीवास्य		१८वीं	१६२ वीं	
१२०१	६८००			१६११	१४	लि क. समबाली
१२०२	२०३१(१)	समरचीता	जिनविजय	१७१४	१–२	
१२ ३	१२०६	,, ,,		१७१८	६	
१२ ४	२११८(११)	समर की सज्झाय		१८४८	४२–४४	
१२ ५	७६१	मरणविकार		१७६३	३३	लि क विक्रमश्री
१२०६	१५४६(७)	भवानीजीरो छन्द	रुघो	१९वीं	१२–१३	
१२०७	२१२६(२)	भवानीदासजीरो गीत आदि	लाधूराम सेवक		१–४	
१२०८	२५३१	भवानीष्टक		१८६६	६	
१२०९	२२०६			१८७७	३	
१२१०	१२६	भागवतदशमस्कंध भाषा		१८२७	७५	
१२११	२८६१(१०)	भावनागीत	हीरकलश	१९वीं	७० वीं	
१२१२	४७६६(२)	भावालीलावती	लालचन्द	१७०५	१–१५	बीकानेरके महाराजा रायसिंह के प्रमात्य कोठारी, नैनसीके पुत्र बैतसीकी प्रार्थना पर उनके पुत्र द्वारा प्रणीत
१२१३	७४१	भुवनहारविचार		१९वीं	२०	
१२१४	७०९९(१)	भैरव आदिकी ओलीविचार		१८वीं	१०७–११४	
१२१५	१९६६	भौमशास्त्र (भूगोल)		१८८७	१६	
१२१६	१७०२	भोजपुराण		१७०२	१०	लि क पीमूदास
१२१७	१४७०	भोजचरित्रचौपाई		१७४०	३५	पत्र १४ १५,१६ अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१२१८	११३१(४)	मंगलकलशचरित्र	सर्वानंदसूरि	१७वीं	३०-३४	
१२१९	१२१६	,, चौपाई	मंगलधर्म		१९	सं० १५२५में रचित
१२२०	१५५४(७)	,, ,,	लक्ष्मीहर्ष	१८८०	१-१२	
१२२१	१६०४	,,	लक्ष्मीकीर्ति	१८११	१०	
१२२२	१५११	फाग	कनकसोम	१७वीं	७	
१२२३	२०२६	,, रास	दीप्तिविजय	१८७४	११	
१२२४	२०८१	,,	,,	१८११	४६	
१२२५	२८६१(११६)	मगध आदि देशके नगर तथा ग्रामों की संख्या		१७वीं	११८ वां	
१२२६	१४८८	मत्स्योदरकुमाररास	पुण्यकीर्ति		१५	
१२२७	४८२५	मत्स्योदर चौपाई	शांतिहर्ष	१८४८	२१	लि.क. [illegible]
१२२८	४७६८	मदनयशी	मुनिसागरचन्द्र पार्श्वचंद्रीय	१८वीं	१०	
१२२९	४७५२(१)	मदन छंद		,,	२	अपूर्ण
१२३०	२१४३(१)	मदनसतकरीशती	दाम ?	१८१०	१-४	
१२३१	११४२(१)	मधुमालतीचौपाई	चतुर्भुज दास	१८वीं	१०२-२११	
१२३२	२३६०(११)	,,		१९वीं	४७-५७	अपूर्ण
१२३३	१५७०(४)	,,	,,	१८२८	१-११	
१२३४	१५५५(१२)	,,	,,	१८२९	३८-८६	
१२३५	१५५६(१)			१८४१	१-४७	
१२३६	५३५८(१)	,,	,,	१९वीं	१-३१	
१२३७	१८६१	,,	,,	१८५९	१२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२७७	१०८६	माणिभद्र छन्द	सांतिसूरि	१८७०	४	
१२७८	१ ६१		गुलाल	१६वीं	१	
१२७९	२०१७	"	उदयविजय		५	
१२८०	३३७०(६)	माताजीरो छन्द	नरसिंह चारण	"	८७ वाँ	
१२८१	३३७०(१०)	"	भवान भोजग		८८–८६	
१२८२	३३७०(१२)	"	सारंग कवि	१६वीं	६१ वाँ	
१२८३	३३७०(१३)		माधो दूरसोती	"		
१२८४	३३५१(१२)	माताजीरो गीत		१८ ८	१६ वाँ	लि. स्थ. [illegible]
१२८५	३३५२(१०)	री वारता		१८वीं	१३ वाँ	
१२८६	३३५१(११)	" रो छन्द	दीवाणी	१८ ७	१४–१६	
१२८७	३३५१(५५)	"	कवि सारंग	१८वीं	१२६ वाँ	
१२८८	७०२१(११)	" "	[illegible]	१६११	१७७–१७६	लि. स्थ. [illegible]
१२८९	६०४	[illegible]	कुशललाभ	१६४१	१६	* [illegible]
११६	६१५	"	"	१६वीं	२५	
१२९१	६१६	"	"	१८६६	२०	
१२९२	२ ६१	"	"	१८वीं	२०	
१२९३	३३३२		"	१८२४	१२	
१२९४	२११०(६)	"		१६वीं	१४–१७	
१२९५	३५३०	"	"	१७३	१४	
१२९६	३५५५(१)		"	१८६१	१–११	
१२९७	३५६१(१)	"	"	१७५५	पुटका	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१२९८	१८६२	माधवानल कामकंदला चोपाई	कुशललाभ	१७१९	१४	
१२९९	१६४५	"	"	१६३८	१०	
१३००	४६११(४)		"	१८१०	६	
१३०१	४६२४(१६)	"		१७६२	१-२२	
१३०२	६७१	मानतुंगमानवती चोपाई	अभयसोम	१७७८	११	सं १७२७में रचित, मिरजापुर में लिखित
१३०३	१६४७	"		१७९५	१०	
१३०४	१६७६	"	"	१८३३	२१	
१३०५	१६७५		मुखरसूर	१९वीं	१४	
१३०६	५११८	"	मोहनविजय	१८वीं	२१	
१३०७	१००५	" रास		१८११	२६	
१३०८	२०१७	"		१७६४	२५	
१३०९	२०४६	"	"	१७८०	३३	
१३१०	१२४१		"	१९वीं	४१	
१३११	१२६१			१८४५	१५	
१३१२	३५५४(१०)	"	"	१८८३	११-२५	
१३१३	१६४६	"		१७०९	२२	लि स्था० रामनगर
१३१४	६११८	"	"	१८०९	४४	सं० १७१०में रचित
१३१५	६११९(१)	" , सचित्र	"	१८७८	४३	चित्र सं० ८८
१३१६	६११७			१९१४	३६	
१३१७	६११५	" "		१८९४	५०	लि क मानमचन्द

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
	११२१४	मानतुंगमानवती चोपाई	मोहनविजय	१८७९	७६	
	७११६	"	प्रमयसोम	१८२८	११	
	७२१८	"	मोहनविजय	१८६२	८४	
११२१	७२२७	"	"	१७६७	१५	
११२२	१२२२	मामेरो	प्रेमानन्द	१८७४	१६	
११२३	२८६१(४७)	मारूदेशनिरा गीत		१९वीं	८८ वाँ	
११२४	२८६२(८०)	मार्तण्ड कथा ?	?	१८वीं	१११ वाँ	
११२५	११७७	मीरां बाईरी बात		१६वीं	२	
११२६	१४६८	मीरां कबीर आदिके अनेक पद-संग्रह		१८६०	१०	
११२७	२८६१(२६)	मुखवस्त्रिका विचार चोपाई	हीरकलश	१७वीं	१४-१५	
११२८	१४८२	मुंज संबंध		१६वीं	२	
११२९	२ २१	मुनिपतिचरित्र चोपाई	धर्ममन्दिर	१८४१	६	
१११	२११६			१८१८	११	
११३१	२८६१(२४)		हीरकलश	१६१८	११-४८	
११३२	६२२६	"		१६वीं	२१	
११३३	६३२५	"		१७६६	११	
११३४	१४८१	चोपाई		१६६६	१८	सं० १६६५ में रचित
११३५	१४६४			१७वीं	१२	
११३६	१६७८	" "	धर्ममन्दिर	१८८६	२४	
११३७	११७५(१७)	मुनिमालिका	चारित्र संघ	१९ वीं	१८१-१८६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४१०	८८६	रघुनाथरूपक	मंछाराम सेवग	१९वीं	७५	
१४११	१८११	रतिप्रमोद	जनसाघ	१८६७	१२	सं० १८२२में जैसलमेरमें रचित
१४१२	६०१८	रतनकुमाररास	लहुसुन्दर	१८वीं	११	
१४१३	११२१(२४)	रतनचूड़कुमार चउपई	सेवक	१७वीं	८४–८६	
१४१४	११२४(१)	"		१९७५	१–२२	
१४१५	११२४(८)	"	कनकनिधान	१८७६	१–१२	
१४१६	११८२		"	१८४१	२४	
१४१७	११६२	"	"	१९वीं	१८	
१४१८	४ ८७			१८१४	१२	
१४१९	२१८०	रतनपाल [illegible]	रघुपति	१८२४	१४	
१४२०	२२१०	"	"	१८६४	११	
१४२१	१८६४		कनकसुन्दर	१८२१	११	
१४२२	१८६६	"	मोहनविजय	१८१२	६४	
१४२३	१८६६	"	कुशलनिधान	१८७१	२७	
१४२४	६१६	" रास	सुरविजय	१७७६	६२	लि स्वा. पीलका
१४२५	६८८	"	"	१८३०	९४	सं १७१२में रचित
१४२६	४८१६	"	मोहनविजय	१८६७	५४	लि क. हितसौभाग्य
१४२७	६ ५७	" "	सुरविजय	१९००	७६	
१४२८	६६११		सेवक सूर	१८२७	१२	प्रथम [illegible] अप्राप्त, सं [illegible] रचित
१४२९	४८१२	रतनमहेसदासोतरी वचनिका	खिड़ियो जग्गो	१७४१	७	लि क प्रमोदमुनि

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४१०	४६२	रतन रासो	पिडियो चयो [?]	१८७६	१४	
१४११	२११०		"	१८९१	१८	लि.स्था मेड़ता
१४१२	२११०(४)	"	"	१८४१	१-११	पत्र सं० ५ ६ अप्राप्त
१४१३	११४८(३)	"		१८वीं	२१-२८	
१४१४	११४९(२)	"		१९वीं	२४-३१	
१४१५	११६०(१)	"	"	१८वीं	१-३१	
१४१६	१२०३(२१)		'	१८०१	१२६-१३५	
१४१७	११२१(५)	रत्नसार रास	सहजकुमार	१७वीं	३६-४५	
१४१८	१६८३	"	"	१७वीं	१५	सं० १६८१ में रचित
१४१९	४६१४(१०)	रत्नत्रय		१८७७	२४८ वाँ	
१४२०	४६११(१)	रतना हमीररी बात	कवियण ?	१८८७	४२-७५	लि.स्था प्रतुवान [?]
१४२१	१७८०	रतनपन्थ भाषा [?]		१८८२	१०	
१४२२	१७११			१८६७	१५	
१४२३	१७२२	"		१९वीं	१७	
१४२४	१७७४	रत्नसमुच्चयविचार [?]		१७०२	१	
१४२५	९०१	रत्नसमुच्चयावली [?]		१८०१	४	
१४२६	१८११	रसिकसुरतीमाल [?]	ब्रह्मानन्द [?]	१७७४	२	
१४२७	२४१८(२६)	रविकथा		१९वीं	१५४-१६६	लि.स्था रत्नसागर
१४२८	२४१८(२७)		भानुकीर्ति	"	१६७-१५२	
१४२९	८६७	रामसागर		१	५	... पेनसिया [?]
१४३०	[illegible](११)	रत्नमनोहरी [?]	प्राणदयाल [?]			

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि नामक	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४२१	४२८७(६)	राम पर्वसंग्रह		१८वीं	१७– ६	
१४२२	५१०			१९वीं	३	
१४२३	५४१८(१४)	रागरासस्तवक			१७५–१७६	
१४२४	७७१०(२१)	रागमालोपरिविरह सुभाषित		१७५५	९–११	
१४२५	२८१२(१)	राजनीत हितावली विचार		१७७४	८९–९८	•
१४२६	२०१६	राजसिंह रत्नवती पंचकथा रास	प्रभुदास	१९वीं	१९	
१४२७	२८६३(१८)	संधि	हीरकलश	१६६९	७१–८४	
१४२८	१८१२(२)	राजानराउतारो वातख्यात		१९वीं	४–१९	
१४२९	३३७३(१८)	राजा भोजरी पनरमी विद्यारी वारता	भवानीदास व्यास	"	१५६–१६६	
१४३०	९३६०(२)	राजा भोजरी बात		"	१–११	
१४३१	४६०६(२)	राजसभारंजन	रसिक ?	१७९८	१–२५	• र का १७९९
१४३२	४६१५(१७)	राजा भोजरी बातरा दूहा		१८८०	४०६–४१०	
१४३३	४६१६(२)	राजा भोज माघ पंडित नै डोकरीरी वारता		१८०५	४५–४६	लि० सीमसगणि
१४३४	७७२१(१)	राजा रतनरी वचनिका	खिड़ियो जगो	१७९५	११६–१४१	
१४३५	७७२ (२१)	राजावली			७ वीं	सं० १२ ७ से सं० १७७० तक के सीसोदिया राणाओंका वंश-परिचय
१४३६	४७८८	राणांरी वंशावली		१८वीं	१	भामधरा नरेससे अमरसिंह-पुत्र संग्रामसिंह तक
१४३७	१९८६	राजीमति ममत	जिनदास	१९वीं	२	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि आवश्यक	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४६८	११८७	रामुलपचीसी	लालचंद	१९वीं	८	
१४६९	४११४(ख)	" बारहमासी	रामुल	१८७१	१६७–१६८	सि.क. यथानिधि
१४७०	६११८(१५)	"	लालचंद	१८०६	१–६	सि.क. सकमा
१४७१	७११४	"	लालचंद	१८३८	४	
१४७२	७२४१		"	१९वीं	२	प्रथम पत्र अप्राप्त
१४७३	४१ ४	राठोड़ रतन म्हेशदासोतरी वचनिका	खिड़ियो जगो	१८०१	१७	सि.क. धर्मसुन्दर
१४७४	१२४६(६)	राठोड़ांरी वंशावली		१९वीं	१४–४३	
१४७५	४२२१(११)			१९वीं	१२६ वाँ	
१४७६	४८३४	राठोड़ मामूरखांरो छंद	माधव आसोदास	१९वीं	१	
१४७७	६२४६(७)	राधाजीकी बारहखड़ी		"	१४–१६	
१४७८	१००६	राधाविलास बारमास	प्रेमानंद	१८१०	११	
१४७९	७७४४(३)	राधाविलास		१७२८	८–१७	
१४८	११२२(१६)	राधिका कृष्णसंवाद		१९वीं	११–१३	
१४८१	४४२२(१६)	रामकिसनजीरो छंद		१८वीं	१६ वाँ	
१४८२	२६०१	रामकृष्ण चोपाई	लावण्यकीर्ति	१७११	१०	रचना सं० १६७७
१४८३	११८७	रामपुत्र रासो	माधोदास	१७७१	१७	
१४८४	११८८	"	"	१८२१	४४	
१४८५	१२४८(५)	"		१७२१	७६–१३६	
१४८६	१२४६(१)	"	"	१९वीं	१–२१	
१४८७	[illegible]	"	"	१८ ६	१–७१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि नामक	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४८८	४६२४(५)	रामपुररासो	मालदेवास	१७८८	१–१२	लि० क० जयसीमालममणि
१४८९	७०२१(२)	,,		१८२५	२१–६६	
१४९०	७०९५	,,		१८वीं	८१	
१४९१	३३३१(२)	राम चरित		१८७६	१६–१०१	
१४९२	३३४७(७)	रामचंद्रजीरो नवसरो		१९वीं	८५ वां	
१४९३	६४१७	रामचंद्र सवारी	रामनाथ		१	
१४९४	७८१०(२)	रामचरणदासजीसंग्रह	रामचरणदास	१८वीं	२१–२१०	
१४९५	१८५३	रामजसरसायन		१८९४	११४	
१४९६	३३३५(१)	रामलखणीरो ब्याह		१९वीं	१५८–१७०	
१४९७	७०७४(१)	राममंजरी	मोहिंददास	१७२८	१–२	
१४९८	३८६७	रामचकोररसायन	केसराम	१८०१	६५	• सं० १९००में रचित
१४९९	३६८८	,,	,,	१८४७	१०	
१५००	३३६७	,,	,,	१७९४	८६	
१५०१	८०२	रामरक्षा भाषा		१८९४	१	
१५०२	२३०६(२)			१८३६	६–११	
१५०३	३७४६(२)	,,	रामलखमी	१९वीं	८८–९२	
१५०४	७६०६	मंत्र		,,	१	
१५०५	३४४६	रामविनोद भाषा वचनिका	रामचंद्रमति	१९३०	१५१	पत्र १०० से १०४ तथा ११७ से ११९ अप्राप्य
१५०६	२९२०	,,		१९वीं	२६	
१५०७	११२२(१५)	रामाभैरव छंद	चेस कवि		६ वीं	
१५०८	७१४०	रामप्रसन्नपोथिमध्ये ग्यारह प्रश्न		२०वीं	७	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२०९	१४८४	राजसंवार	लक्ष्यासमय	१८वीं	२	
१२१०	११२२(२)			१९वीं	१३-१४	
१२११	७७२२(८)	राम सबलालरो गीत		१८वीं	१०५ वाँ	
१२१२	६४५२(७५)	रासबत्तक		»	१२३ वाँ	
१२१३	२२१६	रघुविचार		१९वीं	१	
१२१४	२२१५	राधीमोहन चोपाई	धर्मसमुद्र	१९७०	६	
१२१५	१४८३	»	»	१७५४	७	
१२१६	१५०३(१७)	»	»	१९वीं	२१-२७	लि. क. [illegible]
१२१७	४३२७			१७२१	७	
१२१८	४११४(४३)	» रास		१८७७	२६८-२७२	
१२१९	४११४(४१)	हरज्जस	कविमल ?		२९९ वाँ	
१२२०	४११४(४२)	»			२९७-२९८	
१२२१	९२६	रीतालू कुंवररी वारता		१८९०	७	
१२२२	१५५६(४)			१९वीं	१२०-१२१	
१२२३	१५०३(१०)	»			१०१-१०५	
१२२४	११८०			१८१०	१५	
१२२५	४९०५(१-२)	»	भरवाडो बारठ	१८७५	१-२५	लि. क. मनुपविजय
१२२६	१५०३(४५)	रीतसुरा दूहा		१९वीं	१ ६ वाँ	
१२२७	७१२२	रुक्मिणीमंगल (कृष्णजीको ब्याहलो)		»	१९-४२	अपूर्ण
१२२८	०२७५	रुक्मिणी ब्याहलो		१८६७		गुटका सं० ४८ से ५४ तकके पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि आवश्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५२९	४०७६	रुक्मिणी वेली सवालावबोध	पृथ्वीराज	१८२६	४३	लि.म. श्रीमनदास टी कुशलवीरपवित
१५३०	४ ७७	,, वेली सटीक	टी. लक्ष्मीविलास शिवनिधान	१७८६	२८	
१५३१	७११५	गजबन्ध आदि		२०वीं	गुटका	जीर्ण
१५३२	४०७८	,, ,, राजस्थानी अर्थसहित		१९वीं	२७	
१५३३	८७२	रुक्मिणीहरण		१९०४	१२	
१५३४	८७५	,,			६	
१५३५	२२१०		विजैराज	१९वीं	७	
१५३६	५२२१	रास			१५	पत्र सं० ११२ अप्राप्त
१५३७	२१६४(२)	रूपदीपक पिंगल	भवानीदास पुष्करणा	१८५८	७	र० सं० १७०१में रचित
१५३८	५८६४	रूपसेनकुमार रास सचित्र		१८वीं	१३	लि.क. साध्वी मेघश्री
१५३९	६५०(४)	रूपसेनरी कथा		,,	८–९	
१५४०	३५४१(२)	रेखिया लच्छण	रतनबाई	१८८२	२–३	
१५४१	६२३७(४)	रैदासके पद	रैदास	१९११	२०१–२०६	लि.क. रामदास
१५४२	३२७३(५६)	रोहिणी तपमहिमास्तवन	बीसार	१९वीं	१९९वां	
१५४३	३२७५(५५)			२०वीं	२६०–२६४	
१५४४	४ २७	,,	,,	१८वीं	२२	
१५४५	२६६६	लखबोधावली		१८८१	३	
१५४६	३५५५(२७)	लाला फुलाणीरी बात		१८२६	१२९–१३१	*
१५४७	३१२२(६१)	कवित्त		१९वीं	८३वां	*
१५४८	३५००	लीलावती चोपाई	हेमरतन	१७वीं	१९	सं० १७०१में पालीमें रचना
१५४९	६१११		सामवर्द्धन	१७४२	१४	पत्र १ ३ अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५५०	११७८	लीलावती चोपाई	लालचंद	१९वीं	३१	
१५५१	१५६४(२)	लीलावती भाषा	लालचंद	१८५१	११–३१	
१५५२	१७१८		,,	१८४५	११	सं० १७३६में बीकानेर में रचित
१५५३	१७२१	,,	,,	१९वीं	१५	
१५५४	६०५६	,,	,,	१७८३		
१५५५	४८३६	,, रास	जयरतन	१८००	१६	लि क बोरा
१५५६	५२८६	,, ,,	,,	१९वीं	१२	स० १७६७में रचित
१५५७	६८७	लीलावती सुमतिविलास रास	,,	१८४२	१४	
१५५८	२०५०			१८१७	१३	
१५५९	१२२७	,,	,,	१८७१	११	
१५६	१२१५	,,	,,	१८वीं	१५	
१५६१	१५६७(क)	लेखा		१९वीं	१०७–१०८	
१५६२	४५१४(२२)	लंकामत निराकरण प्रतिमा स्थापन रास	सुमतिकीर्ति	१८७७	२३४–२४१	
१५६३	३५५२(१०)	लु बवहुतरी	यु व	१९वीं	१–२	
१५६४	२८६३(१२३)	लूणगुर्वावली	हरिकलश	१६१६	१७८–१८१	
१५६५	१५१३	लूणसागर निवास-रास	दीपो	१८ ५	१०	
१५६६	४५५२(१२)	लूंड नगरकी लमाही		१८वीं	११७ वां	लि क प्रीतिसौभाग्य
१५६७	१४८३	वच्छराज चोपाई	मानदविजय		२१	
१५६८	४ ८८	,	जिनोदय	१८६१	३३	लि.क रूपविजय
१५६९	३६१८	वंकचूल कथा		१९वीं	१८	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता यादि मातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५७०	४७७१	वंध्याकल्प		१८१४	४	
१५७१	७७२६	वंशभास्कर	सूर्यमल	१९४३	१८४	
१५७२	७०२७	"		१९४०		लि क बारहठ रामनाथसाथी
१५७३	१६८	वचनामृत	सहजानंद स्वामी	१९वीं	१ २	
१५७४	११२२(६६)	वणिकधर्म			८५ वां	
१५७५	१०५४	व्याख्यानपद्धति			२	
१५७६	२६५६	, कथानिका		१९वीं	फुटकर ११	पोथो कापी
१५७७	२८६३(म)	वर्णमालादि बोबोसोमनस्कार	हीरकलश	१७वीं	४-५	
१५७८	७०२१(१)	वर्णक बारही मिसाली		१८२२	९९-११०	
१५७९	४६२४(६)	"	केशवदास	१७६१	१-१४	लि.क जयतीराम
१५८०	४०१६	वर्णोत्पत्ति		१९वीं	२	
१५८१	७१५१	वर्षाऋतु कवित		१८७६	७६	लि क भैरूदास
१५८२	२६४६	वशीकरणविधि		२०वीं	१	
१५८३	१८१९(४)	वस्तुपाल तेजपाल रास	समयसुन्दर	१९वीं	१९-२१	
१५८४	२२११(३)	"	"	१७६८	४-५	
१५८५	३४८५	वसुदेवकुमार चोपाई	हर्षकुल	१७वीं	८	
१५८६	३३३५	वसंत राजशकुन भाषा		१७५०	१७६	
१५८७	२३७६(२०)	वारषेणमुनिकथा			२२९-२४२	
१५८८	२८६३(४९)	वासप्रास्ताविक	हीरकलश	१७वीं	८९ वां	
१५८९	२१२४	वासुपूज्य पुण्यप्रकाश रास	ज्ञानसागर	१७४१	२९	
१५९०	२३७४(११)	"	"	१७५७	४७-५१	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८९१	१८६६	विक्रम खापरा चोपाई	अभयसोम	१७२७	६	
१८९२	१७१८	„	„	१८वीं	१५	
१८९३	१८१५	विक्रमचरित्र प्रबंध	उदयभानु	१५५७	२०	
१८९४	१४१४		हेमानंद	१८वीं	२७	
१८९५	१६१५	चोबोलीकथा चोपाई	अभयसोम	१८६३	११	
१८९६	१५५५(१८)	विक्रम चोबोली चोपाई	जिनहर्ष	१८वीं	१६२ वाँ	
१८९७	२१९७	„	अभयसोम	१८६६	८	सं० १७२४में रचित
१८९८	२१७१(३)	विक्रम चोबोलीरी वात		१८६०	७–८	
१८९९	२८६०	„ चोपाई		१८वीं	२२	अंत्य २१वाँ पत्र अप्राप्त
१९००	२२६५			१७६८	११	
१९०१	१६०	„		१७८२	१२	
१९०२	१०११	विक्रम चोबोली तथा प्रहेलिका	जिनहर्ष	१८वीं	२	
१९०३	२१७५(४)	विक्रम पंचदंड कथा	मालदास	१८०६	१४ –१७६	
१९ ४	१२ ५	„ चोपाई	लक्ष्मीवल्लभ	१८३१	११६	
१९ ५	१८६८	„		१८वीं	७२	
१९०६	१६६६		„	„	७१	
१९ ७	१६०२	„		१८८१	८४	
१९०८	१६६४	„ „	कीर्ति	१८वीं	१०६	
१९०९	२०८०	„ रास	नरपति	१७२९	१४	
१९१०	२१२८	विक्रम रास	लाभवर्द्धन	१८६६	२१	
१९११	१८२५	विक्रमसेन चोपाई	धर्मसागर (?)	१८१६	४५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५१२	२ ११	विक्रमसेनचोपाई	परमसागर	१९१५	११	र.का. १७२४
१५१३	१८६८	"	मानसागर	१८२८	१६	
१५१४	१८९९	"	"	१७८४	४८	
१५१५	१९९१	"		१७५८	१३	
१५१६	३२७१(२६)	विक्रम धनीसर वारता		१९वीं	१९९–१५१	अपूर्ण
१५१७	७०१६	विक्रमादित्य भूपाल पंचदंड चरित्र	लक्ष्मीवल्लभ गणि	१७६२	५५	र.का. सं. १७२४
१५१८	६४१५	विक्रमादित्यलावणी	धर्मसेवी (?)	१९७०	६	लि.स्था. देवगढ़
१५१९	१०१६	" चरित्र चोपाई	नरपति कवि	१७०६	१२	
१५२०	३६०१	" नवसैन कन्या चोपाई	मानमर्दन	१८४८	१९	
१५२१	२०९२	विचारमालाप्रबोध		१७वीं	१७	
१५२२	११२३(१६)	विचाररत्नम	सेवक		७० वॉ	
१५२३	११२२(६)	विजयप्रभसूरि गीतानी ढाल	बुद्धि	१९वीं	४ था	
१५२४	३५७५(२१)	विजयसेठ विजयासेठाणी चोढालियो	चंद्रकीर्तिसूरि	२०वीं	१५–१७	
१५२५	७६२	" लावणी	लालचन्द	"	३	
१५२६	२२२७	विद्याविलासचोपाई	रामसिंह	१८वीं	९	
१५२७	३९५२			१९९३	१३	
१५२८	३९९७		जिनहर्ष	१८५०	२१	
१५२९	६१११		"	१७९२	१८	
१५३०	६१२३(१)	पचाख्यान	हीरानंदसूरि	१९११	२–५	सं. १४८३ में रचित
१५३१	१८२४(२)	"		१९वीं	४–८	
१५३२	१८२७	"	"	१९७६	९	

…ांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि आवश्यक	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९३३	२०११	विद्याविलास पवाडउ	हीरार्णवसूरि	१६वीं	५	
१९३४	१५७४	"	हीराणंद	१७वीं	६	
१९३५	१००४	विमलचंदरास	ज्ञानसागर	१८७६	२१	सं० १८१०में रचित
१९३६	४ ६६	विमलचंद केवलिचरित्र कथा	"	१६वीं	७	
१९३७	२१२१	विमलमंत्री रास	लावण्यसमय	१८वीं	२९	
१९३८	२१०४(१७)	"		१८९७	७३–१४१	
१९३९	१३१४	"	"	१७वीं	६५	
१९४०	३४५२(४१)	विमलशाहजीरो सिलोको	शांतिविजय	१८वीं	४५–४८	
१९४१	४१६५	"		१९वीं	१४	
१९४२	१२४६(१)	विवेकबारसी चोवणी	केसोदास	१८ ६	१–५	
१९४३	१२५५(१८)	"	"	१९वीं	११४–१२१	
१९४४	१२५५(२२)	"	"	"	१४९ वां	
१९४५	१२७१(७)	"	"		३ वां	
१९४६	१२६६	"			११	
१९४७	१२५५(२६)	विरमदे सोनगरारी वात		१६वीं	१४०–१४८	
१९४८	२२१७	विवाह योग		१६वीं	६	
१९४९	६८२	पडल चोपाई	अभयकुशल	"	६,	
१९५०	१७१४	विवाह योग बालावबोध सहित	अमरसागर सोमसुन्दरशिष्य	१८१९	१२	
१९५१	१७७२	विवाहपडलभाषा	मतिकुशल	१८६१	४	
१९५२	२८२३(११८)	विविधपुरांतोत गीत		१७वीं	१०३ वां	
१९५३	२८२३(१०५)	" मुहूर्तनक्षत्र विचार		"	११४–११५	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नाम	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५५७	११७१(२५)	विश्वरतवन		१६वीं	७ वां	
१५५८	४७५२(५१)	विषहरा विचार ?		१८वीं	१०६ वां	
१५५४	४११४(४)	विषापहार स्तोत्र	प्रभासकीर्ति	१८७१	१६०–१६१	
१५५६	६११४			१९ वीं	१६	
१५५५	१२६५	विसरर्जन	शिवदास	२०वीं	९	
१५५९	१५७५(८१)	विहुरमान स्तवन	प्रभसो	१९ वीं	१६१–१६६	
१५६	१५७५(१७)	बीकानेर मंडन आदि जैन स्तुति	हीरकलश	१७वीं	६६ वां	
१५६१	१४१९(१)	बीका सोरठरी बात		१८वीं	५१–५५	
१५६२	१५६२(११)			१९७०	८९–११६	
१५६३	१५७५(१७)	वीरजिन मुहुली	विद्यादेव	२०वीं	२६६ वां	पद्यविवरणयुक्त बालावबोध सहित
१५६४	१५७५(८१)	वीरजिन पचकल्याणक स्तवन	लक्ष्मीचंद		१४६–१५९	
१५६५	४१६	वीरजिनस्तवन	यशोविजय	१८७६	८६	
१५६६	१५७५(७८)	वीरजिनस्तुति	,	२ वीं	१३७–१४०	
१५६७	१५७५(५५)	वीरदेवना स्तवन	शिवचंद पाठक	,	२२७–२२८	
१५६८	१५७५(७२)	,		१८वीं	१६२–१६६	* लि.क. पार्श्वदास
१५६९	२१४८	वीरमाण उदैमाण चौपाई	कुशलसागर	१८३२	४८	
१५७०	७०१२(१४)	वीरमदे देवरिया आदिके कवित्त		,	१०६ वां	
१५७१	७७११(१)	वीरमदे पवारी वारता सचित्र		१८२६	१–१७	चित्र सं० १८
१५७२	४११६	वीरसेन राजकथा आदि		१९२४	८	सं० १७८२में रचित लि क चौथो
१५७३	२१४१(४)	वीसलदेव सूमर सिकाररी बात		१८६०	६–११	*

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नामादि	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११७४	१२७५(२१)	श्रीवत्सामस्तवन	समतो मुनि	२०वीं	१००-१०९	
११७५	१२६८	श्रीपालक रास	जिनहर्ष	१८९५	१०१	
११७६	२१०४(१४)	,, पर पूजा तथा विधि	लक्ष्मीसूरि	१६वीं	६३-७१	
११७७	११२१(१५)	श्रीपार्श्व चउपई	अमरकुमार	१७वीं	७१ वाँ	
११७८	६३४	[illegible]		१८८०	१५	
११७९	२१४४(१)			१६वीं	१-१५	सं० १६१६ की रचित । [illegible]
११८०	२१४३(५)		देवशील ?	१८६०	१३-३६	
११८१	२१६०(६)	,,	देवीलाल [illegible]	१८४६	२६-३४	
११८२	२२४१	,,	,,	१८३४	१६	
११८३	२८१०		,,	१९वीं	१३	
११८४	११२४(२)			१८८०	१-१४	
११८५	१२७३(१)	चौपाई	हेमाणंद, हीरानन्द शिष्य	१८१९	१-१७	
११८६	५११८	,,		१९वीं	४०	
११८७	६४४१	,,	प. अनूपसिंह	१८६१	४४	
११८८	७०४४	,,	शिवराम	१७२९	३९	लि.क. पुरुषोत्तम
११८९	७०९२(२)	,, रा कवित्त		१७८४	१७-४६	* लि.का. सिरोंजवाटी
११९०	७७७१	[illegible] भाषा	रामसिंह	१९वीं	३३-४९	कवित्त ६२
११९१	११०१	[illegible] चौपाई	प्रेमराज	१८वीं	७	*
११९२	११६५			१८३६	१	
११९३	१८२१	[illegible]		,,	१०८	१,३ पत्र अप्राप्त
११९४	९४०६	,, [illegible]		२० वीं	१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६९५	३५६७(११)	मदन पुरन्दर		१९वीं	११-१२५ १४१-२१६	
१६९६	३५६७(१३)			१९वीं	२७	
१६९७	३८१९	,, सार		१९१९	२४	
१६९८	२१८२			२०वीं	२४८-२५०	
१६९९	३५७५(२१)	वैराग्यशतक	विजयपाल	१८वीं	३-१९	•
१७००	३५४८(१)	वंकचूलरी वात	धर्मसमुद्र	१८वीं	१-३	
१७०१	३५१ (१)	शकुंतला रास		१९वीं	१	
१७०२	२५७८	शकुन विचार		२०वीं	१५४-१५५	
१७०३	३५७५(१४)	शकुनावली		१९वीं	८	
१७०४	१८६३	शकुनदीपिका चोपाई		१८वीं	१२० वां	सवाई जैसिंह और [illegible] का भी वर्णन है
१७०५	४४५२(१२)	शकुनरा कवित्त			११-१२	अपूर्ण
१७०६	४४५२(१)	शकुनरी चोपाई		,,	११ वां	
१७०७	४४५२(७)	विचार		१७वीं	२	
१७०८	४११०	शकुनावली		१८वीं	१९-२७	
१७०९	५१२१(४)	,,		१७वीं	१४ वां	
१७१०	२८९१(२८)	शतार्थ जिन मधुर मुग्धं मनी- संख्या चोपाई		१७वीं	१२	
१७११	६०२	सतसंवच्छरी तथा राशिफल		१८९४	२२	
१७१२	१७५०	,,		१८२७	१५	
१७१३	१७७५	,,				

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०१४	४६८६	प्रतसंवत्सरो		१८वीं	६	
१०१५	४७२५	,,		१६वीं	४६	
१०१६	६६६४(६)	प्रतिचार		१८६१	३३-३४	
१०१७	१७७८	प्रतिपुतलक विचारादि	हेमकवि	१८वीं	२	
१०१८	४४१२(१५)	प्रश्नोत्तररो गुण पृच्छ		,,	११६ वां	लि.क. प्रीतिसौभाग्य
१०१९	४१६६	प्रश्नोत्तरकथा		१८४०	२१	लि क. गोपाल मिश्र
१०२०	४७८८			१९वीं	६	
१०२१	४८१४	,, पृच्छ	मयनीराम	१८६६	२	
१०२२	६६०७	स्वामाजीकी आरती		१९वीं	२	
१०२३	२१ ६			२०वीं	१	
१०२४	२१ ७		[illegible]	,,	१	
१०२५	२११७	पाठविधिप्रकाश		१९१६	२	अजमेरमें लिखित
१०२६	१ ५३(२)	श्रावकारी चोरासी आशातरो पृच्छ		१८४१	१७-२०	
१०२७	६६६७(१८)	श्रावक अतिचार		१९वीं	११६ वां	
१०२८	७४४४(८)	कथा कोष भाषा		१८८५	१४०-१६०	
१०२९	७१२२	,, री सज्झाय	जिनहर्ष	१९वीं	२१	अपूर्ण
१०३०	७०२३(८)	श्रीपालो कथा		१८३७	४२-४४	
१०३१	२०२८	श्रीचन्द्र केवली रास	देवविजय	१९वीं	७	
१०३२	१२६७	श्रीदत्त श्रीमतीरी कथा		१९१७	६२	
	..(१)			,,	१-२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि आदि	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७३५	६ ९४	श्रीपालकथा	रत्नशेखर	१७१७	१६	
१७३६	६९३१	, चरित्र भाषा		१९१७	१०२	
१७३७	६६१६	"	पुण्यविमल	१९२८	७८	सि.क. मानुमल प्रथम पत्र समाप्त
१७३८	३६ ५	श्रीपाल चौपाई	मतिविमल	१८३१	४३	
१७३९	४००२	"	जिनहर्ष	१८२३	२५	
१७४०	४११८			१८९४	३५	
१७४१	६६२७		ज्ञानसागर	१७६१	१४	
१७४२	७०८६	श्रीपाल नरेंद्र कथा	सुमचंद	१८८३	११७	सि क. मोतीचंद
१७४३	७२४८			१९वीं	११	
१७४४	६८०	श्रीपाल रास	जिनविजय	१९२३	७८	
१७४५	६८६	"	ज्ञानसागर	१८वीं	८	
१७४६	६६१	"	जिनहर्ष	१८१४	२७	
१७४७	१००१	"	जिनविजय	१९१७	८४	
१७४८	११२४(२)		ज्ञानसागर	१९७५	२१-३७	
१७४९	९०३८		जिनविजय	१७८५	४३	
१७५०	२१३८	"	जिनहर्ष	१८३	३३	
१७५१	२१३४	"	जिनहर्ष	१८७८	४३	
१७५२	३४८६		पुण्यरत्न	१७वीं	२२	
१७५३	३६०९		जिनहर्ष	१८३३	२८	
१७५४	३६ ७	"	जिनविजय	१८४२	४३	
१७५५	३६५७	"	ज्ञानसागर	१७५२	११	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नाम	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष वक्तव्य
१७२६	४४६१	धीपाल रास	ज्ञानसागर	१७१२	११	
१७२७	६२२८	"	जिनविजय	१८२७	५५	
१७२८	६७४६	"		१८७०	गुटका ७	
१७२९	३१७३(५)	"		१८०३	१ ९–११८	
१७६	२११०	चौबिस चोपाई	धर्मशील	१८११	२१	
१७११	२१११	"	जिनहर्ष	१९वीं	११	
१७१२	२०१	"	सोमविमल	१९९०	२१	
१७१३	३३२९(७७)	[illegible]		१८वीं	१२८ वां	
१७१४	२८६१(८२)	ध्यानचेष्टा विचार		१७वीं	१४३–१४४	
१७१५	२८६१(७५)	" शकुन विचार		"	१४०–१४१	
१७१६	२८६१(४४)	प्रभु जय इक्यासीह नाम [illegible] नमस्कार			८७–८८	
१७१७	६३८९	प्रभु जय चढार	मानुमेरु	१६६७	१	•
१७१८	१००२	" रास	समयसुन्दर	१८३१	८	
१७१९	१८३९	"	"	१८२९	१०–१९	सं. १६८२में नागोरमें रचित
१ ७०	२२२६		"	१८वीं	२१	
१७०१	३३५४(१)	"	नयसुन्दर	१९वीं	१०–१२	
१७०२	३६२३	"		१६६२	१	
१७०३	६५३८	"		१८वीं	१	लि क. ज्ञानविजय
१७०४	४४११(२)	" रास			५–१७	
१७०५	३३७५(२७)	प्रभु जयचोमती	देवचन्द	२०वीं	२७०–२८०	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७७६	२८२३(४)	शत्रुंजय स्तवन	रंगकलश	१७वीं	१ ला	
१७७७	१६७५(२७)	शांतिजिन स्तवन	मेघमुनि	१ वीं	११३-११७	
१७७८	३५३६	शांतिनाथ चोपाई	ज्ञानसागर	१८वीं	१०	
१७७९	१६ ४	"		१८८०	२२	
१७८०	२३६८(१)	शांतिनाथ स्तवन	गुणसागर	१९वीं	२९-३१	
१७८१	२३६८(१०)	"	शांतिकुशल		११ वां	
१७८२	३५७३(२१)	"	गुणधर्म		१८-१९	
१७८३	६६६०	रास		१८२४	२२०	पत्र सं. १०४-१०५ अप्राप्त
१७८४	२ ७१	शारदा छन्द	शांतिकुशल	१९वीं	१	
१७८५	२०७४	"		१८७	२	
१७८६	२१०२	"		१९वीं	२	
१७८७	७७२०(७)	शालोच्छव		१८वीं	४१ वां	
१७८८	४०२४	चरित्र	मतिसार		१२	सं० १९वीं रचित
१७८९	६३१	शालिभद्र चोपाई		१७७५	१९	
१७९०	६८३	"		१८११	१५	
१७९१	१००७		"	१८वीं	१७	
१७९२	१८३६(१४)		"	१८३१	१७-११०	
१७९३	२०२०	"	"	१८२१	१७	
१७९४	२१८६		"	१७वीं	२५	
१७९५	२३७४(१)	"	"	१८५७	११	
१७९६	१४८७		"	१७वीं	२४	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७९७	११५४(९)	शालिभद्र चोपाई	मतिसार	१७७९	१-८	
१७९८	१८७०	"	"	१९८९	१८	
१७९९	११११	"	"	१७वीं	१८	
१८००	१४१५	" "	मतिकुशल	"	६	
१८०१	११५ (७)	" "		१९वीं	३०-६९	
१८०२	४८ ४	" "		"	१२	
१८०३	५ ६५	" "		१८४१	१८	लि.स्था. सवाई जयपुर
१८०४	६१४०	" "		१८१८	४८	
१८०५	६५४१	" "		१८२१	२६	
१८०६	६८४६	" "		१८२८	१७	लि.क. खुशालचंद
१८०७	७६६१	" "	"	१७७२	१३	
१८०८	७६६४	"	"	१८०६	२६	लि.क. खुशाल
१८०९	६६६८(२)	" श्लोक		१८६६	१-१	
१८१०	२४११	शालिहोत्र		१८६१	८	
१८११	११४६(४)	"		१९वीं	४०-४५	
१८१२	११५०(६)	"			४१-५०	
१८१३	४७७०			२०वीं	६	
१८१४	६८२६	"		१९१५	१०५	१-३ पत्र अप्राप्त
१८१५	७७१०	" गुटका		१९४१	६४	लि.क. राव जयसिंह फतौंदे फतेपुरमध्ये
१८१६	७७६७	सचित्र गुटका		१९वीं	१६६	चित्र सं. ११८

क्रमांक	क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि नाम	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
		सर्वसत्तार्विचारी वात		१८१६	३५	
१२०१	४१४७	" "		१८२१	१६-१०८	लि. म. रामाकृष्ण
१२०२	६६८६	" सचित्र पुस्तक		१८वीं	१-७ तथा	लि. सं. ७७
१२०३	७०६५				१६-१५	
				१७वीं	७-८४	लि. सं. १४
१२०४	७४४२			१८८६	१९६-१८१	
१२०५	११०२(७)	" मधुर्ने		१९वीं	१०२	
१२०६	२०१४	[illegible] रास	[illegible]	१८००	९०	प्रथम पत्र अप्राप्त
१२०७	११११	" प्रबंधचोपाई		१८वीं	१	
१२०८	१०११	[illegible]		१९वीं	१	
१२०९	११०४	"	हेम	"	१४-२०	
१२१०	११०६(४)	"	"	१८वीं	१	
१२११	२०६०(२)	"	"	"	१६-२०	
१२१२	११४८(२)	"	"	१९वीं	११ वां	
१२१३	११११(१०)	"	हेम	२०वीं	३६-३६	
१२१४	११११(७)	[illegible]	"	१७७४	१	
१२१५	११११	"	[illegible]	१८८०	८	
१२१६	११०२	[illegible] चौपाई		२०वीं	४६-६०	
१२१७	११११(२)	" [illegible] स्तोत्र		१९वीं	११ वां	
१२१८	११११(११)	[illegible]		"	२	
१२१९	११०४	"	[illegible]	१८६६	१-२८	
१२२०	११११	"				

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११२१	२६२२	समोसरकथा		१८८३	३०	
११२२	३११२(१)	"	गोरो	१६७०	१४-३६	
११२३	३११२(६)	बारता		१६७	१०-३६	
११२४	७४७४(१२)	समार्थविधि	हेमचंद्र	१८८६	२१२-२४५	
११२५	२२१७(४)	सम्यक्त्व दूहा कुंडलिया	मीम	१८वीं	३ पा	
११२६	११२२(२१)	समाईमोजातिसवय		१६वीं	७२ वां	
११२७	२२७१	"	समनीराम	१६२०	४	
११२८	६१२१(८)	स्थूल ज्योतिषचर्चादि		१८८६	४१-४६	
११२९	७७५१(१५)	स्थूल पत्र		१८१७	८६-१०६	
११३०	४६१४(२१)	संबोधसत्तानु दूहा	वीरचन्द्र	१८७७	२७६-२८३	
११३१	१६ ८	सम्यक्त्वकौमुदी कथा चोपाई	रूपचन्द्र	१८८९	४२	
११३२	१६ ६	भाषा		१८१४	३०	
११३३	२०६३	समकितकुलकचोपाई		१७वीं	११	
११३४	३५४१(४)	" सज्झाय	लक्ष्मीकुशल	१८८२	७-६	
११३५	४६१४(१)	सम्मेदशिखरनिर्वाणकाव्य		१८७१	१२८-१६०	
११३६	४७२४	समयरै राजारो छन्द (धर्मपति छन्द)		१६वीं	०१	
११३७	२१७४(४)	समरातारंगकथो	तेजपाल कवि	"	१५-२१	●
११३८	३५७५(१६)	समवसरणशोभा	शिवचन्द्र	२०वीं	१००-१ १	
११३९	३५७५(७५)	स्तवन	धर्मवर्द्धन		१०८-१११	
११४	३३३५	" स्तव बालावबोध		१६वीं	६	
११४१	३५ ७	समाधितन्त्र बालावबोध	पर्वतधर्मार्थी	१७६६	८५	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान — राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग-१

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५४२	२१७१(१५)	समाधिरास	पीताम्बर	२०वीं	२०२–२०३ २१६–२४	
१५४३	१५०५(४६)	स्याद्वादमयस्तवन		१९०५	१	
१५४४	४९१	सरस्वती छन्द	भानिकुशल	१९वीं	२	
१५४५	६६७	"	हेम	"	२	
१५४६	२११२		रत्नाकर		१६–१७	
१५४७	९१२७		लावण्यसमय	१७वीं	१२ वाँ	
१५४८	२८६३(२०)	"	मतिसुन्दर			
१५४९	२८६१(२१)	"	सहजसुन्दर	१९वीं	२	
१५५०	१२५४		हेम		१४–१५	
१५५१	१५४८(६)	"			१	
१५५२	४८०२	"		१८वीं	१२७–१३०	●
१५५३	७९८७(३६)	सवाई जैसिंघजीकी जोधपुर पर चढ़ाईका कवित्त	धर्मसी	२०वीं	२	
१५५४	९२००	तवा सो तीस	बरनदास	१९०२	१४	
१५५५	१०५९	स्वरोदय	चिदानन्द	१९११	२१	
१५५६	२२१०	"	गोवरदास	१८११	२०	
१५५७	१२३४	स्वात्तेहुल चौपाई		१९वीं	१४९–१५०	
१५५८	१५५५(२४)	सवैया दूहा		१८१७	७० वाँ	
१५५९	७०५१(११)	"	बनारसीदास	१९२६	१२–१३	बनारसीदासके स्वाक्षर लिखित ५ पत्र हैं
१५६०	४२८७(१)	इकतीसा		१९वीं	५	
१५६१	४०८१	" बावनी	राजसी			

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि भाषादि	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष सम्मेलनीय
१९६२	४९०९(४)	लवणा बावनी	राम कवि	१७९८	२३–१४	लि.क केसरसौभाग्य
१९६३	४४९३(२०)	,, लवारो आदि		१८वीं	९० वाँ	
१९६४	४४९२(१४)	,, संग्रह	प्रताप, ब्रह्म गुलाल आदि		१७ वाँ	लि.क प्रीतिसौभाग्य
१९६५	४४९२(८१)	,, ,,	श्याम काशीराम आदि		१२४ वाँ	
१९६६	५५२४	सम्वत्सरी पूजा	साधुकीर्ति	८१४	६	
१९६७	६११	सहुमकर स्वाध्याय		१६वीं	१	
१९६८	५६१	साठ संवत्सरी		१७वीं	५	
१९६९	२५५५	साठ संवत्सर दोहा		१६०१	१२	
१९७०	१८१७	साठी संवत्सर फल		१८९०	४५	
१९७१	११६४(४)	,,		१८९१	१–९२	
१९७२	५४१			१८वीं	८१	प्रश्नावली और [illegible] सम्मिलित है
१९७३	११११(१)	साता बारता दूहा		१९वीं	१६ वाँ	
१९७४	४६२४(१२)	,, विमत्रिया		१७६	११–१४	
१९७५	२८६१(३६)	सात विसन गीत	हीरकलश	१६२२	७० वाँ	
१९७६	४६२४(११)	सात सखीरो संवाद		१७६१	१२–१९	
१९७७	४४९२(६४)	(पहेली)		१८वीं	११ वाँ	
१९७८	२१ म	साधुप्रतिक्रमण बालावबोध		१७वीं	१८	
१९७९	९१७६	साधुवंदना	पासचंद	१७१५	६	
१९८०	२२ ४	सांबप्रद्युम्न चौपाई	समयसुंदर	१८१७	२५	
१९८१	९८८६	,,		१६६४	२९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९८२	४०००	सांबप्रद्युम्न चोपाई	समयसुन्दर	१८वीं	१५	
१९८३	२८९३(३०)	सामयिक बत्तीस दोषविवरण कुमार चोपाई	हीरकलश	१७वीं	१२-१६	
१९८४	२२७२	सामुद्रिकशास्त्र भाषा		१७७४	४	
१९८५	८६३	सारसिखामणि रास	संवेगसुन्दर	१८वीं	६	
१९८६	१८६८(५)	सावन	मालदेव	१७२१	१-११	
१९८७	११२२(४३)	सासबहुनो संवाद		१९वीं	३३ वां	
१९८८	११२४(४)	साहुराजा भीमजन रास	ज्ञानसागर	१६७५	२	
१९८९	३७२१	साधुवंदना भाषा सूत्र	मोतीराम	१९वीं	३	
१९९०	३५४८(७)	साहिबाका कुतबदीन साहजादी वारता		१७९६	२-११	
१९९१	३५१२	सिद्धचक्ररास	ज्ञानसागर	१६८५	१६	
१९९२	३५७५(३८)	सिद्ध क्षेत्र चैत्यपरिपाटी	देवचंद	२ वीं	२८४-२९१	
१९९३	३५११	सिद्धांतचोपाई		१७वीं	१	
१९९४	२८९३(५५)	बोल		"	१०-२३	
१९९५	७३०५	"		१९१०	४७	
१९९६	७५४६	सिद्धांतसारोद्धार		१७७६	१९	प्रथम व पत्र त्रुटित
१९९७	३३८३	सिरीसांतनी मास	लावण्यसमय	१८वीं	२	
१९९८	३५५५(१६)	सिरोही मांडवी बीकानेरी जोधपुरी बोलियां		१९वीं	१०२ वां	
१९९९	४००६	सिंहलसुत चोपाई	समयसुंदर	१७९४	६	सि.क. कुशलपुर

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि आशय	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२०००	४८२८	सिंहलसुत चोपाई	समयसुंदर	१७वीं	६	
२००१	६११	सिंहासनबत्तीसी		१७६०	१६	
२००२	२१४४(२)		क्षेमंकर ?	१८३१	१५–३५	
२००३	२१६८	,	देवीदास	१७८२	२६	
२००४	२८८३(१)	,, [illegible]		१६१६	३	[illegible] ३ पत्र हैं
२००५	३११४(१)	चोपाई	हीरकलश	१९वीं	१–८२	
२००६	३२६०	सिंहासनबत्तीसी	केशव कवि	१८०४	७६	
२००७	१४६	चोपाई	हीरकलश	१७वीं	१४२	
२००८	३२२६(२)	,, कथा	माधव	१८८७	७८–११३	
२००९	१५६७(७)	सीकोतरी छंद		१९वीं	१०६–१०७	
२०१०	११७४(२)	सोलहसुपनी			२८–३०	
२०११	२०७५	सीतायण हाल		१७वीं	६	
२०१२	८६	सीताराम चोपाई	समयसुंदर	१७८१	१०२	
२०१३	१८०८		,,	१७१५	६६	
२०१४	६३३६	सीताराम चोपाई	,,	१८वीं	६२	
२०१५	२०१८		,,	,,	[illegible]	प्रथम पत्र अप्राप्त
२०१६	१६५८	,,		,	८२	मेड़तामें रचित
२०१७	७०२३(२)	सीतासगपद्म	जिनहर्ष	१८३७	१०–११	
२०१८	१२७१(२८)	सीमंधर जिन वीनती	भक्तिलाभ	१९वीं	७१–८०	
२०१९	१२७५(४)	,, ,,	,	२ वीं	३०–३२	
२०२०	११२७(२)	,, ,,		१९वीं	१०–१५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि आवश्यक	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२०२१	२१७४(११)	सीमंधरजिनस्तवन		१९वीं	८०–८१	
२ २२	११७५(१५)	सीमंधरजीरो जीवाजीकी चिट्ठी		२ वीं	१९७–२०१	
२०२३	१९११	सुदर्शनचरित्र चोपाई	ब्रह्मपति	१८५०	१६	
२०२४	११७१(१)	सुदर्शन सेठकी कथा	मान ?	१७६१	१–११	
२०२५	४ ०७	,, रा कवित्त	वीपो	१८८०	२१	लि क हीरमाव
२ २६	४०८९		,,	१८८४	२०	लि क बाई चंपा
२०२७	१९१०	रास		१८६१	१६	
२०२८	२०८१	,, कोशप्रबोध		१५७०	११	सं १५०१में रचित
२०२९	१८२१	,, सज्झाय		१७७९	१	
२०३०	१५५०(११)	,	हर्षकीर्ति	१९वीं	८८–८९	
२०३१	१८१२(४)	सुदामाकी बारहखड़ी		१७७४	८५–८८	
२०३२	२५७५(२)	सुधर्मविचार चोपाई	लाभसील	१८वीं	१२–१९	सं १६६०में रचित
२०३३	११२७४	सुबाहुचरित्र		१९वीं	८	
२०३४	११८८		माणिक्यसूरि	१८वीं	६	
२०३५	११२१(११)	सुबाहुरिषिसंधि	पुण्यसागर	१७वीं	७१–७४	
२०३६	१५७१(१८)	,,	,,	१९वीं	५७–६०	
२०३७	९८१	सुभद्राकथा बालावबोध	जिनकुशल		११	
२०३८	२ ६६	सुभद्रारास	भावप्रभ	१८वीं	१६	
२०३९	४००८	सुभद्रासतीरो चोढालियो	माणसागर	१८७९	५	लि क पेमराम
२०४०	११४२(१)	सुभाषित		१८वीं	१–१७	
२०४१	४९१२			१९वीं	४	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२०४२	५१५३	सुभाषित दोहा कवित्त आदि		१७वीं	३०	
२०४३	२८८३(१९)	सुभिक्षादि वर्णन		।	१० वां	
२०४४	५२१७(३)	सुमतिजिनस्तवन	सोम मुनि	१८वीं	१ रा	
२०४५	२ ६१	सुमतिनाथजिन चोपाई		१७६	१२	
२०४६	५४१०(३)	सुरत्नपञ्चमीकथा	कनकसोम	१९वीं	१–८७	
२०४७	५६१ (३)	सुरप्रियकुमारस्वाध्याय	लब्धीरत्न	१८वीं	१–४	
२०४८	६६१	सुरसुन्दरी चोपाई	धर्मवर्धन	१७६१	१६	
२०४९	६१०	चरित रास	जिनसुंदर	१७वीं	१६	
२०५०	५५५२	„ चोपाई	धर्मशील	१८६	२५	
२०५१	५५५६	„	नयसुंदर	१७वीं	१६	
२०५२	५८१		धर्मरत्न	१८४२	२८	पत्र १० से २३ तक अप्राप्त
२०५३	४ ०६	„	गुणशील	१९वीं	१७	
२०५४	७२४४	„	धर्मवर्धन	१८४८	२१	
२०५५	४८०१	रास	नयसुन्दर	१९०८	२६	लि.स्थ. रायचकेशव
२ ५६	३०८४(२)	सुरेन्द्रकुमार	धीरो	१८११	१–८७	
२०५७	२८८३(१२८)	सूक्तिसिद्धिप्रबोध		१७वीं	१११ वां	
२ ५८	५५५५(११)	सुबाहुसुतरीकथा	देवदत्त भट्ट	१९वीं	१–२८	
२ [illegible]	५५६७	सूक्तिमाला		१९१२	१५	
२०६०	७३७४	सूक्तिमुक्तावली	केशरविमलगणि	१९वीं	२५	लि.क. ....
२ ६१	६१५५	सूर्यजीरो सिलोको		१८२१	१–३	
२ ६२	६४१८	सूरजजीरो सिलोको		„	२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२०६३	२११८(६)	सूरजजीरो सिलोको	सेवग	१९वीं	१७–१६	
२०६४	१२३३	"		१८०१	१	
२०६५	११३७(३)	"		१८वीं	७२ वां	
२०६६	७७२३	सूरजप्रकास	करणीदान	१८४१	१००	
२०६७	११६२(३)	सूरजजीरो सिलोको		१९५६	१७–१८	
२०६८	२११०(१)	सूरजबहुतरी बात	देवीदास	१९वीं	१४	
२०६९	२०४४	सूरपालचरित्र रास	सकलचंद	१८वीं	१३	
२०७०	७३१	सूर्यपुराण (कथा)	तुलसीदास	१८८७	७	
२०७१	६७३२	सेऊमलकी परची	गोविंददास ?	१९२९	१	
२०७२	११४६(२)	सेरसिंह मेड़तिया आदि अनेक राजाओंका लपकरा		१९वीं	६–१०	●
२०७३	११४६(१०)	सोनीगरा सिरमौरी वारता			८६–६३	● सं. १८८३के समान
२०७४	२८११(२)	सोमजी प्रभावसरी कथा		१८३४	८–१४	
२०७५	४०११	„ वारता		१८४१	१	लि.क. [illegible]राम
२०७६	७७२२(१)	सोरठरा दूहा		१८वीं	४६–४८	
२०७७	२१४२(१)	सोरठबीझेरी बात		१९वीं	१–६	
२०७८	५४१८(२२)	सोलहकारणका रासा		"	१४७–१४६	
२०७९	४६१४(४५)	सोलह स्वप्न चोपाई		१८७७	२७४ वां	
२०८०	२२२४	सौभाग्यपंचमी चोपाई	जिनरंग	१८वीं	१७	
२०८१	६१३८				९५	
२०८२	९३७१(१)	सकलचतुर्थीव्रतकथा		२०वीं	१२	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
				१७वीं	८६ वां	
२१२४	२०८१(११)	हरियाली (हीयाली)	बोहरा	१९वीं	११–२८	
२१२५	४६०५	हरियालीरा ग्रुग्ग ,,		१८०७	१६	
	(१ ११ १२)		ईसरदा बारहठ	१९वीं	९–१४	
	२१७७(१)	हरिरस	,,	१७३६	८२–८७	
२१२६	३३३५(८)			१७८१	१–१०	
२१२७	३३४७(८)	,,		१८वीं	५	
२१२८	४६२४(८)	,,	,,	१८३१	१८०–१८६	लि.क. फूलगिरि
२१२९	३३४१	,,		१८६०	१–२१	
२१३	७०२१(१२)	,,	,,	१८७१	७–१२७	लि.क. चंद्रकीर्ति
२१३१	७०५ (१)		ब्रह्मविलास		१७१–२०१	
२१३२	४६१४(२)	हरिवंशपुराणनो रास		१९वीं	१	
२१३३				१८वीं	१३०	
		हस्तरेखाचित्र		१७८३	११ वां	
२१३४	३३४८	हाथियांरा बखाण		१९वीं	१ –१०५	
२१३५	७७५२(६२)	हाथीरा बखाण	ईसर बारोठ	१८वीं	२४ वां	
२१३६	४६२४(६)	हिंगुलाज मातवैष्णव	रामसरण ?	१७वीं	१	लि.क. चौतसो
२१३७	३३६७(५)	हिंगुलाष्टक				
२१३८	७७५१(२४)	हिंडोलणा आदि				

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१४	११६४(१)	हितोपदेश भाषा		१७७३	११४	
२१४१	२८८३(१८)	हीयाली	हीरकलश	१७वीं	११४ वां	
२१४२	२८८३(१९)	"	हेमाणंद			
२१४३	२८८३(७०)	हीयाली	हेमाणंद	१६६७	११६ वां	
२१४४	११६०(४)	"		१८वीं	४ था	
२१४५	२८८३(१५)	हीरकलश पोसाविवरण		१७वीं	१ वां	*
२१४६	२८८३(६५)	हीरकलश मुनिस्तुती	विद्युत		१११ वां	
२१४७	४११८	हीररांझाको तमासो		१६२४	१२	लि क नाथूनारायण शर्मा
२१४८	२१०७	हीरसूरि रास	ऋषभदास	१८वीं	८२	पत्र १–२ अप्राप्त
२१४९	३११८(७)	हीरसूरि सज्झाय	आणंद	१६वीं	५० वां	
२१५०	११७१(४)	हुमायां मजमुमतिकिमसतरबा	देवसूरि		१८ वां	
२१५१	१७५८	होलीविचार		"	१	
२१५२	३१७४(८)	क्षमाछतीसी	समयसुन्दर	"	२८–३१	
२१५३	११७५(२०)	"	"	२०वीं	३१–३५	
२१५४	२३११	क्षेत्रपाल छंद	भाणो	१६वीं	२	
२१५५	६६६	क्षेत्रसमासकरणी बालावबोध	वत्सराज	१७वीं	११	
२१५६	४८१६	क्षेत्रसमास	रत्नशेखर	१७८२	७१	पत्र सं १ २ अप्राप्त
२१५७	७११७			१७वीं	१५	
२१५८	७४०३	,		१८३१	६	
२१५९	७६२१	क्षेत्रसमास चौपाई	मतिसागर	१६८२	१४	सं १६६४में रचित
२१६०	४०२१	" प्रकरण सबालावबोध	रत्नशेखर	१८२१	२०	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१६१	७५१	त्रिपुरा छंद		१९वीं	२	
२१६२	१८८५	त्रिभुवनकुमार रास	पदमसागर	१८वीं	१९	
२१६३	१९७३	"		१७५९	२१	
२१६४	२१६२	श्रैमोरवदीपिका चौपाई	लाभ (सदारंगशिष्य)	१८वीं	४	
२१६५	२०६५	जमाखात तथा मोलपतीभात	मियाराम	१७२	१८	
२१६६	२०४८	ज्ञानपंचमीस्तवन	केसरकुशल	१९वीं	४	

• श्री •

परिशिष्ट १

[कतिपय ग्रन्थोंका विशेष परिचय]

१ ७७२१ (१ १७)[1] अंकपाटी आदि गुटका

आरंभिक दो पत्रोंमें लघु चाणक्यनीतिके दूसरे अध्यायका अंतिम श्लोक तथा तृतीय अध्याय लिखित है। आगे १७ पत्रोंमें अंकपाटीका लेखन हुआ है पत्रमें ऊपर अंक-संख्या और नीचे सुभाषित (नीतिपरक) दोहे, श्लोक आदि हैं। उदाहरणार्थ—

'यानं यथा धर्मोद्धिर्यं दर्शनं देवपूजितं ।
अकारा पंचपनते दुर्गंत नैव गच्छति ॥ १ (पत्र १)

दूहा ॥ सरवर अक्षर सीप पीव जो रचे अध्याण ।
सर वैरीवर सायरो अक्षर राम दुलाण ॥ १ (पत्र २)

अन्तके १६ १७वें पत्रमें—

दूहा ॥ कासी थूं कोयल भली, जस समपरो विवेक ।
अंब विहूणी अबरलुं, बोल न बोले एक ॥ १ (पत्र १६वां)
गोम गोरमें होत है कोस दूर मत जाम।
धनी कहाड पारसी अरथ कह्यो इण माय ॥ १ (पत्र १७वां)

॥ लीपतं। पीरल श्री ५ श्रीकालमचन्दजी लीपी छै। सं० १८९१ मीगसर सुद १ वार मगलवार अपपुरै जै सम्य गोठीरा छै।

२. ११२२ संवला चौपाई

आदि ॥ॐ॥ श्री गणेशायनमः ॥

दूहा ॥ श्रीगणधर गौतम प्रमुख एकादश अभिराम ।
मन वंछित सुख संपजै नित समरंता नाम ॥ १

प्रथम उद्यम मैं मांडियो मति दीजै अति मंद ।
तिस कारण पहिला नमुं श्रीगणधर सुख कंद ॥ २

सेवकनें साहिब करै वैसो अविरल वाणि ।
जिम वैनो सिरै चढै कोयल राखि सवाणि ॥ ४

अन्त— तिणि मद पीयस चाखीयो भाठ साषा विस्तार ।
संवत सत बावीसमें बीसमें हुई सुपकार ॥ १२

---

१ पहली संख्या क्रमांक और दूसरी ग्रन्थांक सूचक है। कोष्ठकके अङ्क गुटकाके अन्तर्गत रचना-संख्याके द्योतक हैं।

ते गछ धीस वीपतो साचोर नगर मझारि ।
वीर जिरणेसर वीपतो जिहां तीरथ प्रगट उदार ।। १३
तास पाटै अनुक्रमे हुआ श्रीजीवणीसागर सूरि ।
शिष्य करी कर्मसागर, वाचक वंश सनूर ।। १४
तास सीस पुण्यसागर, वाचक पभरणै एम ।
अंजनासुंदरी चौपई पूरण कीधी तै प्रेम ।। १५
संवत सोल सत्यासीऐ श्रावण मास रसाल ।
सुदि तिथि पंचमी निरमल रिद्धि वृद्धि मंगल माल ।। १६

सर्व गाथा ।। इति श्री अंजना सुंदरी चौपई संपूर्ण संवत १८६८ मीगसर कृष्ण पक्षे तिथी १ सोमवासरे द्वीतीय प्रहरे लिपतं ऋष नोलचंद पीही ग्रामे वषावत राज्ये वाचनार्थ वीरं मध्य थीरस्तु ।। श्री ।।

२४   १८२०   अंजना सुंदरी रास अपूर्ण

आदि– ।।ऐं ।। श्री गुरुभ्यो नमः ।।

राग–आसावरि रयण इम चितवइ सरसति सामिणी प्रणमिवइ ।
मोहन स्वामि चा पाइरे । अंजना सुंदरीची कथा नारि नर सुणउ मन लाइरे ।।१।
सील भवियण अमइ पालिवइ । पाइय सुक्ख संसार रे ।
सवि कुसंगति वली टालिवइ जाइय भव दुख पार रे ।।२।।

अन्त– धन धन अंजनासुंदरी सुमरिउ चिति चित्राम रे ।
सील समउ तिरिगई पालिवउ वसु गावइ ऋमिवास रे ।
सील समउ वलि पालियइ । ३६।।

इति अंजना सुंदरी रास समाप्त । लिपतं वषावस्य ऋषि बाई वीरो पठनार्थ शुभं भवतु लिपकः पाठक ।। श्री ।। छ ।। श्रीः ।।

२५   १८६१   अंबड विद्याधर रास

आदि– ।।ऐं ।। सकल पंडित मंडली मंडण पं० श्री ५ रविसागर कृति चरणेभ्यो नमः ।। वस्तु । सदा संपय २ कम ऊंकार । परमेष्ठी पंचे सहित । देव त्रिणि सदा सेवित । महाज्ञान मार्गदमय । बहुबीज सोभित वंदित ।

दूहा ।। सुवन त्रिणि गुण निरणमय विद्या चतुर निवास ।
ॐ प्रणमुं परमातमा सर्व सिद्धि सुख वास ।। १
परम ज्योति परमेस के श्री गुरु सारदमाय ।
आदि जगीसर संत जन नित वंदु तस पाय ।। २

अन्त– संवत सोलह सत्त चालीस । कार्तिक सुदि तेरसि सुभ दीस ।
सिद्ध जोग रवि वासिनी । अंबड कथा जोसइ मानिनी ।। १३
सद्गुरु पुरु सरीरे जोय । बुद्धि   सिद्धि सवि होय ।
सिद्ध देव गुरु सकति । गुरु भक्तिनी पामइ सक्ति ।। १४
गछ रस भई अंबड रासनी । सोता वगता जग पावनी ।
वीर कथा गावइ के सहइ । च्यार पदारथ सहजे लहइ ।। १५

जिहां लहइ अंबर अवनी थाइ । जिहां रवि तारा ध्रुव गिरि इंद्र ।
सागर सपत दीपनो वास । तिहां लगि रहो कथा परकास ॥ १६
उवेणिइ रहि चउमासि । कथा रची ए व्यास विमासि ।
विनोद भीर वृद्धि रस मात । पंडित रस मांहि विख्यात ॥ १७
भही पानना नाम पसाय । विद्या भणी भानु भट पाय ।
मित्र लाछवी सुखिया कालि । वांची विलास कीने रात्रि ॥ १८
कहइ वाचक भगत माणिक्य । मंडप कथा रस छइ वाणिक्य ।
ते गुरु कृपा तणो आदेस । पूरा सात कृपा आदेस ॥ १९
इति श्री मुनि रतन सूरीस । गोरख जोगिनी दीधा सीस ।
प्रबंध कथानेक आदेस । कीधा सात ते कह्या विसेस ॥ २०

इति श्री गोरख जोगिनी सम्य आदेश प्रबंध विद्याधर रास संपूर्ण । संवत १६६१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ भौमवासरे पं० श्री हेमसागर गणि शिष्य जिनसागर वाचनार्थं लिखितं पालनपुर नगरे शुभमस्तु ।

४० ११२४ (६) अगडदत्त चोपाई

आदि– श्रीसोभाग्यसंदरसरिणसद्गुरुभ्यो नमः ॥

आदि जिणेसर प्रणमुं पाय । समरू सरसति सामिणि माय ।
नर चोपईनी मागुं माय । सेवकनि देवो वरदाय ॥ १

अन्त– अगडदत्त मुनि तणउं चरित्र । भणतां सुणतां हुइ देह पवित्र ।
पंडित हर्षदत्त सीस इम कहइ । भणइ गुणिते शिव सुख लहइ ॥ १६

इति श्री अगडदत्त मुनि चउपई संपूर्णा । लिपितं ज्ञानचन्द्रेण भाइ राजल पठन कृते ॥ श्री पार्श्वनाथ प्रसादथी शुभ संपत्ति हु ॥ श्रीरस्तात् ॥

४१ १२६२ (१४) अचलदास खीचीरी वारता

आदि– अथ अचलदास खीचीरी वात लीख्यते ॥

गढ गागुरणरो धणी अचलदास खीची गागुरणमे राज करे छे । राजा राजने घरका चैन करे छे । नमरीरो मोक वडो । तीण राजारे राणी लाला मेवाड़ी छे । चेहूस मेवाड़रो राणो मोकल छे । तीणरे बेटी लाला तीका अचलदासजी खीची परणीया छे ॥

अन्त– घणा बरस लग राज मलोई कीधो । वतरे मृद अचलदा आय लागी छे । तीण समै गढ मांडुवडरो पातसाह हमीर सुलताण गढ गागुरण उपर चढने आयो । तरे अचलदासजी खीची गढ छडीयो छै । घणो दीन सुधी वेढ कीधी । अमी जुगतनु काम आयो ने लाली मेवाड़ी ने उमा सांखलीरो समलो वालो ने दोड सतीयां हुई । परचमी मांहे मोटो नाम मो हुवो ।

इति श्री ठाकुर अचलदास खीचीरी वात संपूरणं ॥ सं १९७०रा असाढ सुद १२ र गुरौ हीराचंदरा छै ॥ श्री ॥१॥

५४ १२४६ (१८) अजीतसिंघजीरी वारता

आदि– वार्ता । महाराज श्री अजीतसिंघजीरी । महाराजा श्रीअजीतसिंघजी पातिसाह श्रीफरकसाहरा बिना हुकम मरजबासु गुजरातसूं पाछा देसमें पधारीया नै पातिसाहजी विपरस थया । विपरस मुहमसरत करि पातिसाहजी सिखी आवा । संवत १७६६ पछै पातिसाहजी मारवाडि उपरा मुहम महाराज मै आदेसी लिखा कीधी । लिखाय हुसनअलीयां तिको मोचीवारै वास डेरा पडा हुवा ।

अन्त– तरै भंडारी कह्यो महाराजकवार पातिसाहरो हुकम मानै नवाब ल्या । अवतम्म सारा मति नै कुमति उपजै । वराहीरै लालच अभैसिंघजी बखतसिंघजी उपरा पर दोनो लिखीया । आसरा दोना आया मारवाडिमें आयो पाय दी । नागोर मेल्हो बाहरो दै । महाराजसु चूक करिस्यो । महाराजरै आडेवास सोमो आयो थो । तिको महाराज परलोक मैं आरेचीजीरा मेहला मोडीया था । तिण रात्रि महाराजसु ऊपर बखतसिंघजी चूक कीयो । संवत १७८१रा आसाढ सुदि १३ मंगलवार चूक कीयो अजीतसिंघजी नै मारिया नै अठै पातिसाही थयी ।

इति महाराजरी वार्ता ॥१२॥ श्री ॥

५५ १२५१ (४२) अजितसिंघजीरो कवित्त

श्री ॥ महाराज अजीतसिंघजीरो कवित्त ॥

राजलोक रिपगुण जिस नवखंड प्यारी संग वहेली प्यार अगन ।
किनान उजारै आरै गाईस्यु वले वले मन अचरजे मण ।
हावल चेडी हुवै हुवै वीर जसी हनुराण ॥
पतरो पोल नागर उठी भन आई मृत भामीयो ।
सीवर्वत भजन उठीयो बहिय दैन वरपतलोक सिधाइयी ॥ १
मारीयी सैप महाराजरै माहाराज पूंछणी मरै ।
मोहकमसूं नाह मुग्री सैण मुहकमने मारै ॥
समदासुं नाह मुग्री सैदा सोमर संभारे ।
पतसाहांना मुग्री पडि उठी पतसाहां ।
वाघीनी पण नई मुक भरीयी दाम राहे ॥
चोवाल बाघी नाह राजरो कुण दीएणसु मारण करै ।
मारीसो नेम महाराजनै महाराज कुणसुं मरै ॥ २

ईती कवित्त ।

५६ ११६८ (४) अजीतसिंहजीरा सीलोको

अथ अजीतसीघजीनो सीलोको सीखते ॥

माता सरस्वती मोटी महामाई । दीजै वो समरथो कमणा नहीं काई ।
कहीयो सीलोको गुणस्यी हिए कायो । महाराजा अजमालरो वधायुं पाजो ॥ १
महाराजा बैठा नागोर माहे । पतरथा भागमनें आयुं श्री पाएं ।
अब दीप नागोर दीलीसुं आया । पतस्या चोरमने मांप पूंहचाया ॥ २

अन्त– समै ईक्याईं भासाड मासो । राजाजी कीयो देवलोक वासो ।
कोई नीमोको पेमोजी छाजै । जो ध्यान धरै धरिबल बाजै ॥ ११

ईती श्रीपदमीतमीचजीको नीमोको संपूर्ण ॥ मिती वैसाष वदि ११ सव १८४८ का सीषत मेमविज राज्यामध्ये वस बीजैजीका पेला मेमजी लीष्यो छे वासमें लीयी छे वांनको भाव रयौयो १) मेर १६ व ला वदि वा पीई ॥

५४ २८६३ (१२७) वमहिल्लवाडपत्तनराजावली

आदि– सवत् ८०२ वणराज पाउवह वणहिल्लवाडह पाटण वसाविउ ॥ साठि वर्ष लगइ राज्य पालिउ । एव ८६२ भाऊयउ जारिउवउ । तेह नइ पाटि योग राजा नइ राज्य हुर्ज । वर्ष ३५ लगइ राज्य पालिउ ॥

अन्त– श्रीकुमारपाल राजा राज्य वर्ष ३१ एव संवत १२३१० । तेह नइ पाटि अजय पाल राजा राज्य वप ३ एवं १२।३३ तेह नइ पाटि बाल मूल राजा राज्य वर्ष २ एवं सं १२३१ । तेह नइ पाटि भीमदेव राजा राज्य वर्ष ६३ ॥ इम सोलकी ११ पाट पाटणि नगरि राजवी हुया ॥

५५. ७७४३ अध्यात्मरामायण भाषा

आदि– श्री गुणेसाये नीम ॥ सुरसती नीमो ॥ श्री नीनारामजी सत छै जी ॥ श्री रामाये नमा ॥ अथेनं अध्यातम रामायने भाषा चोपई रामहृदय ॥ राम श्रीरासैलजी समागीत ।

चौपई– जब भव भार भयो पृथ्वनै । तब ही देव गये आचन प्रभूर्ण ॥
चिदानद सुंनी बदन बानी । परआपते प्रसतुते ही ठानी ॥ २
हीम मुगत सत सेवे मयवाना । चीदानद यमहो सब जाना ॥
मेघ गिरा बांनी जु उचारी । सुनीक क्षमा सते बीचारी ॥ २

अन्त– दुहा ॥ राम हीरदैको राजैसानीते प्रीते करनै उचारै ।
नीम्पाराम हीरदै अर्सग्या सभै भाहे बीचारै ॥ १२
राम हीरद भाषा अरथै कीनो मने वु म मानै ।
मुनी क्ह रीजै न गारी है क्रीप मने भपमानै ॥ ११

ईती श्री अध्यातम रामायणे रामे हीरदये भाषा अरथ संपुरण ॥ अमेने महाराजे श्रीराम नीषमी ॥ सुभ समुस्तै ।

५० २२ ३ अध्यात्मसारमाला

आदि– ॥र्द०॥ ॐ नमः परमात्मने ॥
दूहा ॥ श्री जिन वांणी चितु नमी कीजइ आतम सुद्धि ।
चिदानंद भूप पामीई मीटि अनादह अमूढ ॥ १

अन्त– इम जिनमत धारावो काज सारो भविक नि गुणी भावना ।
गुणि ठाणि वाचो गुणो सारो करो निज मति पावनी ॥

अध्यातम गुणनी एह माला । भविक जन कंठि ठवो ।
जिम लहो मंगल लीलमाला प्रबल अनुभव अनुभवो ॥ १
इति अध्यात्मसारमाला संपूर्ण ॥ ग्रं० २७१ ।

६६ १२४१ (८) अनंतरायसांखलारी वारता

आदि– ॥६ ॥ श्रीगणपतये नमः ॥ अथ वार्ता– अनंतराय सांखलो उगो बाबो भैसो चरवहीयो तिणरी वात लिख्यतै ॥ अमुहरै विषै कोल्हापुर पाटण । तिणरो धणी अनंतराय सांखलो । असवारी सीणरो बडो मद । बडी जमीतरो धणी छै । तिणरै एकसो एक भाई भतीजा छै । तिके सह माहे बसा रहै छै । कुस्मी बडा चाकरी करै तिणा कनै असवारी नै घोडो १ नै पचास १ सावडदपे आरा आदमी ४ कनै रहै ॥

अन्त– दूहो ॥ महमद सु मन बांण धके न बारै बेमडो ।
बेमा बडा बधोन करता जग कपाट उत ॥१॥

बात ॥ पातिसाह पचाम चमवारांसु महमदाबाद आवो । बीजा सो २ । बेहाजीरै बरसै बहोल्या । संवत् ११ माहे हुउ । इतरू पुरी पुरी वाणीयारी बात संपूर्ण ॥२॥ श्रीरस्तु ॥

६७ २१२६ अरजनहमीररी बात

आदि– ॥ॐ ॥ अथ बात अरजनहमीररी बात ॥ अणहिलवाडै पाटण गोहिल भीम राज्य करै । गुजरातमें बेगडो महमंद राज्य करै । बेगडो महमंदसु भीम लडाई कीवी । भीम काम आयो । बडो बेटो अरजन । लहुडो बेटो हमीर बाहरा भीमजी काम आयो ।

अन्त– आवर लगै समारि, मार्थ पांन मथूरई ।
तन बहु रे तरवारि, मुह सब पुंहवी भीम उत ॥ ११
छोहडे सीरठी ए, गुरमातन पाटण तर्ण ।
ने पडकी गुणमेह भारथ म्हीरो भीम उत ॥ १२
इति अरजन हमीररी बात ॥

१२७ २१७७ आर्द्रकसंधि

आदि– ॥ॐ०॥श्री॥ वरधमान जिनवर चरण नमतां नव निध होय ॥
संधि कहूं आंजरनी सांभलिज्यो सहु कोइ ॥१॥

अन्त– संवत सिमि सिधि रस मिति तिण पुरी माहे किधी चउमास ।
ए नवप निय पर मिसा भणइ गुण तापाम उल्हास ॥४६॥सन
इति श्रीआर्द्रकसंधि संमाप्तं ॥ संवत १६९९ वर्षे माहे फागुण विदि द्वितीया गुर वारे श्रीराजनरेसरमध्ये ॥ श्रीमालजी लिपाइतं ॥ यादृशं पुस्तके दृष्टं तादृष्टं लिखितं मया ॥ यदि शुधम शु वा मम दोष न दीयते ॥१॥ लिपत ब्राह्मण हरपा ।

१६१ १४६७ आरामशोभा चोपाई

आदि– ॥ॐ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
दूहा ॥ प्रह उठी प्रणमुं सदा पारसनाथ पसाउ ।
महिमा धणी गुणठाण मह, दीठां दुरत नसाउ ॥१

श्री जिनकुशल सुगी मतउ ध्यान धरू चित लाइ।
ईहक भास्या पूरवइ, इ जम विरद कहाइ ॥ २

अन्त– दशासार महइ सुख भरपूरा। दिन दिन है तप पूरा थे ॥२१ सं

इति श्री सम्यक्त्वाधिकारे श्रेष्ठी आरामनंदन पद्मावती चउपई समाप्ता ॥ सर्व ६२१ क क क ढाल २७ ॥सर्व ग्रंथाग्रं ८२१॥ संवत् १७४१ वर्षे माघ सुदि ७ तिथौ गुरुवारे महाजन मध्ये लिपत विजयसुंदरेण ॥

१८६ १२४१ (१६) आसथानजीरी वारता

आदि– अथ राव सीहाजी पुत्र आसथानजीरी वार्त्ता ॥ राव सीहाजी तो कनवज धंगसराय हुवा। सोलंकणीजीरै बेटा तीन हुवा था। आसथान १ सोनिंग २ अज १। कनवज टीका रावत अर्जाण हुई। तरै पाटण सोलंकनै परणीया । तिके पाधरा घर मजले पाली पावनै उतरीया। तरै श्री जिणदत्तसूरजी ब्राह्मणानै कह्यो थे बडा रजपूत छौ। मारवाड़ि माहे हजार बरस राज करसी ।

अन्त– संवत १४१८ तठे पछ राव चूंडै मंडोवर लीवी नै राजथान थाप्यो। मंडोवर ईदाँ चूंडाजीनै हथलेवामें दीवी। पछै रावजी मंडोवर उठायनै आपरै नांवै चिडीया टुकरा भाखर ऊपरै गढ करायो नै जोधपुर बसायो। संवत १५१५ जेठ सुदि ११। तठा पछै जोधपुर ईज राजथान छै। इति आसथानजी वार्त्ता ॥

१६७ ६ ७ इलाचीकुमार रास

आदि– ॥र्दं ॥ ऊँ नमः ॥ श्री ॥

दोहा ॥ सकल सिद्धि दाई सदा प्रणमूं जिणवर पास।
ईलाकुमर ऋषि गावतां आपै वचन विलास ॥ १

अन्त– इसी ऋषि संजम सोभी लीधो। ए अधिकार सह सीधा छे ॥ १२
तिसकी न्यून अधिक जे भाषित। तेमि आयुस्कड मइ भाख्यौ छै ॥१४॥मा
प्रभावर सकर गुण भाष्यो। जिसनेस तस विचारयो छै ॥१५॥मा
संवत सतर इगतीसा बरसे। चेत पूरि मनहरषि छै ॥ १६॥मा
आसो सुदि तीजीया दिन सारद्। हस्त नक्षत्र गुरुवारे छै ॥१७॥मा
ज्ञानसागर शीह सम भासीसा। दिनि दिनि दुख्यो सुजगीसा छै ॥१८॥मा
जह जानिवि साधु चारित्र पामें। ज्ञान दरसण अनु पामें छै ॥१६॥मा

सर्व गाथा १८७॥ इति श्री भाव विषय इलापुत्र इलाची रास संपूर्ण ॥ संवत् १७४१ वर्षे मागसर मासे कृष्णपक्षे १ तिथौ बुधवासरे श्रीजोधपाणंदरमध्ये लषितं। मुनि कुंभर कुशलेन कल्याणं भवतु ॥श्री॥श्री॥

२२४ २२११ (२) उपदेशसत्तरी

आदि– ॥र्दं ॥ उतपत जिम जोम आपणी मन मांहि विमास।
गरभावासै जीवडो वसीयो नवमास ॥१॥ उतपत०
मारि तणीना मात सी विलपपने जोइ।
फूल तणी जिम मालणा तिम माझी खोई ॥२॥ उ०

अन्त– कलस ॥ ते श्रीनेम धरम विचार सांभलि लिए संयम भाव ए ।
परिसाह केरी सया पासी नेम निरतीचार ए ॥७१॥उ०
संसारना सुख सकल भोगवी ते लही भव पार ए ।
श्रीरत्नहरख सुपसाय रंगी इम कही श्रीसार ए ॥ ७२

इति श्री उपदेशसत्तरी संपूर्णम् । सं० १८६८रा मिती आसोज वदि ४ दिने पं० श्रीकर्मसुन्दर कामुवासे उपदेस यती ।

२१८ ११२२ (१७) ऊंट तथा हाथीवर्णन

आदि– सुविसाल सुमाल जिके अति सोभित पाट सुघाट विख्यात बहुवा ।
बडी भाल सुभाल सुलंत अजानय पंत म वास बके वकिया ॥
जिते पक सुद्ध भला बखता दीय कुरंगह वेस पंखी क्रमता ।
जस मैंस वीड प्रमाने सहरी इल्लो बधवका मदिरा घुमता ॥ १

अन्त– पट वेस उद्यारिव मस्त गेंद बर कोप तणा ग्रहणा कमरा ।
बन वे मन,एच्छित सुम भला पण जाप ये जाप जिके जहरा ॥
गढ तोड पाहाड विहाड कुरसम म्हार उपाड वहे वलता ।
गजराज जिहें पकसिव अभनव देत जिसा हुसियार हुता ॥ २
इति हाथीना समाप्त ।

२१९ २११० (८) एकलसिंघ बराहरी बात

आदि– ॥र्द ॥ अथ एकलसिंघबाराहरी बात लिख्यते ॥ जंबुदीप भरथ षंडमें मध्य सिरदारो सिर मरवर । मरवर किसकोहेक छै । इण दूहा लिखजी ।

दूहा ॥ वनस्पती पायर घणी धरणीया टूक विहर ।
घटा विधूपटा नीझरण आवो नव मरवर ॥ १
अमूंगी सूंधी घटा सपर वणीया सर ।
सगसासूं साथा सीये आजुं मरवर ॥ २

अन्त– वाराणो नाम आयो मूंहण मती हुई । ब्यार वेसरा काम आया । पांचमो वेसरो आवुधी रहसी । महाराजजी श्रीसरवैने मारताहार हुसी । स्त्रीपोषवरांराया वचन सत्य हुवा । फूठाने हुवे रायजीने मारसी । वोड पायमे घरें पधारीया । उमरावांने सीख दीधी । सुवरो कदके मारताही डेरे साथ आपरे गया । महाराजजी श्री श्रीसम्भवेजी दरबार पधारीया । सुखमें रहे छै । फलाई हुई ॥

इति श्री वाराणो बाराहरी वार्ता संपूरणा ॥ श्रीरस्तु । कल्याणमस्तु ।

२२० २३ एकाक्षर नाममाला

आदि– श्रीपार्श्वनाथाय नमः ॥ अथ एकाक्षरी नाममाला लिख्यते ॥
दोहा ॥ वरद्ध वकारस विलसई पुनि महेस मतमान ।
मा बाहाई कहत हैं, ई जुगमा रमा जान ॥ १

अन्त– त्रिभुवन गुरु मुनि तरक घट पहाडमाहि पुरान ।
नाममाला एकाक्षरी भाषी रतनू जान ॥ ३४

इति श्रीबडोईरा रतनू श्रीरभाण कृत एकाक्षरी नाममाला सपूर्णा ॥ सं० १८५६ मा सें श्रावण दिन १ रषो(षी)लिपिता श्रीगोडीजी प्रसादात् ॥

२१० १२८१ श्रोखाहरण

आदि— ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रोखाहरण लिख्यते ॥

राग रामग्री ॥

श्रीशंभूसुतने पाये लागुं जी । मन क्रम वचनें सेवा मागुं जी ॥ १

चतुरदस लोक जेहनें मांने जी । तेहना गुणसुं जपीये पाने जी ॥ २

ढाल ॥ पाने लष्या आवे नही श्रीगणेशना गुणग्राम ।

सकल कारज सीध थाये सुप जतां नाम ॥ ३

अन्त— पछे श्रोषानें श्रीदाय आपी वरत्यो जयजयकार ।

श्रीकृष्ण पधारया द्वारिका परणावीने कुमार ॥ १६

ए श्रोषा (ह)रण जे सांभले तेहना ताप जन्मे जाय ।

भट प्रेमानन्द केहे कथा समरो श्रीयदुराय ॥ १७

कडवो ॥२६॥२॥ श्रोषाहर्ण संपूर्ण ॥ समाप्त ।

२११. २३०६ (२) कृष्णध्यान

आदि— अथ कृष्णध्यान लिख्यते कवि ईसरदासजीरो कह्यो ॥

निरषे आदि रूपनिधान । कोट मनमथकी छिब कांन ।

माथै मुकट चपला मोर । बेरव मदन मुरली घोर ॥

भाल बिसाल श्रोभ कपोल । राजे भानु-कोटकी श्रोभ ॥

भृकुटी भ्रू ह बंक कबांन । भलकत कुंडला श्रुत भांन ॥

अन्त— श्रोभत चरण अंकुश भाल । तिम चिन्ह उर्ध रेष बिसाल ॥

जव तिम ध्वजा चक्र पदम । तिनसें कटति कोट करम ॥

निज पद लाग रज भर बात । तिनकुं ब्रह्म सिव ललचात ॥

पेमत बाल रूप(प)मभ्रार । गोकल गांम नंदकुमार ॥

तिनके चरण दै लप घेर । ईसर बार वारम्बो फेर ॥ १९

इति श्रीकवि ईसरदासजीकृत कृष्णध्यान संपूर्ण ।

२१२ २२११ कछवाहोंकी वंशावली

आदि— ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ कुछवाहोंकी वंशावली लिख्यते ॥

श्रीआदिनारायणर्त कमलर्म ब्रह्माजी ॥१॥ मारीच ॥२॥ कश्यप ॥३॥ सूर्य ॥ ४ ॥ वैवस्वत ॥५॥ मनु ॥६॥ इक्ष्वाक ॥७॥ विकुषि ॥८॥ पुरंजय ॥९॥

अन्त— महाराजाधिराज जयमाल मोहोलसिंघ सरवसका राजाको बेटो गो राज पायो । वदि मानसिंघजी नाम पडयो । मीती पोस वदि ६ सं० १८७१ का । राज कीयो महीना ४ दिन ६ ॥ माहाराजाधिराज श्रीसवाई जयसिंघजी संवत १८७० के साल श्रीजमेजायजी पधारया जाति देवा । सब मार्ग्या साथ पधारी मीती असाढ सुदि ८ संवत १८८४ के साल ।

२०८   ७७२० (१९)   कपटकुतूहल

प्राय सब खण्डित है। उपलब्ध रचनाका प्रारंभ इस प्रकार है—

कि पिर्सण पर सू दर शोभियँ बाम ॥ १३
मसी कर सु मी मन भयो प्रीत कीजिए मोताय ।
माम मु ईबीये मीजिय सो माहरह आवी दाम ॥ १४
तन सुपकी साझी चली कंचु बध्यो सुचंग ।
रतन जरीत मीज्यी सेली सुदर अंग ॥ १५

अन्त— कवीयो पेम पत्रीकको कीयो पेम तीयार ।
जिए बेरो मंदिर मई प्रीत मारात तिरिय बार ॥ ११
प्रीयांव मेमदास सुत नगर जयपुर बास ।
कपटकुतूहल कीया कवी देहि दुवास ॥ १२

इति कपटकुतूहल संपूर्ण ॥

२६२   २०६२   करयणु चोपाई

आदि— ॥र्व०॥ नमो अरिहिंताणं रिसिह
जिलहतु पमकमल विमल चित्त पणमेसु ।
बहमाण जिणा नमि कोई एक कवित कहेसु ॥ १
रिसह भरत जिण तप किया बहमान सन्मान ।
भरनी बिम्मायाहसउ नामह चरित्र बम्न ॥ २

अन्त— श्रावक मधिपर दम कहइ, भणइ ते संपद लिच लहइ ॥ ७४
इति करयणु रिषि चउपई श्रमप्रमिपड सेप्पक पाटदे सूर्व मविनु ॥

१०२   ११११ (१२)   कल्याणक

आदि—
दूहा ॥ पहिलु प्रणमिमि भारती बयु करि वेगा नाद ॥
पादीस्वर आदिई करी, माहर्म कर संनाद ॥ १ ॥
नाभिराय कुलमंडणउ मुझ देवी उरि हार ।
कुलक धर्म निवारणउ आदिई आदि कुमार ॥ २ ॥
बीम आप पुरब मही अपरपदि सुविलास ।
जिम विमाण पुरब विगई नीपत राय रसाम ॥ ३ ॥

अन्त— होइ कर सब जिनेश्वर करथा माय सरिस अवर मनहरिया ।
श्री श्रेयांसकुमर आणंद । प्रथम पारणु प्रथम जिणंद ॥ १४ ॥
हुई वृष्टि सो धन त्रु धार । दुंदुभि देव करइ जयकार ।
मुनि आवश्यसमय वहइ जाय । विहार संवति तहां सुप होय ॥ १५
संपद लहीइ वननी कोडि । नंगइ अंग न आवइ षोडि ।
मंप समणु न बापड रही । मंप भणाणइ मीजिन मती ॥ १६
इति श्रीआदयजदेवपारणाधिकारे कल्याणक संपूर्ण ।

१०९. ४०२० कवित्तबावनी

आदि– ॥ ६ ॥ अथ श्रीसारकृत बावनी लिख्यते ।
ॐकार अपार पार तसु कोइ न लभ्भै ।
अक्षर कर सिरताज मंत्र धुरि कवियण्भ्भै ॥
धरचर्वक आकार उबरे मीठो यसु सोहै ।
जै ध्यावै चित लाय तिके त्रिहुयण मन मोहै ॥
साधक सिध योगी जती जासु ध्यान अहनिस करै ।
कवि सार कहै ॐकार जप कोइ रैण भूलो फिरै ॥ १

अन्त– सिंधे मंडल क्षिति तिलक सहर पालो पुर सोहै ।
मठ मढ मंदिर महिल बाग वाडी सनमोहै ॥
राज करै जगनाथ सुर सामत र सबायो ।
सोनगरे सुधमन सुबस बसुधा बर तायो ॥
संवत सोलैनिभ्यासियै आसु सुदी दसमी दिन ।
श्रीसार कवित बावन कह्या सांभलिज्यो सर्वे मन ॥५२

इति श्रीकवित्तबावनी श्रीसारकृते संपूर्ण । शुभ भूयात् ॥ श्री संवत १८७९ रा वर्षे फागुण सुदी १० स श्री श्रीगुरांजी श्रीबेगराजजी । लीपतं कु दानमाण वाचनारथम् पालनपुरमध्ये ।

११०. ४६११ (१६) कागदरी नकल

इस गुटकेमें पत्र सं १६८से पत्र सं ४६ तक चार कागदों(पत्रों)की नकलें दी हुई हैं जो इस प्रकार है—

पहली नकल आदि– कागदरी नकल ।

छंद नराच– भले हुए सांभर नगर सुवरं । प्यारी निज हाथ दियो पतरं ।
शुभ बांन कथानक सुंदरियं । प्रिय गात अनंत चित हरियं ॥ १
धनिता सर निरखर नीर यहै । अवनि सुंभ बास धरै र तहै ।
बहु बास निवास न कुंर बनै । बनिता मनि नीर सुनीर बनै ॥ २

अन्त– दिन जात वृथा तुम संग बिना । कबहु सुप होत न आप बिना ।
कहता न रची समचार सबै । सु मिथ्या तन मांगहु भांम कबै ॥ १७
न मिले तुम पत्र सनेह घनो । पय जावनकी तुम रीत मनो ।
युग रांम वसु ससि संवत यं । शुभ मास तपी सरस चरयं ॥ १८ इति ॥

दूसरी नकल– [संवत् १८१४]

आदि– कागदरी नकल लीपते । स्वस्त श्रीमथुरानगर शुभाने सुकल शुभ ओपमा बिराज थ्यारी प्रेमरसप्यारी, चन्द्रवदनी मृगलोचनी गजगती सती चौवरी जरी हियारी हार, सेजरी सिणगार, प्रीतमरी पीसार, चितरी ऊदार, हंसवधूणी सदा सुखी ।

अन्त– सबसरपी मारी नहीं सबसरपी नहीं नाण ।
सब गुण एकमें नहीं दादू चतुर सुजाण ॥ ६२
इती धोपमा लिपगरी अभाबोस मत जाण ।
कहत मुनीमन गुण घू सब गुण परवाण ॥ ६३ ॥ संपूर्ण ।

तीसरी नकल–

आदि– मिन श्री प्यारी बीबी बेपुर नगर बसेह ।
श्रीतम लिपत सलावक नित २ नवली नेह ॥ १
चंदवदनि मृगलोचनी, विना लंक सुवेष ।
गजगमनि रस बोल है, प्रति बाण सुपथ ॥ २

अन्त– बाहु उतर देवो सदा कायर अधिक उबात ।
हित कर लिपजो हेतसु उनकठ अपणा पाय ॥ १० संपूरण ॥

चौथी नकल–

आदि– मिन श्री उपमलोपमा विराजमान अनेक श्रोपमा लायक गुणनिधान महीपर कलागुणांस सबई विद्यानिधान सूरज जैसा तेज चन्द्रमा जरवि जिसा हेत चंद्रमा जैसा सितल स्ना जैसा उजला ।

अन्त– मन किणहिसु मानजो नेणमहंजो नेह ।
पूछे न पूछो नीसरे, जसी सुरंगी देह ॥ १८
उदन फलजो फूलजो बड पु पीपलरखा ।
नामेरा सु सुनजा सोधा पु फलजो ॥ १९

इति श्रोपमी संपूर्ण ।

१११ १२६२ काया-नगरको कागद

आदि– अथ कायानगररा कागद लीषते । सीध श्रीसुरगपुरी सुभ सुथाने सकल सुभ्रोपमा श्रीराजमानान राजराजेस्वर माहाराजाजीराज महाराजाजी श्री श्री १०८ श्री श्रीवरमराजजी सनराजजी सदाचारजी जो चरणकमलानु धोक कायानगरसु लीपतु कंकर दामायाद ममतासुर संवरसुर श्रीवपुरनरो नमो बीनत बचावजी अठरा समाचार भला छै ।

अन्त– सेवक उपजीत नहीं बोपा उपर एक । (१२१४)
मर्यादा कर थोडी बीनवे साहब राखे टेक ॥
चाकर चीतो चाकर करण रयो नहो चोर ।
थोर ठोर नाम नहीं दीया सब चनो हेम(२) ॥ १

इती कागद संपूर्ण ।

१४२ १२७४ (२) काष्टजीवा बिरमजीकी बारता

आदि– श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीकाष्टजीवाकी बारता लिष्यते ।
चोपाई ॥ हरवि हरे गुणपतिनु नाम । अथ लिपत पौठानो ठाम ॥

तेन व्यजामे बिजो कोय । तेह पालक एक अपरछ होय ।
समीपे माण्यु देहक । वी राजा ये हेक कह ॥
माहि बेठा एक दिठो पंग । तेहनु भरचा उपर मंन ॥ २

अन्त– विक्रमसेन मोटो राजंन । कहे पूतली सुणो भोजराजंन ।
एवो को थया स्ये नहीं । ते सींघासण बेसे आई ॥ १०२
एह बात पुतलीये कही । पछें आकास मारगे सही गई ॥ १०४

इति श्रीराजा विक्रमजितजी बारता काष्ठपोतामी संपूर्ण ।

४०२ ११२२ कुतुबशतक

आदि– ई० ॥ हजरती दान सबंधकी पवी देवस नाम ।
साहिबसा सुरतियां वर बोलीये कलाम ॥ १

एक दिवसि साहिबां हजरतीपूं वाला पुलावती की बहसी प्रसाद कीया । साहिबां तुमकुं क्या उपगार करू । हमई क्या उपगार करहुये । हमारे बडाबूढाके उपगारु करउ । तेहउ अवर क्या उपगार करहुये ।

अन्त– जिन ही जीव मरगमीया ज्वलन भई जल जाइ ।
कहा सुणाइ कुतबकी रहइ सु पावउ साहि ।
सुलतान फुरमान दीना भेदु करे गोप पर बीना ॥
फकीर मूटसाह बामे साधा भेवामे ।
बाजे बाजत बजबीयो हुवे हुवरि काई ॥
जिमी जीव कुतबकी जिन गामना न जाइ ।

इति श्रीकुतबशतं समाप्तं ॥ श्री ॥ संवत् १६७० वर्षे वशाखमासे कृष्णपक्षे शनिवारे श्रीमत्तामपुरीय तपागच्छ स्वच्छसुगुच्छसुगच्छमुग्माबत सकलबलसपराणां श्रीअमरकीर्तिसूरीश्वराणां शिष्य धर्मकीर्तिना लीखित ॥ श्री ॥ बेला सांकरसी ॥ श्रीः ॥ श्रीनामपुरमध्ये ।

४०३ २८११ (१०३) मुंजा-भोजसंवाद

वर जिहु नाछह जामियें वरियामउ धण भाउ ।
अवला साथि न तोमियी तिहु मबउ अजमाय ॥ १
रीति बसंती हु भनी रातउ सम्भ सरीर ।
कालउ मुह तब पाहयी परसित पुरुष सरीर ॥ २
सुणि मुंजा कवन भणइ, हमि तुम्हि मही निसीस ।
पछसिहु नासणु नीसरी तउ भामुव मुह रीस ॥ ३
सुणि कंचणु मुंजा मणइ हमि तुम्हि एहि मरीस ।
पहचि समुंदर नीसरी तउ भम्माइ कुल रीम ॥ ४

४०४ १२४६ (१७) चितोड जोधपुर आदिकी ऐतिहासिक हकीकत
आदि– ॥ई०॥ संवत ६ २ चितांगदे मोरी चीतोड बसायो । संवत १११ प्रताप

रीम पातिसाह पदमणीरै सीवै पामो नै योरीवारम मवीया । संवत १६२४ पछा वरसिंघजीसु चीतोड़ छूटो नै पीसोला-तलाव उपर उदैपुर वसायो ।

अन्त– संवत १६०० राव रांम काल कीयो राव दुगरसी टीकै बैठो । पछै राव मालदे दुगरसीनै देसनै होलीयारी रामति मांहे मारीयो । पछै राव मालदे फलोधी मोल भेरी । दुगरसीनै पिण साथे ल्याया । कोट दुगरसीरै रजपूत जगहुवे देपावत संभायो । घणी वढ कीवी मास २ ताई । पछै रावजी दुगरसीनै बोहतो करण मांणा । तरै दुगरसीजी जगहु रा देपावतनै कहस्यो । तु कोट परोटे तरै जगह पी कहुी हूं थारै हाथ कूची देइस । तरै दुगरसीनै बोल थारै ले गया । जगहुवे देपावत उगरसीरै हाथ कूची दीवी । उगरसीजी राव मालदेनै दीवी । तरै राव मालदे गढ लीयो । दुगरसीनै परो छोड दीयो पछै दुगरसी कांनी होइ गयो ।

६०१ २८६६ (११७) चंद्रगुप्त सोलस्वप्न सज्झाय

आदि– ॐ नमः ॥ हुरपद प्रभु गुरु प्रणमी करी स हिमवड घरी ।
सोलह सुपन तणी विचार तला धवि सुण भाइ ॥ १
भरतक्षेत्र पाडलपुरि राजा चंद्रगुपति अभिराम ।
निसि भरि देखि सुपन जे कहिया सोलह सुणिजो अनुक्रमि कहिया ॥ २

अन्त– संवत सोलहसह बासी वसुदि पंचमि वदीस ।
राजसेखरि सेवा एह सिज्झाय हीर रिषि कहइ ॥ २०

इति श्री चंद्रगु ष्ट सोल स्वप्न सिज्झाय ॥ लिपतं हेमराजेन ।

विशेष—गुटका अत्यन्त जीर्ण एवं त्रुटित होनेसे इस कृतिका अधिकांश खण्डित हो गया है ।

६०२ ११४६ (११) जगरा मुपराकी वार्ता

आदि– अथ वार्ता १ जगरा मुपरारी लिप्यते । पश्चिम दिसमै पटण गांव छै । तठै मोटो बादी राज करै । तिणरै बोह बेटा हुआ । एकणरो तो नाम मीयो । दूजारो नाम देवो । गांव २॥ उप १ री बम्भी । घणां रजपूत गांव २ रा धनी रहै छै । असवार हजार १ री साहिबी । तठै अका उणीरै भीयानै परणायो । देवो पिण परण्यो । तठै बरस १६ मांहे वो मीयो हुवो ।

अन्त–
दूहा ॥ पूटी ताई पांमाइ जिसौ न बायो जपरो ।
मिलै न पेखे ताहु, माटी दूजी मावुवा ॥ १
बेह बाजार बिमाइ, आविक मधु पीवै नहीं ।
पूटी ताई पामाइ जिसौ न बायो जपरो ॥ ९
पाहरीया पहलोइ आव दुइरणो जपरो ।
मर बीजा नर मोह, आण्यां हसि आवै नहीं ॥ ३
आ इतरी बात जगरा मुपरारी कही ।
मुरबीर बाजार, तिणरै सम नहीं ॥ ४
इति वार्ता संपूर्ण ॥

१०४   ११२२ (१)   जगदूजो छंद

आदि– ॥र्द ॥ अथ जगदूजो छंद ॥
प्रथम रूप देवी आदेस । आपोआप प्रथम आदेस ।
आदि जुगादि नमो आदेस । अपर सपर देवण आदेस ॥ १
ब्रह्मा विष्णु महेसर पाया । मोह जाल जिण जग मंडाया ॥
धाम कुमारी विष्णु उपाया । तु मोटी माता त्रिपुराया ॥ २

अन्त–
कलस ॥ माकारो मुष नहीं थांन वद वरणां वेणो ।
दे दे कार दुवार मोम जाके जस लेणो ॥
अंसमनें उछरंग मला गुणगीत भणावे ।
प्रोअवास भूपाल आज कुण सम कढ आवे ॥
सातरणेस कम्म कीतो कई मेर समोवड काल मन ।
वाला रसको आवे धुनी तिम जगदू प्रथमाल धण ॥ ६
इति जगदू नवावरवालानो छद सपूर्ण ॥

१०५.   ११२२ (१८)   जगडूसाहनो जस

आदि– अथ महेसर भाखो जगडूसाहानो जस ।
छप्पै ॥ मूढा आठ सहुस्स दीध बीस सवण वीरै ।
बार मूढा सहस्स दीध सिधवे हमीरे ॥
मंडपवे मुजतांन सहस मूढा इग बीसे ।
मालव पत्त अठार मने मेवाड बतीसे ॥
राजां सवार इम पर हुमी संवत बार बीमोतरे ।
बदडवे साह सोला तणे करी प्रसध पनरोतरे ॥ १
मरण बकी संबरपो वेस पूछो वकालह ।
गाार सरवे मलमल्या बार पोहती बीमालह ॥
धर्ने करपो आकलो बारतो बीमी बाहू ।
केती फेहू ठांम केतो बीवतो साहू ॥
जगडू ए साह सोलां तणे बकबंध माडो जवर्यो ।
मैस मेस साह जगडूमा नहीं पडू काल पनरोतरो ॥ २

१४८ ११६२ (७)   जसवंतसिंहजीका कवित्त

आदि– कवित्त महाराज श्रीजसवंतसिघजीरा मूंवरां रा ॥
पुरा कमीर गणेस सेस सपेंस सुणीजे ।
सूर तेतीसां सहित समकति हित उपर कीजे ॥
मन माथां मयग्रहां संत जन करो सहाई ।
रिधि राजां साचवा कहुं उपजे चिकाई ॥
महाराज मरण सुरवर बरा राजपाट किरण विम रहै ।
ब्रह्मा विसन सिव ईद्र सुणि नहीं बचन सरसति नहै ॥ १

अन्त– हुयवारां हेक वार बात सेमंजे चावै ।
मकस पय हिमभाज तहां काम हुइ भावै ॥
पोकरण पोतवार तिहै द्वारका पधारी ।
ज्यौ पातिक मिट जाय हुई भावम भिखारी ॥
उतपात मात करसी मजन बात कीया तुप जावसी ।
द्वारकानाथ प्रतापसे स्वर्ग होसी पावसी ॥ १

संवत १७३५रा पोस वदि १   महाराजा श्रीजसवंतसिंघजी वैकुण्ठ प्राप्त हुआ छै
सौ भटक पार हुई वाई चतुरे कह्या छै ।

६२० ११२२ (७६)

जाम जापारो नीसाणी

आदि– ॥६०॥ अथ जाम जापानी नीसाणी सिहूटप लिख्यते ॥
मो कर मयामी मेहरवानी, अपर भागेवाम ।
जापोन नायक सुर विनायक दे सुनायक दान ॥ १
हुनू दान दायक नरो नायक वरनवों सुभिद्दान ।
रज रीत राणा जाम जापा पटु भापा जाम ॥

अन्त– हुनू कम राजे छवि छाजे जस कवंसों जीह ।
जहु कहत राजसरान जावत देखपत सब दीह ॥ २६
हुनू दीह छाजै जमी जीवत छत्त हत सवाह ।
अस्मान जमी दाम धमर, जाम नाम न जाइ ॥ ३०
इति श्रीनीसाणी जाम जापारी संपूर्ण ॥

६२१ ७४६

जालंधरपुराण

आदि– ॥ श्रीगणेशाय नम ॥ अथ जालंधरपुराण लिख्यते ॥
छंद बेमापरी ॥ गजमुख गुण भंडार गणेसर ।
सिधि बुधि समपि समोभ्रम संकर ।
उमया मात कवर उतपंना ।
हेमू देव विधा वरदंना ॥
मध्मर धवल धर्मम धारणी ।
वजवाणी हे अविरल वाणी ॥
विमला कमा कमल वाहनी ।
वर वरंनी चंद वदंनी ॥ २

अन्त– तोहारी चाकर चित धुम्म ।
मझेर मिजो न चीरासी मुम्म ॥
तोरो करि राखि हम भिखारि ।
धंमे वर मुम्म मया वनपारि ॥ १५
इति श्रीजालंधर पुराणं संपूर्णवासवीमनगु ॥ लिखितं ।

१८१   ४११४ (४४)   जोगी रासा

आदि– अथ जोगीरास लीपीते ॥ ॐ नम सीध्येभ्यो नमः ॥
आदिपुरिष जो आदिजगोत्तमु आदिजती आदिनाथो।
आदिकुमोत्तमो जोग पयसो जय जय जय जगनाथो ॥ १
दास परंपर मुनिवर हुया बीगांबर सहिनाणी।
कुंदकुंदाचरज[1] गुरु मेरै, गहुवी कहिय कहाणी ॥

अन्त– जोगीह रासो तोणइ पावक, दूषन करहु सहि सौ।
जो जिणदासइ जिविधि हि जिपइ समरण कीजइ ॥ ४२
ईती जोगीरासो संपुरणमस्तु।

१८१   ४४१८ (३१)   टंडाणा गीत

आदि– टंडाणा वडाणा में जियड़ टंडाणा टंडाणा ॥
इस संसारै कुप अंकारै क्या गुण वैपि भुमाणा है ॥
जिम ठग ठगिया मावड वालै, फिर तस जोग पयाणा है ॥

अन्त– करि जहिम आपन जन नंदी, जोगी अमर जिमाणा है।
समिकि तपोहण दस विधि पूरा निरमल धरम कराणा है ॥
सुधसरीव सहज जबलावहु भावहु अंतर ग्य (गुण) है।
जप कुया तम सुप पावहु नहीं पद निरवाणा है ॥

इति टंडाणा समाप्तम्।

७१२   २११८ (२)   तारातबोलरी वार्ता

आदि– अथ तारातबोलकी वारता लीपते ॥ मुलतांन वासी ॥ नांव ठाकुरसी। कुसालीदास पुर देसकीयु वारता वैपि आयो छु लीपी छै ॥ प्रथम गुजरातयु कोस १००ई महमदाबाद नगर छै। महमदाबादसु कोस १०० छै आयरो छै। आयरासु कोस १००ई लाहोर छै।

अन्त– तारातंबोल नगरकै आसि पासि सीमु नवी बहै छै। जोवरव जीका पाट छै। दामेकी कांई गम नहीं। मुलक नवी आसमीन छै क नहीं छै। जीं की ठीक नहीं।
या वारता मुलतान वासी नांम ठाकुरसी जाति पत्री कुसालीदास वैपि आयो सो लीपी छै।

तारातबोल आगरासु ५११२१ कोस छै। आवे वरसी छै जीको विचारवो कैबसी जमुं सहर १ आर्य मकाम छै। जीको राह कोस २ ०ई आर्य जाजं छै। सो पंडित होसी सो वाचसी। ई बात मजूब जांणो मतीनां ॥

ईति श्रीतारातंबोलकी वार्ता संपूर्ण।

---

१ कुंदकुंदाचार्य (?)

७८६ ११२४ (१०) शालभद्र चोपाई

आदि– ॥र्द०॥ का० श्रीसीमाध्वजवरगुरवे नमः ॥

दूहा ॥ सरसति सामिणि वीनवुं मागुं अविचल मांन ।
सरस कथा रस बोलवा दे मिठे वरदांन ॥ १
दया धर्म जगि वल्लहउ भाखइ श्रीजिनराय ।
इसउ परि संबंधई बोलिसुं सुगुरु पसाय ॥ २
मानव भव बुद्धिमई नही कीजइ जीव जतन ।
दायमणी परिखता लहीइ परिक्खयण ॥ ३

अन्त– संवत सोल त्रिसठि वारिख (१६६३) । ज्येष्ट सुदि नवमी सु वखारिख ॥
राव(?)प्रद्य नगर मझारि । श्रीपार्श्वनाथ स्वामि आधारि ॥ ११
पुन्यइं सुख संपत्ति घरि होइ । पुन्यइं जय नावइ वलि कोइ ॥
इसादीस वाचक इसि कहइ । पुन्य थकी सिव पद लहइ ॥ ११२

इति श्रीदीक्षवया विषये शालभद्र चुपाई संपूर्ण लिखितं मुनि श्रीज्ञानशेखरेण साहरपत्तन
मध्ये श्रीपार्श्वनाथप्रसादात् श्रीरस्तु ॥

७९८ ४१२४ (१) लावण्यम्य कथा (अपूर्ण)

आदि– ॥र्द ॥ श्रीशारदाय नमः ॥ अथ लावण्यसि लिख्यते ॥
दूहा ॥ समरो शारद जिनगु, सुलगति करो पसाऊ ।
पसाऊ मनमां सरस चतुराति कीधो चाऊ ॥ १
प्रभु अनेके पाडीया केत पत्रा चालेन ।
के पासही पोडीया के पत्र मास करंत ॥ २
कोइ न दीधो कामना सुख्यो न सीधा बंध ।
आप संसारण उपमा बीजा छोरण बंध ॥ ३

अन्त– "कलस ॥ पुर्व पुर्व छम वास नर संयम अधिकारी ।
उजुभ पार संसार, कोई मोचक प्रणहारी ॥
समवर सासंद सर्व अपवास सुखार्थ ।
वर्णति सुमति संसार, कथन सुमसाह कराई ॥
रमीयो चरित्र रामारसिम्ब" ॥

८११ ११२१ (२२) नमिनाथ बारहमा सोत

आदि– ॥र्द ॥ राग केदार गुडी ॥
दूहउ ॥ सामन पाण सोहामणुं, सब सुगण मनु भंडार ।
सुगति मनोहर मानिनी तिमको हुद मन्यार ॥ १
चालि ॥ सुर्गति रमनि तुं भरपारा । सुमद गुण कोइ न पामइ पारा ॥
दीन सुवनहु आधारा । पमकाल सुहद दातारा ॥ २
अन्त– महल करण कुं आगु न पामिउ । अमम मरण कुं भइ न चतामिउ ॥
सुगस ध्यान कमल गिरि करीए । नेमनाथ जिम रमणी वरीए ॥ ४१

दूहउ ॥ नेम चंद्रायण के मगण रे, ठे पावन पुसार ।
मुनि भाकर प्रम मीनता छोरज भव के पार । ४६
इति नेमनाथ चंद्रायण गीत समाप्त ॥

१२०१ (४८)[1] पनरमी विद्या

आदि– ॥र्दै०॥ श्री गुणेसायनम अथ राजा भोजरी पनरमी वार्ता व्यास भवानीदास कृत लिख्यते ।

अथ दूहा ॥ श्री गणपति सरसती सीस, सिमरा रवि गुरुदेव ।
व्यास करे अरदास प्रभु देवे मय्यर भेव ॥ १
अविरल वाणि आप जै देज्यो सुबुद्धि सुग्यान ।
त्रियाचरित्र वरणन करूं धरे सुलक्षण ध्यांन ॥ २

अन्त– कधु न भार वचन चित धरये ।
कठैर्ये भोय भालोच न करीय ॥
नृप विमास बहुतेरा कीजै ।
सीमसुं मरम भरम नही दीजै ॥ ५३
त्रिय परपुरुष धमु बणामु ।
चोहटे बात पारकी भाण ॥
[illegible] बखानी गीत वीड़ावै ।
विमतावेह धु छिनाल बतावै ॥ ५४
(अपूर्ण)

१०७१ ३३६० (४) पाबु बाघोलोतरा दूहा (अपूर्ण)

आदि– ॥ श्री पाबु बाघोलोतरा दोहा मुं लम्यता कथा ॥
देवी दे वरदान भुणतो मुं नव भाखीयो ॥
पाबूंसुं परध्यान भामतुं तुर्थ गुणी ॥ १
सुरनाथा कुशल वरदायक हुवी वसी ॥
भम पाबु सुपास मतवही वां कीरत सुणु ॥ २

अन्त– वीरे बरवंताह मैं कीधो सुम पामीयो ॥
पूरे मह पाताह माता सुण सुभो मुर्गी ॥ ६५
वेहरो विसावेह मैं समभायो मो विसा ॥
पिस भागो या एह तो पिण न मानै विगट ॥ ६६

११५५ ५०६७ बगसीराम प्रोहित हीरां की बात[2]

१२११ ३२४६ (५०) महाराज धर्मसिंघ देवलोक हुवा तिण समयरी वार्ता

आदि– ॥र्दै॥ अथ वार्ता महाराजा श्रीधर्मसिंघजी देवलोक हुवां मारवाड़िमें वियो हुवो तिण समीयारी ॥ संवत १८०९रा अषाढ सुदि १४री रात्रि घड़ी २ पाछली रहीयां महाराज श्रीधर्मसिंघजी अजमेर देवलोक हुवा नै बाग पोहुकरजी विराजो । पछै

1 यह ग्रन्थ मूल सूची में भूल से छपना रह गया है । २ यह कृति प्रतिष्ठान से प्रकाशित हो रही है ।

महाराजकवार श्रीरामसिंघजी श्रावण सुदि १० गुरुवार जोधपुरमें टीकै बैठा ।

अन्त– संवत १८१२रा आसोज सुदि ८ महाराज विजैसिंघजी मेडतै ममस कीधो। सोझत पिण दुरी कीवी । तरै रामसिंघजी जैपुर गया । राजा ईसरसिंघजीरी बेटी परणीया संवत १८११रा पोस वदि १ मंगलवार ।

इति मारवाडविषयी वारता संपूर्ण ।

कवित्त– विपणी सुरवर बेस राम राजा से माया ।
मारा सवाई पर काम पिण पडपा सवाया ॥
करती हुई पराव कुटकोस वली मचाई ।
दुनीयारा पोमान मत पिण कटी सवाई ॥
संवत सठाई इग्यारोतरै वारोतरो पिण जाणीयो ।
तीनु काम मिल एकठा तेरोतरोही पिछांणीयो ॥

११८९. १ ४

माधवानलकामकंदला चौपाई

आदि– माधवानल २ कवि सकरव । चउपइ विद्याधर चतुर ॥
विदुर जाणि सुरपुर विचखण । नारय वर नाव गुण ॥
बहु भेद कवित्त नराण । कला बहुतरि मति कुशलत्तण ॥
अभिमन्य कंदुमार । छत्रपुर भूपि जिम मन लाइ ॥ विरचिसु तेह चरित ॥ २

अन्त– दूहा ॥ संवत् सोलसोलोतरइ, जेसलमेर मझारि ॥
फागुण सुदि तेरसि दिवसि विरची आदित्यवार ॥ ५
गाहा दूहा चउपई, कवित्त कथा संबंध ॥
कामकंदलाकामिनी माधवानल प्रबंध ॥ ११
कुशललाभ वाचक कहइ सरस चरित सुपवित्र ।
जे वाचइ जे सांभलइ तीया सिवइ मन मरथ ॥ ५२
माया माठी पांचसइ, ए चउपइ प्रमाण ।
सुणतां भणतां सुख हौसइ, जे नर चतुर सुजाण ॥ ५३
रा` ल माल सु पट्टधर कुंअर श्रीहरराज ।
विरची ए शृ गार रस तासु कुतूहल काजि ॥ ५४
सारदसुं प्रसाद करि सीस तरणइ पाधारि ।
भणइ नेंभणइ तेह नर सुख पामइ नरनारि ॥ ५५

ग्रंथ ५ ५५ ॥ इति श्रीमाधवानलकामकंदला चउपई समाप्ता ॥ सं० १६४१ वर्षे चैत्र वदि १० बुधवारे उत्तराषाढ नक्षत्रे मध्य पल्लीवाल गच्छे श्री शांतिसूरि तत् शि देवीदास लिपतं अमतारथे ॥

११ २ १७१

मालतीमाधवमाधवती चौपाई

आदि– ॥ई०॥ श्रीपरमात्मने नम ॥
प्रणमु माता सरसती प्रणमु सदगुर पाइ ।
सुरपति वंदित करे पद जस कहिवाइ ॥ १

कथा सरसनें कवि भयण कलसीयां बहु मीठ।
साकर द्राप भमी थकी मे तो मधिका बीठ ॥ २

अन्त- संवत सतरैसतवीसें वुरें। सुदि आसाढ़ें बीज दिनें सुरें ॥
परतर गछ गुरजिणचंद जगकद। तेहनें राजे सोहगसुंदद ॥
सु दक सीमसु दर प्रसादें। श्रममसोम हरिण परि कहें ॥
ए सरस कहिने कथा दापी। पेव मतिमंदिर सई ॥

इति श्रीमानतुंग मानवती चतुपदी समाप्ता ॥ सं० १७७८ चव सुदि चतुर्थी लिपिता पं० रामविजयवरैः ॥ श्राविका पुण्यप्रभाविका देवगुरुभक्तिकारिका केसरपठनार्थं श्रीकम पुर मध्ये कल्याणमस्तु।

११८३. ११५० (१२) मेड़ता आदिकी ऐतिहासिक हकीकत

आदि- सवत् १७४६ वर्षे पोस वदि नवाब अम्बाइतपांनरो बेटो रावरणवंदी विलनु मेड़तीवें कोठे पोळानु मारीयो। छांपरि परे तुरक घणा मरण गया। रवत नपत पोम गुदा इन सर्व रजपूतारे आवी। राजांनु वाळी। मारवाडि माहे वरस ७५८ रह्यो। वीमां माहे लीक पाडली मोव घणा पांडे मारीया था तका सर्व कसर काडी। मुहकमसीघ मेड़तीयानु मारीयो हुतो तको वैर लीयो।

अन्त- सं० १७३२ वर्षे बगडी मुकाते वसीया हुवार ७ ससकरीयानरे बेटै बीको हकीकत लीबी। दाप लोपनी छपरी। मेहु घणा हुआ ॥ १

११५४ ७७२ (२१) रामनामोपरि विरहकुमाविन

आदि-।र्दं ॥ प्रीतम चाल्यो हे सपी सलित करी सपचार।
हिवड़ा ऊपर हिसलो मो विरहणीको ना हार ॥ १
तुम बिण मेरे प्रीतमा संदीर मांहि संचार।
घर बाहर नही आवमे वा कीयो दीन गंवार ॥ २

अन्त- बांहरो प्रीतम आइयो संध्या समै सुजाण।
मन रल्यो प्रीति हुयो करो कल्याण कल्याण ॥ १
प्रीउ पधार्या हे सपी पायो आज सोभाग।
जैतसी जय जय करे, आज अम्हारो भाग ॥ ११
इति राग संपूर्णः संवत् १७६३ वर्षे जेठ सुद ७ दीने श्री ॥

११६१ ४६ ६ (२) राजसभारंजन

आदि- ।र्द०॥ अथ राजसभारंजन लिप्यते ॥
मंगाचर सेवहु सदा गाहक रसिक प्रवीन।
राजसभारंजन कहों, मन हुलास रस लीन ॥ १
दपतिरति गौरीशतम विद्या सुमन सुमेह।
जो दिन जाय प्रानंदमें जीतबको फल एह ॥ २

बीचसे कुछ उदाहरण—

साम सहेट भाख्यो नहीं, मुग्धो तिय पिय बीच ।
चीतेमें कोठी नहीं जमे बाग की कीच ॥ ६७
सहज रीति कुछ तजि सबै काम कलाकी साच ।
बाप न मारी मीडकी बैटा तीरंदाज ॥ ७०

अन्त— संवत तीनसैसाठ सम अभय हारै नृप हेत ।
राज-सभा-रंजन सरस कियो रसिकजन हेत ॥ ६७
संवत बाण मुनि सशि (१७५६) समा विक्रम शक नभ मास ।
उज्जल नवमी भृगु दिवस पूरन रस प्रकास ॥ ६८
सुभग भूमि उदयपुर, श्रीनृपवर जयसाहि ।
कहि कवि मन मुजस पति मति रसिकों चबवाह ॥ ६६
जब लो नृप सज्जन जमा मेर बरावर धाम ।
तब लो थिर जीवहु रसिक पवत पुरवत पुंन नाम ॥ ७०

इति श्रीराजसभा-रंजन दोहा समाप्तं ।

संवत् १७६८ वर्षे मिति पोष वदि १४ शुक्र लिपिकृतं श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।

१४७६ ४८१४ राठोड़ नाहरखांनरो छंद

आदि— छंद राठोड नाहरखानरी बाकस माधोदास री कही ॥

आरम्भ ॥ अन्नमा पुरसाली जवा । चाली पचा पाधर होवा ।
वीरा बीभा रणधीर जोधा । नाहरखान समर्थ जोधा । १
माडेजी केवी मुसमाणी । पाला पंथ किसे पुरसाणी ॥
बडफाली सुख समरस बाणी । रेवंत रीम दीवै रायाणी ॥ २

अन्त— कमास ॥ बहुत तेज बहु सघन बहुत मोभा बहु जोधास ।
वीरज तेज अनंत तोम दीप अनहुमावण ॥
बड विसाल है करहु मात बलगह सैनम ।
बलेम मैम बिसराम जाबि जीमत देवायन ॥
बरहास बडा बा कबीयणी त्यागी धर्म हुरखी रखे ।
ममलीया पोत रावालजी कोप करग्राह धमिनखे ॥
इति नाहरखान जोधारा रावारी छंद संपूरणं ॥

१४६० ३८६४ रामयशोरसायन

आदि— ॥ॐ॥ राम रामा लिख्यते ॥ केसराज रामे ॥
दोहा ॥ श्रीमुनिसोव्रतस्वामि नमो त्रिभुवन तारक देव ।
तीरथ कर प्रभु वीसमो सुर नर सारै सेव ॥
गुरु सुविक्ष वंदिमो पो माणीत समाम ।
अनंमा मुनि जिनवर तणी रामयशो बहुनाम ॥ २

अन्त–कलस ॥ राम लिछमन भर्ने रावण सति सीता भीचरी ।
कही माया चरीत साची बचन रंचन करी परी ॥ १
संभ रंभ विनोद कवता भनै भावता सुप भणी ।
केशराज कवीर जंपै सुबाहुरस बखामणी ॥ २

इति श्रीराम कुयष्ट्या रामयसोरसायणे चतुर्थोधिकार समाप्तं सर्व ढाल ६२ सर्व गाथा ११६६ सर्व ग्रंथाग्रन्थ ४३७२ इति रमायण समाप्त ॥ संवत १८७१ चैत्र मासे शुक्लपक्षे तिथ छठ ६ वार धारीत वार नै वेहरागामे चममा टटे । लिपतं रमायण शास्त्र पुरा कीया हम सुपराम लिपतं ।

१२१५. २११४ (२)   रूपदीपक पिंगल

आदि– । श्रीरामजी ॥ अथ रूपदीपक भाषा लिपते ॥

दोहा ॥ सारदमाता तू बडी सुबुधि देहु वर हाथ ।
पिंगल कि छाया लीयें बरनी वावन पाथ ॥ १
गुरु गनेसके चरन गहि, हियें धारकें विस्न ।
कुमर भवानीदास को पुमति करें यें किस्न ॥ २

अन्त– बांवन बरनी चाल सब जैसे मोमै बुद्ध ।
भूल चेद जाकी कही करो कवीसर शुद्ध ॥ ३
संवत सतरै सै बरस और छिहंतर पाय ।
भादौं सुदि तृतीया पुरी भयो ग्रंथ सुपदाय ॥ ४ संवत् १७७६

इति श्रीरूपदीपक पिंगल भाषाग्रंथ संपूर्णम् ॥१॥ सं १८२८ मिती पोस सु ६ ।

१२१६ ११२५ (११)   लाखाफूलाणीरा कवित्त

आदि– ।श्री०॥ अथ लाखाफूलाणीरा कवित्त लिख्यते ।

छप्पय ॥ प्रथम चवदह कोडि धेन बहु मिलै सुभट्टां ।
घर पूरब अनई बहु सिर बाट उपट्टां ॥
संमत भाग मिल भव्य सोधी वर मांही ।
बनचर चीव विलग्ग बाण बाणरासी पसाही ॥
धूंमसो नमण पुड धुजियो गंभीर पण जोजम भियो ।
मम बीह सूर सत्त मारवा इंद्र कहै लाखो भयो ॥ १

अन्त– संवत नव एकमे मास कारतक्क निरंतर ।
पिंता वैर ब्रम मर्माहि सहठ रापायत सझर ॥
पडै समा सो पमर पडे सोलंकी सो पट ।
भोमडीस सी चावडा भूपा छिल राज रिणवट ॥
पांचरे भमल भयस नहै सोम सीह नामी सरै ।
भाठ में पच्च रा जाडरी मूलराज लाखो मरै ॥ २
इति लाखा फूलाणीरा कवित्त संपूर्ण ।

प्रणमुं गौतम प्रमुख गणि वसुधर सुगुरु निवास ।
समरंतां सुख संपदा पूजइ मननी आस ।

अन्त— ताज सीस रंगइ महुर, राजसिंह धार्मिक ।
विद्याविलास नृप वाचिवउ ज्ञान अधिक सुपवंद ।। ४५
ए संबंध सुहामणउ सुणत भणत दुख दूर ।
मनवंछित साहिब फलइ महानन्द सुपसर पूर ।। ४६

इति श्रीविद्याविलास नरपति समाप्त संपूर्ण सर्वगाथा १४६ ग्रंथाग ४११ संवत् १६६१ वर्षे माह वदि ६ शौनि॰ आकरवी वाचनार्थं लिखित श्रीजैसलमेरमध्ये शुभं भवतु कल्याणमस्तु ।।

१६२८. ११११ विद्याविलास चौपाई

आदि— ।।ॐ०।। श्रीसरस्वत्यै नमः ।।
दूहा— सरसति निज चरणो सुमति चित हित धरि प्रणमेवि ।
जिन जिन जिन वाचक वचन शोभित बहु विधि देवि ।। १
कविजन सरसा निधि करन, दुर हरण अभ्यास ।
चरण सरस उत्तम करण कमलासन सुख ध्यान ।। २

अन्त— वाचक पुण्यमान सुपसाया श्रीसोमगणि सुपसाया ।
एम जिनहरष पुण्य फल पाया ढीस बास सुप पायाजी ।। १४
हिव राजादि सुखे सुरवाणी ।।

इति श्रीपुण्यविजय विद्याविलास चोपई संपूर्ण ।। सं० १८२९ वर्षे मिति आसाढ सुदि ७ दिन ।

१६१२ १०२७ विद्याविलास रास (धनाश्री)

आदि— ।।ॐ ।। ॐ नमः ।। श्रीवीतरागाय नमः ।।
पहिलुं पणमुं पंच जिणेसर, ऋषभदेव अवतार ।
हथिणाउरि श्रीशांति जिणेसर, ब्रह्मनेमि कुमार ।। १
श्री पाउसि पुरि पास जिणेसर, साच उदय वर्धमान ।
कासमीरि पुरि सरसति सामणि दिउ मुझ निज वरदान ।। २

अन्त— संवत सोई त्रिपुरि गुरुवर कर धर विद्याविलासह ।
गणइ हीराणंद मो श्रीसंघह भविक पूरउ आसह ।। १६
भवत भवत बच्छाली धण, एणीउ ए गुणमाणु ।
प्रथम मयोमसरा ए ।। १६
जां लगइ धंबरि रवि तपए तां लगइ विस्तरउ ए भवी ।
प्रथम मयोमसरा ए ।। २०

इति विद्याविलास चरित्ररास संपूर्णं ।। संवत् १६७६ वर्षे ।। आसो वदि गुणायवी गुरुवारे वाचनाकर्थे लिखितं ।। शुभं भवतु ।।

११०८ ७०२२ (१४) वीरमदे ईडरिया आदिके कवित्त

आदि- ॥ श्रीगणेशाय न(म:) ॥

कवित्त- मदन संक बदंत संक अंकत प्रहिराहण ।
घमत बीन प्रहि बेलत पान पेखत पञ्चाहण ॥
समरत मास भाया तपास रस होइ महा धन ।
परमा बात सोवन बात बिलत बेगागम ॥
महाराह बाह एकाणवे साबिहातर दिठो सबे ।
बिहुं राह तिलक मारियेण तना दाता तो वीरमदे ॥

अन्त- कर परि जिण गिरधर धरयो मथुरा मारयो कंस ।
ऐसा रावस गिरधरो जयकारी जदुवंस ॥ १०
श्रीठाकुरांरी छापी छै ॥ लिखत मिश्र मानकराम ॥ शुभमस्तु॥

११०९ २१४६ (४) वीसलदेव सूअर शिकाररी बात●

आदि- ॥ अथ बडेराव वीसलदे सीरोहीरै धणीरी सूअररै सिकाररी बात लिखते ॥

दूहौ- धई धूंस धूंधी घटा धरिया टक निहत्थ ।
अरबदसूं अथमा रहै जाका कोण हथस्स ॥ १

बात- आबूरा पाहडा ऊपर नवनाथ । चौरासी सिद्ध । चौसठ जोगणी । बावन बीर । तेतीस कोड देवता तपस्या करै । स आबूरै पाहडां ऊपर १ बसम सीमो मो मास २ मथ्या थ्यारटो हुवो । सो माहिला सामै चरण जावै । सो पाहड कोस १२ में तें ऊपर चरै फीरै । सो सारी ही ठोड़ तपसी तपस्या करै छै ।

अन्त- सो जिण पहमें सूअर सिकै को तैमें धाव पडी । बडी मबलास हुई । जिकै सिरदार काम आया वा तिकानै रावजी निवाजस करी । सीरोही पधारीया ।

इति श्रीबडे राव वीसलदेरै सूअररै सिकार बात संपूर्ण ।

१११० ७०७१ (४) वेदस्तुति भाषा

आदि- ॥ श्रीरामजी ॥ अथ वेदस्तुती भाषा लीख्यते ॥ राजश्रीराजैसीघजी कंनास्यं ॥

दोहरा- श्री भागोत्तं दसम सकधं वेद सतुत्य भाषा बंध ॥
पढी आनंद भव बंध छेदं आवागमन मिटै भ्रम धंदं ॥

चोपई- श्रीसुपदेव बहुत गुनग्याता । वेदव्यासके पुत्र विष्याता ॥
तीनके परबंध मैं कह । तीमको ध्यान हीरदेमै धर ॥

अन्त- नीती प्रती पाठ जु ये करै सुपमै सम ग्यान ।
तत पद नीहचे पाम है रामै प्रम नीजान ॥ ६०

ईति श्रीवेद सतुती भाषा मरथ सपुरण ॥ कबीतें महाराज श्रीराजैसीघजी ॥

● ग्रं ४४२२ (५६) पर अंकित 'एकलसिंह बराहरी वार्ता' और इस रचनाकी कथावस्तु एक है किन्तु दोनोंकी वर्णनशैली भिन्न है ।

दूहा– करि प्रणाम श्री शारदा थापी सुभ परमोद ॥
सुभ रूप वार्ता उ करी त्यागी देवी बोल ॥ १
विक्रम नगर सुहामणो सुभ संपतकी ठौर ।
हिंदू थान उ हिंदू धरम ऐसो शहर न और ॥ २

अन्त– हरवत सेठ होम करायो तिहां शारिका पिछ थाई । अमरसुं विक्रमाला भरी । सघरे दर्शन देती सदाय सुख सुकसारिका नमर्ने होम थापणी लोक थया ।

इति श्रीबहुतर वार्ता सुभ सुकबहुतरी संपूर्णम् ॥ ७२ संवत् १८६१ए मिती भादवा सुदी १ दिने लिखतं पं० विजैसमुद्रेण श्रीजैसलमेर दुर्गे चतुर्मास्यां लिख्या ।

१८७५ ४४११ सुकबहोतरी । प्रथम दस पत्रास्त

आदि– री बाड़ी । पृथ्वीके विर्षे बहुतरी कथा मनुष्य भाषा करि प्रभावती पार्वे पहुंची । सील रखावती । तदि संसमाव परवतके विर्षे भाविनी सुक सरीर छोडिके सुम भी शरीर पायी पांचवे मोहर ब्राह्मणने बांम [illegible] । लिपाप भाइसा ।

अन्त– कवि देवदत्त कहै । सुकका वचन लेवा करिके सावकी बुधिके मनुहारी बांची गई ।

इति श्रीसुकबहोतरी कथा समाप्ता ॥ संवत् १७६० वर्षे आसोज वदि ६ षष्ठी सोमवासरे पं० अमीतविजय लिपि चक्रे ॥ शुभंभवतु ॥ श्रीसमाप्ता ॥

१०७५. ६४२ श्रीपाल रास (ज्ञानसागर कृत)

आदि–

॥र्द०॥ दूहा– कर कमलजोडीव करि सिद्ध सयल पणमेव ।
श्रीश्रीपाल नरिंदनु रासबंध कहलेस ॥ १
महिमावंत मोटा घणा छै संपति सघलिय सार ।
भवसायर तणु उतरै, जो जपै श्रीनवकार ॥ २

अन्त– सिद्ध चक्र महिमा सुणो ए मासे सही नवैसा कर्मवरीव सुणो सुंदरी प्र० २ मनवंछित सुपसायइ ए मास० ॥ जे सुणें नितमेव सुणो के० १ एक मना ते जिन जपइए मा० दे भार मंगल माल सु ते० १ अढि मनंती बोलबें ए मा० जम सूनति श्री सुणो सुंदरी के २ ।

इति श्रीपालरास संपूर्ण ।

१०७६. ६६१ श्रीपाल रास (जिनहर्ष रचित)

आदि–

॥र्द०॥ दूहा ॥ श्रीअरिहंत अनंत गुण अतीसय हीयडै ध्यान ।
केवल ज्ञान प्रकाश कर, दूरि हरण अग्यान ॥ १
चउद राजु ऊपरि रहइ सिध अनंत समृद्धि ।
कुमति कुगति दुख मोचवइ वाधइ अविचल सिद्धि ॥ २

अन्त– संवत सतरइसे बासीसे वैशाखिक सुभगी ग्यारह रे ।
भादव सोमवार शुभ दीनै, पाटण जिनथा बीजैरे ॥ १०

श्रीपरतरगछ महिमाधारी श्रीजिनचंद्र सूरि जयकारी।
वांचे सहू नरनारी रे
शांतिहरष वाचक सुपकारी। तासु सीस सुविचारी रे ॥ ११
कहे जिनहरष भविक नर सुणिज्यो नवपद महिमा करिज्यो रे।
मनवांछित हासी सुणिज्यो निज पातिक मल धुणिज्यो रे ॥ १२

इति श्रीसिद्धचक्र महिमा उपरि श्री श्रीपालरास संपूर्णम् ॥ संवत १८१४ वर्षे फागुन मासे शुक्ल पक्ष १३ तिथौ शुक्रवारे पाटण नगरे प महीचन्द्रेन लिखितं।

१०१२ ३४८६ श्रीपाल रास (गुणरत्नसूरिप्रणीत)

आदि–

।र्ग ॥ कर कमल जोडवि करि सिद्धचक्र पणमेसु।
श्रीश्रीपाल नरिंदनो रास बंधव भणेसु ॥ १
महीयलि मल अनेक छि, पणमि मयणिकमार।
भव सायर ते ऊतरई जो जपीई श्रीनवकार ॥ २

अन्त– श्रीगुणसमुद्र सूरि, तास पाटि सोहामणा ॥मा ॥ वंदीए आणंद पूरि ॥६३
भवीया भवी ईन उन ए मा श्री गुणदेव हरतरि।
तास सीसि रास रचिउ ए मा । श्रीगुणरत्नह सूरि ॥ ६४
पनरएकत्रीसई मागसिरह ए ॥मा०॥ उजली बीज गुरुवार।
रास रचिउ सिद्ध चक्रनूं ए ॥मा ॥ भाइउ श्रीनवकार ॥ ६५
एक मासा के जिम अपडए ॥मा ॥ तेह परि मगल माल।
रिद्धि अनंत भोगवइ ए मा० जिम नृपति श्रीपाल ॥ ६६

इति श्रीसिद्ध चक्र श्रीपाल रास संपूर्ण ॥छ॥श्री॥छ॥श्री॥

१०१७ २१७४ समरासारंभ कवयो

आदि– ॥ समरासारंभ कवयो लष्यते ॥
दूहा– पातीसाहु म्यारा हीम वलीपत सुलतान।
तास तणे वजीर जो पान मुसाकम मांन ॥ १
पातसाहा पोताकवी हुय गय रथ असवार।
ढोल सुपासण पालकी छत्र चामर जे सार ॥ २
अन्त– जाप करी भैर जाबड बरतो जैजैकार।
कर जोडी वेणाल वर्णे सु जोस वंस सणगार ॥ ४४
ईती श्रीसमरासारंभ कवयो सपूर्ण २१ ॥

१०१३ ४२८७ (१६) सवाई जैसिहजीकी जोधपुर चढाईका वर्णन

आदि– "संवत १७६७ का मीती सावण वदी ८ के श्रीमाहराजा सवाइ जैसघजी जोधपुर बुपर चढा। राजा अभैसघजी हुकम पातसाह महमुदसाह सामे चढा। सो रोज पदरामे १३ जोधपुर जाइ लागा। बरक मडोवरकी डेरा जाइ कीया। मुकाम १— आगे युद्धके वर्णं और जोधपुरकी तरफसे लिये गये उपहार आदिका वर्णन है जो अपूर्ण है।

१११८ ११११ (११) सिरोही मारवाड़ आदि स्थानोंकी बोलियोंके नमूने

आदि— अथ बोलीयां लिख्यते ॥

सवइया ४ ॥ समजेस माइ पेमा आही बात थारों कहू
मोटीयारो सोड मारै यहीयां रै जास्यां जी ।
इरणै अभागीयारै सेवा केवी कांइ नहीं,
उरणै उभागीयारै जी मैं बाटी जास्यां जी ॥
नामरे रै घुमकेसु साडीयारै भूमके सु,
सोनानारे घुमकेसु चितडो रमास्यां जी ।
समजारो कोट आछो हीरांरी मोट जावे
थ्यांसु सारी रात बीतडो रमास्यां जी ॥ १

इति सीरोही बोली संपूर्ण ।

ठमोमुमो मेड मोनै घुरी घुरी नाल्यां बोलै
गोवरी भूमायो सूर्ण कोहरा सूनै हाटमूं ।
पमा किरो एक बात ए कहू कहां थोही मोथा
पभिकरो थ्यूं हु ईई पैमा बाटसुं ॥
थोही रजपूत जामो हु ई रजपूत जाई
थोही एकै नामै ही त्युंही करनी काटसुं ।
मणधमवारै आही बात थांसु [illegible] मारै,
थेई मरकाथसु पैमा दिन काटसु ॥

इति मारवेी बोली संपूर्ण ।

पेम थांवा ठेम माहरै थोड थोड आवो आवो
आवै वाटे थिसु बीधो माहरै काम कावे आवां छां ।
हार कंठी डोरो छोडे आलनै बाहू मरोडे
थेही भूठी बातां नेहडो न लगावां छां ॥
सटकनै छाती पोसे मुंडी मुंडी नाख्यो बोलै
तोमु थिसु बीहा वारै मरे रोटी पावां छां ।
आज बीय किसु थोई पापतीरा चौक जोवे,
आवे कासह उपि म्हेह उपि आवां छां ॥

इति बीकानेरी बोली संपूर्ण ।

मणधरम माई बाई आही बात थांसु कहू
वैर्या बाई थारी भाई म्हांमू मेड मारै जी ।
एक तो म्हेह मद पीधी तिका मे बाणी लिय
बीजी ही नमारै पीधां डोथी ठोर हिरै जी ॥

कैहो हिवै थाऊं किसी कहो किकू
तिकू करी कसी ही न कुटु म्हारो देहरो न खाई जी ।
बाम्हो रमु हो हालो भाप हू तो क्यू ही
मडू नहीं देयो भोमै माडै जी ॥
इति जोधपुरी बोली संपूर्ण ॥ लिपीकृतं पैमा केशरचंद ॥ समाप्ता ॥

११४६ (२) सेरसिंह मेड़तिया आदि राजाओंका गपयरा

आदि– गीत जाति सपयरो सेरसिंघ मेड़तीयारो न कुसलसिंघ चांपावतरो ।
चवडे धावीया करारे थेप बेहू राजा वंधे जाम
वेहुई धरावा हवे छुटे गोला बाण ।
बमायसी सिवुराय चाभिया भुम्भाड बाचा
भडे बेहु थाम लाग उकमी थाराण ॥ १ ।

अन्त– रगमै धमंधा वीसा कसी तब थंभ रंभा
मापती पिलंधा पोर्ड सफोडवी धंग ।
मप चप जाम जमु पेरियो कुरग बचा
भेट वेस लागी धमा मोगरा तरप ॥ ७ ॥इति॥

११४६ (१) सोनीगरा वीरमदेरी वारता

आदि– ॥र्द ॥ अथ वार्ता १ सोनिगरा वीरमदेरी ॥ गढ जालोर सोनिगरा कानडदेरे वीरे कवर बोह हुआ । बडो कंवर कानडदे । छोटो रांणगदे । टीके कानडदेजी बैठा । गढ जालोर राज करे । तिको एकण समीयै कानडदेजी सिकार चढीया । तिको जालोरसु कोस १ तथा ११ उपरा क्या मैं रात्रि पडी । अर्ने एक पवाड रही ।

अन्त– हर्दे धवर वदणरी चर वणायी । भायो वड पोथ माहे सैर्ने सती हुई । तिका पांचदसू जाम सतलोकमै भेली हुई । पातिसाह अलावदीन दिली गया । आ इतरी वात वीरमदे सोनिगरारी कही । सूरवीर दातार तिमुदे मन नही । संवत १३६७ अलावदीन पातिसाह जालोर आयो नै संवत १३४६रा फागुण वदि ११ वीरमदे सोनिगरो काम आयो नै गढ जालोर आयो ।

इति वीरमदे सोनिगरारी वार्ता संपूर्ण ।

४६०१ हमीररासो (हमीरायन)

आदि– श्री गणेसाय नम हमीरायन चौपई ॥

अन्तीत– गवरीनंद आनंद चंद लीलाट बीराजीत ।
च्यार भुजा कर फरस सरस भूषण तन राजत ॥
कर कमंडल जपमाल लाल वसन बीहु सुहावै ।
मधुर स्वमध स्वरमंड रची घोर उदमाहन भेन ।
हो इम प्रसन्न सुधी बुधी घनी जी कम कवीत प्रमा भाण ॥ १

अन्त– कवीत ।। असी करीत काहु करी नहीं कोउ सो करी राजसी चाल राम ।
बाईस बीकम राएा गुमसीन पातिसाया बखू सम्मको रोह रोसे ।
छतीस जवाहर मसमत कहु हमेस करी ।
कमल रसमंम मछ असी करै न कोई ।।

ईती श्रीहमरामनसाको श्रीबार संपुरन समापती ।

छंद काताको ।। कुडलीयो माई मीहवे पसीस काई बीचो मरस सो । माई भोह है पसीस प्रीमी ई छोर बीचा । बारा ऊमर पीस मर्मका बन बीरम केह ।

लीपतं पाडे नाथुराम बाह्मन मोकमी पासाबी मम मर्ममुर्त मह बाह्मनका रसपाल राजा श्रीमलजीकूं नाथुराम बाह्मन पोह सदारामको मठीयो टोस पी है पकीवीको मन श्रीगुरुको पसीस संघबोची मीठी पोस बदी ६ मंगलवार संवत् १७८७ को पुस्तम मार्च श्रीगुरु राम राम संघमोजी । बाह्रष्ट बरस्या वाडसं लीपते मा । पदी सूद श्रीगुरु मा मम दीपे न दीपते ।। शु० ।।

२१७४ (१)   हुरचंदपुरी

आदि– ।। अथ हुरचंद सप्यते ।।
मेरी मसनी उत्तम ठाम । राज करै [illegible] हुरचद राम ।। १
राजमा चाल करै नव खड । ग्रोउ न लोपै को बलवंत ।। २
मामु बोल मछ नव करे । पिरच पिसी पुत्र नमी मरे ।। ३
मछ तुलसी पितामहने बचार । राघु वत हुरचंद मै राम ।। ४

अन्त– बाडी पदमनैं बछमसो कायापो मुकै सीस ।
पावन चकीता मानीक माहत्मसह बपदीस ।। ८
ईती हुरचदपुरी संपूर्ण ।।१०११।।

२०८१ (१८११)   हीयाली

१ हीरकलस कृत

कवि नमन प्रसंमह । नाम लतह समु पंच विमंसह ।।
कहिहो पंडित ते पुरुष नारी । स्याम वरण ते स्याम दिपारी ।।
मसतक मुनीर कमल पुरुष नारी । हीरकलस कहि मछ न इ विचारी ।। ८

२ हेमानंद कृत

राग मल्हार ।। एक पुरुष सामल मुकुमीयउ रमती सिंह भरतार रे ।।
मंका मुरि सिरि पूण जलामउ सुविचारउ संसार रे ।। १
हीरकलस मुनि सीस हेमानंद बोलइ मन उल्हास रे ।। ५

अन्त– इति श्रीहीयाली नाम कृतं हीरकलस मुनि ।। संवत १६२७ वर्षे काती सुदी २ दिने रतनी लषावे ।

२८११ (१२) हीरकलश [illegible] वर्णन

इस पुस्तके दसवें पत्र पर [illegible] हीरकलश [illegible] लिख रए हैं जो [illegible] पुस्तक [illegible] [illegible] गयी [illegible]। [illegible] दान [illegible] पुस्तक [illegible] इस प्रकार है—

[illegible] पुस्तक [illegible] ॥ [illegible] पुत्र [illegible] पुत्र सं० [illegible] पुत्र सं० [illegible] पुत्र सं० [illegible] पुत्र [illegible] पुत्र सं० [illegible] पुत्र सा० [illegible] प्रमुख ॥ [illegible] पुत्र [illegible] हीरा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सा० [illegible] पुत्र [illegible] पुत्र [illegible] ॥

● श्री ●

परिशिष्ट २

ग्रन्थकार नामानुक्रमणिका

स

ह

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित

महत्वपूर्ण राजस्थानी ग्रन्थ

---

१ कान्हड़दे प्रबन्ध महाकवि पद्मनाभ रचित। सम्पादक– प्रो के बी व्यास एम ए।
मूल्य १२.२५

२ क्यामखां रासा कविवर जान रचित। सम्पादक– डॉ दशरथ शर्मा और श्री अगरचन्द, भँवरलाल नाहटा। मूल्य ४.७५

३ लावारासा चारण कविया गोपालदान विरचित। सम्पादक– श्री महताबचन्द खारैड़।
मूल्य ३.७५

४ बाँकीदास री ख्यात कविवर बाँकीदास। सम्पादक– श्री नरोत्तमदास स्वामी एम ए।
मूल्य ५.५०

५ राजस्थानी साहित्यसंग्रह भाग १ सम्पादक– श्री नरोत्तम स्वामी एम ए। मूल्य २.२५

६ कुमनविलास महाराजा पृथ्वीसिंह कृत। सम्पादिका– श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत।
मूल्य १.७५

७ भगतमाळ, ब्रह्मदासजी चारण कृत। सम्पादक– उदैराज उज्ज्वल। मूल्य १.७५

८. राजस्थान पुरातत्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची भाग १। मूल्य ७.५०

९ मुंहता नैणसीरी ख्यात भाग १ मुंहता नैणसी कृत। सम्पादक– श्री बदरीप्रसाद साकरिया।
मूल्य ८.५०

१० रघुवरजसप्रकास किसनाजी आढ़ा कृत। सम्पादक–श्री सीताराम लाळस। मूल्य ८.२५

११ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग १। मूल्य ४.५